टाम बाटमोर

मार्क्सवादी समाजशास्त्र

M

दि मकमिलन कपनी आफ इडिया लिमिटेड
नई दिल्ली बबई कलकत्ता मद्रास
समस्त विश्व म सहयागी कपनिया

टाम बाटमोर
अनुवाद डा• मदाशिव द्विवेदी

प्रथम अगरेजी सस्करण 1975
मार्क्सिस्ट सोशियोलाजी का
प्रथम हिन्दी सस्करण 1977

एस जी वसानी द्वारा दि मकमिलन कपनी आफ इडिया लिमिटेड
के लिए प्रकाशित तथा स्पार्क प्रिंटस दिल्ली 110032 म मुद्रित।
Tom Bottomore MARXWADI SAMAJSHASTRA

अनुक्रम

1 □ विपयप्रवेश

□ □

मार्क्सवादी समाजशास्त्र को लेकर लबे समय से बहस चलती आ रही है। वस्तुत कहा जा सकता है कि यह बहस स्वय मार्क्स के समय से ही, और वह भी काम्ते की यदा कदा आक्षेपमूलक चर्चा के दौरान नही बल्कि उन पक्तिया से शुरू हुई थी जिनमे मार्क्स ने अपने अध्ययन की पद्धतिया और लक्ष्या पर प्रकाश डाला है। हालाकि ऐसे स्थल दुर्भाग्यवश बहुत कम हैं।

काम्ते और उससे अधिक फास और इग्लड के उसके शिष्या की मार्क्स ने जो आलोचना की है वह सामान्य समाजविज्ञान की रचना या ऐतिहासिक नियमो को सूत्रबद्ध करने की काम्ते की आकाक्षा के विरुद्ध (यानी उसके प्रत्यक्षवाद के विरुद्ध)[1] न होकर इस नए विज्ञान के द्वारा गृहीत रूप और इससे बनने वाले राजनीतिक सिद्धाता के विरुद्ध थी। मार्क्स का ख्याल था कि 'हीगेल की तुलना मे काम्ते के सिद्धाता की स्थिति दयनीय है'।[2] यह तुलना ही अपने आपम ज्ञानवद्धक है क्योंकि काम्ते के सिद्धात म जिस मुख्य बात से मार्क्स का चिढ हो सकती थी वह 'तीन स्तरो का नियम' है। इस नियम द्वारा मानव मस्तिष्क के विकास के रूप म ऐतिहासिक परिवतन की व्याख्या की गई है। इस अथ मे यह हीगल के इतिहास दशन से मिलता जुलता है। एक दूसरे मौके पर अगरेज प्रत्यक्षवादी ई० एस० बीस्ली की चर्चा करते हुए मार्क्स ने टिप्पणी की थी कि प्रत्यक्षवाद वह सब कुछ जो प्रत्यक्ष है उसके अज्ञान के समकक्ष है।"

इस टिप्पणी को काम्तपथी प्रत्यक्षवादियो की उस प्रवत्ति की आलोचना माननी चाहिए जिसके अतगत सामाजिक विकास म आर्थिक परिवतना और वग सबधा के बजाय नैतिक और बौद्धिक उपादाना पर जोर दिया गया था।

यह स्पष्ट है कि माक्स अपने सामाजिक सिद्धाता को काम्ते के प्रत्यक्षवाद की अपेक्षा प्रत्यक्ष विज्ञान के अधिक निकट समझते थे और काम्ते का अध्ययन करने के काफी पहले ही उनके भीतर यह समझ जड जमा चुकी थी। यह भी वस्तुत उसी स्रोत से आई थी जिससे काम्ते के दृष्टिकोण। सेंट साइमन की रचनाए इन दोनो का स्रात थी। फ्रासीसी समाजवादी चिंतका स सबधित अपने अध्ययन, दि सोशल मूवमट इन फ्रास के प्रथम सस्करण (1842) मे लोरेंज वान स्तन द्वारा प्रतिपादित नए समाजविज्ञान की रूपरेखा से माक्स की यह धारणा और अधिक पुष्ट हुई थी।

परतु काट, फिशे और हीगेल का अध्ययन करने के बाद माक्स के विचारो मे एक और तत्व का समावेश हुआ। विचारों के इस ढाचे की प्रमुख समस्या एक ऐसे समाज विज्ञान की रचना न थी जा सामाजिक घटनाओ के काय कारण सबधा का एक सुनिश्चित ब्यौरा मात्र प्रस्तुत कर दे, बल्कि एक ऐसे समाज विज्ञान की रचना थी जो काट द्वारा स्थापित और प्रत्यक्षवाद द्वारा समर्थित 'है और होना चाहिए' की दूरी का समाप्त करके, एक नैतिक और राजनीतिक सिद्धात की रचना सभव कर सके। और इस प्रकार सामाजिक जीवन धारा म एक ऐसा व्यावहारिक हस्तक्षेप सभव हो सके जिसका आधार सिफ व्यक्तिगत पूवग्रह न हो। स्वय माक्स 'यथाथ जगत स विचार'[4] कसे प्राप्त हो, इस प्रश्न के साथ तब तक जूझते रहे जब तक कि सवहारा के अपने आविष्कार के साथ ही उनके विचारो म एक महत्वपूण मोड नही आ गया। यह सवहारा एक ही साथ आधुनिक पूजीवादी समाज की आवश्यक उपज और एक नए नैतिक तथा राजनीतिक आदश का यथाथ जगत म मूत रूप या प्रतिनिधि था।

एक क्रातिकारी वग के रूप मे सवहारा की इस अवधारणा तथा इससे अधिक सामान्य रूप स समाज के ऐतिहासिक विकास म सामाजिक वर्गों की भूमिका के

अपने दृष्टिकोण में मार्क्स अपने चिंतन के दो छोरों—प्रत्यक्षवाद और हीगेलवाद—को एक दूसरे के निकट ला सके थे। परंतु किसी भांति यह स्पष्ट नहीं हो सका कि ये दोनों तत्व सामान्य समाजविज्ञान की प्रकृति की विशेष पद्धतिबद्ध धारणा में संघटित हो गए या कि बस विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में अगल-बगल रख दिए गए जिससे व्याख्या और मूल्यांकन के बीच तनाव की समस्या पर परदा पड़ गया। मार्क्स ने दुर्खीम के 'रूल्स आफ सोशियालाजिकल मेथड' या मैक्स वेबर के 'आब्जेक्टिविटी इन सोशल साइंस एंड सोशल पालिसी' जैसे लंबे निबंध के ढंग पर कभी भी अपने पद्धतिशास्त्र की व्याख्या नहीं लिखी। उनके जीवनकाल में उनकी कृति पर इतनी व्यापक आलोचनात्मक प्रतिक्रिया भी नहीं हुई कि वे व्यवस्थित ढंग से अपने सिद्धांत की रक्षा करने को बाध्य होते। जैसा कि क्रोचे ने एक बार कहा था 'किसी शास्त्रीय या परिचयात्मक पुस्तक में ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या नहीं है' इसलिए विचार की जिन दो धाराओं का मैंने उल्लेख किया है उनके संबंध में मार्क्स के पद्धतिशास्त्रीय दृष्टिकोणों को छिटपुट बिखरी टिप्पणियों के आधार पर ही पुनर्गठित किया जा सकता है। इसी कारण इसकी परवर्ती व्याख्याओं में अनेकरूपता देखने को मिलती है।

अपने इस अध्ययन में प्रत्यक्ष रूप से मार्क्स के पद्धतिशास्त्र[5] की चर्चा करने के बजाय मैं मुख्य रूप से परवर्ती मार्क्सवादी लेखकों की उन व्याख्याओं की चर्चा करूंगा जिनके आधार पर उन्होंने अन्य समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की आलोचना करने या अधिक सामान्य तौर पर, एक सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की स्थिति पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले विशेष समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की स्थापना की थी। इसके लिए प्रारंभ में ही यह स्थापना बिल्कुल जरूरी है कि मार्क्स की धारणाओं में एक ओर तो व्यापक तौर पर 'प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र' और दूसरी ओर सामान्यतया 'आलोचनात्मक दर्शन' के रूप में चर्चित विचारशैली को जन्म देने की क्षमता थी और यह भी कि मार्क्स की विचारधारा में शुरू से ही ये संभावनाएं मौजूद थीं हालांकि उनकी प्रारंभिक रचनाओं में हीगेलपंथी और परवर्ती रचनाओं में प्रत्यक्षवादी रुझान अधिक थी।[6]

मात्र इस अंतर को स्पष्ट करने के लिए हम 'थीसिस आन फायरबाख' में से मार्क्स के वक्तव्यों की तुलना के निमित्त प्रस्तुत कर सकते हैं। इन वक्तव्यों में मार्क्स ने बताया है कि विश्व में परिवर्तन लाने की आवश्यकता और क्रांतिकारी व्यवहार के रूप में आत्मपरिवर्तन या मानवीय कार्यकलाप तथा बदलती हुई परिस्थितियों के संधान की सर्वपूर्ण समय के बारे में फायरबाख किस प्रकार क्रांतिकारी और व्यावहारिक आलोचनात्मक कार्यकलाप के महत्व को समझने में विफल रहा है। इसके बदले उसने 'कैपिटल' (प्रथम खंड) के द्वितीय जर्मन संस्करण की भूमिका से दृष्टांत पेश करते हुए व्याख्या की है 'मार्क्स सामाजिक क्रियाकलापों का ऐतिहासिक लक्षणों (Phenomena) का स्वाभाविक अनुगमन मानते हैं और उनकी दृष्टि में यह अनुगमन मनुष्य के उद्देश्य उसकी चेतना या इच्छा से स्वतंत्र नियमों से केवल शासित ही नहीं होता बल्कि ये नियम इन उद्देश्यों चेतनाओं और संकल्पों को निर्धारित भी करते हैं।' मार्क्स की कृति की जो गंभीर समीक्षाएं हुई हैं उनमें यह व्याख्या भी एक है। इस पर मार्क्स ने टिप्पणी की थी 'मैंने जिस पद्धति, द्वंद्वात्मक पद्धति का प्रयोग किया है आलोचक ने उसका यहां बहुत उचित वर्णन किया है ।'

परंतु हमें तब यह भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि मार्क्स ने अपनी प्रारंभिक रचनाओं में समाज के प्रत्यक्ष विज्ञान का विचार स्थापित किया है। 'इकानामिक ऐंड फिलासाफिकल मैनुस्क्रिप्टस (1844) में मार्क्स ने लिखा था प्राकृतिक विज्ञान एक दिन मनुष्य के विज्ञान को उसी प्रकार समाविष्ट कर लेगा जिस प्रकार मनुष्य का विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान को। तब एक ही विज्ञान का अस्तित्व रहेगा, अथवा प्राकृतिक विज्ञान ही मानव विज्ञान का आधार हो जाएगा। 'दि जर्मन आइडियालोजी (1845) में मार्क्स ने लिखा, जहां यथार्थ जीवन में परिकल्पना समाप्त होती है वहीं से वास्तविक प्रत्यक्ष विज्ञान प्रारंभ होता है और मनुष्य के विकास की व्यावहारिक प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व होता है।' दूसरी ओर मार्क्स की परवर्ती रचनाओं में—संकल्पवादी समाजशास्त्रीय धारणा की प्रचुरता के बावजूद—मनुष्य की स्वतंत्रता और रचनात्मकता को, अतएव सामाजिक जीवनक्रम को बदलने के सोद्देश्य तथा सचेतन हस्तक्षेप की उसकी क्षमता का मार्क्स का दृढ़ समर्थन प्राप्त हुआ है। उदाहरण के लिए 'ग्रुंड्रिस (1857-58) के कतिपय

स्थलो को लिया जा सकता है, जिनमे आधुनिक समाज म सपन्नतर और जटिलतर मानव व्यक्ति के विकास का उल्लेख है, जिसे पूजीवादी सामाजिक पद्धति द्वारा लादी गई सीमाओ के विरुद्ध सघष करना पडता है। इसी तरह 'एक्वेटे आउव्रिएर' (1880) की भूमिका मे औद्योगिक श्रमिका को प्रेरित किया गया है कि वे 'जिस सामाजिक दुव्यवस्था से पीडित हैं उस मिटाने के लिए' कायवाही करें।

विज्ञान और क्राति इन दो विषयवस्तुओ के आकलन से ही पिछली शती म मार्क्सवादी विचारधारा का गठन हुआ है। इस विचारधारा का विकास गभीर आर्थिक और राजनीतिक परिवतना तथा सामाजिक विज्ञानो के समृद्ध विकास से प्रभावित बौद्धिक परिवेश मे हुआ। परतु मैं यहा मार्क्सवादी विचारधारा की समाजशास्त्रीय व्याख्या या विचारा के इतिहास की स्थापना के लिए इस व्यापक सदभ की विस्तृत छानबीन नही करूगा।[7] मेरा उद्देश्य होगा, प्रथमत मार्क्सवाद को समाजशास्त्र की एक पद्धति बनाने के प्रयास की सैद्धातिक आधारशिला स्पष्ट करना और द्वितीयत, कतिपय चितको द्वारा की गई इन प्रयासो की आलोचना पर विचार करना जिनकी दृष्टि म मार्क्सवाद एक 'दाशनिक विश्वदृष्टि' या 'इतिहास का आलोचनात्मक दशन' है। इन्ही आलोचनाओ मे से किसी प्रत्यक्षवादी सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता और सभावना के विरोधी तर्कों का जन्म हुआ है। ये विवाद बहुत हद तक सामाजिक सिद्धात और सामाजिक व्यवहार के अत सबधा के प्रश्न पर पैदा हुए हैं और इन विरोधी विचारो के चारित्रिक लक्षणो को इस प्रश्न का विश्लेषण करते हुए स्पष्टत रेखाकित किया जा सकता है। यह प्रश्न हर क्षेत्र म एक बार पुन समाजशास्त्रिया की विस्तृत पद्धतिशास्त्रीय विवादा का केंद्रबिंदु बन गया है। अत मे, मैं इस बात पर विचार करूगा कि किस हद तक और किस तरह मार्क्सवादी विचारधारा, या जिसे मोटे तौर पर मार्क्सवादी पद्धति कहा जाता है, के प्रयोग मे आधुनिक समाजा म सस्थागत ढाचो तथा प्रमुख विकास प्रवृत्तियो का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है और आगे भी किया जा सकता है।

सदर्भ

1 अपने इस अध्ययन के दौरान म प्रत्यक्षवाद श द का विशष व्यापक अथ में प्रयोग करूगा जिसका सबध उस दष्टिकोण से है जो समाज विज्ञानों को प्राकृतिक विज्ञानो की कोटि म रखता है जिसका उद्देश्य है सामान्य कायकारण सबधी नियमो को सूत्रबद्ध करना जा दार्शनिक अतदष्टि के स्थान पर, अनभवाश्रित यथाथ के विश्लेषण को प्रभावी ज्ञान का आधार मानने का दावा करता है और इस प्रकार वज्ञानिक पद्धति की एकता पर बल देता है और जो व ज्ञानिक कथन और पतवेबाजी म स्पष्ट अतर करता है काम्ते का सिद्धात प्रत्यक्षवाद का केवल एक रूप है प्रत्यक्षवाद के उपयोगी सामा य विवरण डी० जी० चाल्टन के 'पाजिटिविस्ट थाट इन फ्रांस ड्यूरिग दि सेकड एंपायर 1852 1870 (आक्सफड क्लरेंडन प्रस, 1959) और लेस्जेक कोलाकोवस्की के 'पाजिटिविस्ट फिलासफी (हामडसवर्थ, पेंगुइन 1972) में दिए गए हैं

2. एगल्स के नाम मार्क्स के पत्र, 7 जुलाई 1866

3 एगल्स के नाम मार्क्स के पत्र, 20 माच 1869 कुछ राजनीतिक मुद्दों पर मार्क्स बीस्ली के विचारो के काफी निकट थे, परतु आशिक रूप में इस तरह भी इसकी व्याख्या की जा सकती है कि बीस्लो का अन्य प्रत्यक्षवादियों से मतभेद था और उन्हे मार्क्स 'प्रारंभिक दौर के मार्क्सवादी' भी मान सकते थे देखिए, 'इंटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्ट्री', चतुर्थ खड भाग 1 2 (1859), पृ० 22 58 208 38 विशषकर 230-37 में रायडेन हैरिसन का लेख, 'ई० एस० बीस्ली और कार्ल मार्क्स'

4 देखिए, मार्क्स द्वारा अपने पिता को लिखा गया 10 नवबर 1837 का पत्र जिसका अनुवाद लायड डी० ईस्टन और कुर्त एच० गुडडात द्वारा सपादित 'राइटिंग्स आफ यग मार्क्स आन फिलासफी ऐंड सोसायटी (गार्डेन सिटी न्यूयाक डबल्ड ऐंकर, 1967) के पृ० 40-50 पर दिया गया है

5 मैं शाघ्र ही मार्क्स के पद्धतिशास्त्रीय विचारों की सामान्य विवेचना प्रकाशित करने की आशा करता हूं जिसमें मैं प्रस्तुत अध्ययन से कहीं अधिक गहरी से जाच करूंगा कि मार्क्स के विचारो का प्रत्यक्षवाद प्रयोगवाद और समाज के 'प्राकृतिक विज्ञान' के सपूण प्रश्न के साथ क्या सबंध है

6 इसलिए यह तक दिया जा सकता है हालांकि मैं इसे गलत समझता हू कि मार्क्स की विशष देन इस विचार को (युवा हीगलपथियो द्वारा विकसित व्यवहारवाद (प्रक्सिस) का क्रियावादी धारणा) एक सक्रिय सिद्धात में रूपातरित करने में थी और जिसम बाद में निश्चयात्मक समाजशास्त्र

सामने आया—जाज लिचथम, 'फ्राम माक्स टु हागेल' (लदन आर्वेक ऐंड चैंबस, 1971) प० 14 अन्य विचारको ने लगभग वही विचार व्यक्त किए हैं जो म यहा स्पष्ट कर रहा हू और जिसके अनुसार व नानिक समाजशास्त्र की धारणा माक्स के विचारों में हमेशा मौजूद थी उदाहरण के लिए देखिए अल्बेक्ट वेरमर की पुस्तक 'क्रिटिकल थियरा आफ सोसाइटी (न्यूयाक हडर ऐंड हडर 1971) म माक्स के 'लेटेंट पाजिटिविज्म से सबधित अश बाद मे मैं उस बहस पर विचार करूगा जिसे वलमर और आलोचनात्मक सिद्धात' के अन्य प्रणेताओ ने शुरू किया था

7 इन पक्तियो का अध्ययन करने के लिए पाठका का एच० स्टुअट ह्यूस की पुस्तक 'कांशसनेस ऐंड सोसायटी' (लदन मकगिबन ऐंड की, 1959) में विशपकर तीसरा अध्याय जाज लिचथेम की पुस्तक 'मार्क्सिज्म ऐन हिस्टारिकल ऐंड क्रिटिकल स्टडी (लन्दन रूटलेज ऐंड केगन पाल, 1961) और मार्टिन ज की 'दि डायलेक्टिकल इमजिनेशन' ए हिस्ट्री आफ दि फ्रकफुट स्कूल ऐंड दि इस्टाटयूट आफ साशल रिसच, 1923 1950 (बोस्टन लिटिल ब्राउन 1973) मे एक विशिष्ट माक्सवादी स्कूल का व्यापक विवरण

2 □ समाजशास्त्र के रूप मे मार्क्सवाद

□□

1883 ई० म मावस की मृत्यु से लेकर प्रथम विश्वयुद्ध के आरभ तक की अवधि मे मावसवाद का विकास मुख्यत समाज के एक विनान के रूप मे हुआ। सबसे अधिक एगेल्स ने इस बात की ओर ध्यान दिया है (यद्यपि, जैसा कि मैंने कहा है, मावस के अपने विचारो मे भी इसका समथन मिल सकता है)। एगेल्स ने 'काल मावस के समाधिस्थल पर दिए गए भाषण' मे यह स्पष्ट दावा किया है कि 'जिस प्रकार डार्विन ने प्रकृति के जैविक विकास के नियमो की खोज की उसी प्रकार मावस ने मानव इतिहास के विकास के नियमो की खोज की।' मावसवाद का एगेल्स द्वारा दिया गया नाम 'वैज्ञानिक समाजवाद', जिसे कमोवेश काउत्स्की ने भी स्वीकार लिया था, 'जमन सोशल डिमोक्रेसी' और द्वितीय 'इटरनेशनल' का अकाट्य सिद्धान्त मान लिया गया।

इस दृष्टिकोण के अनुसार मावसवाद ने उत्पादनविधि मे परिवतन, वर्गों के गठन और वर्गों मे सघर्ष के रूप म मानवीय समाज के, खासतौर से आधुनिक पूजीवाद की उत्पत्ति और विकास के, ऐतिहासिक विकास की कारणभूत व्याख्या की जिसे ऐतिहासिक 'नियम' भी कहा जा सकता है। पूजीवाद के आवश्यक विनाश और समाजवाद की ओर सक्रमण के निष्कप भी इन नियमो से निकाले गए। प्रत्यक्ष विज्ञान के इसी रूपविन्यास मे आरभिक स्तर पर मावसवाद ने समाजशास्त्र को प्रभावित किया और समाजशास्त्र की पद्धति के रूप मे—

अर्थात एक सामान्य तथा व्यापक समाज विज्ञान के रूप म—उसे पेश किया गया। प्रमुख समाजशास्त्रियो न इसपर प्रतिक्रिया व्यक्त की और बाद म उनकी धारणाओ के समीक्षात्मक मूल्याकन म भी इस पद्धति का उपयोग हुआ। मार्क्सवाद तथा अन्य समाजशास्त्रीय सिद्धात एक ही क्षेत्र म प्रतिद्वद्विता करने वाले प्रतियोगी विचारो के रूप म सामने आए।

1894 म समाजशास्त्र के प्रथम अतर्राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर अनेक वक्ताओ ने मार्क्सवादी सिद्धात का प्रतिपादन किया और 1900 का परवर्ती अधिवेशन तो मुख्यत 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' की विवेचना पर ही केंद्रित रहा। इसी अवधि मे दुर्खेम के समाजशास्त्र पर मोरल का एक लबा विवेचनात्मक निबध प्रकाशित हुआ। इटली म लेब्रियाला ने ऐतिहासिक भौतिकवाद पर लेख प्रकाशित किया और उन्ही दिनो मार्क्सवादी सिद्धात पर क्रोचे के निबध प्रकाश म आए। परवर्ती निबधो का महत्व इसलिए अधिक था कि उनम लेखको ने एक वैज्ञानिक सिद्धात के रूप म मार्क्सवाद की अवधारणा के सबध म विवेचन मूलक प्रश्न उठाए थे। दूसरे प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारको की कृतियो म भी समाजशास्त्र के विकास म मार्क्सवाद के बढते हुए महत्व को देखा जा सकता है। एफ० टोनिस न अपनी पुस्तक 'गेमेनशैफ्ट एंड गेसेलशफ्ट' (1887) मे मार्क्स द्वारा किए गए पूजीवादी समाज के विश्लेषण का पूरा पूरा इस्तेमाल किया है। मैक्स वेबर ने भी अपनी कृति के एक बडे अश म मार्क्सवादी विचारो का विश्लेषणात्मक प्रतिरोध किया है। आधुनिक पूजीवाद के उदभव के वैकल्पिक कारणो की अपनी स्थापना म 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' के पद्धतिशास्त्रीय स्तर के अपने मूल्याकन म और धर्म के समाजशास्त्र सबधी अपने अनुसधानो म, जिन्ह वह 'इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा की नकारात्मक आलोचना' कहता है मैक्स वेबर मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। 'सिस्टम्स सोशलिस्टस' नामक अपनी कृति म परेतो न मार्क्सवादी सिद्धात का विधिवत विश्लेषण प्रस्तुत किया। उसने कुछ तत्वो—जैसे वर्गसघर्ष का सिद्धात—को अलग रखा, मगर फिर बाद म उन्हे बदले हुए रूप म अपने समाजशास्त्रीय विधान म शामिल कर लिया। दुर्खेम ने 'एनी सोशियोलाजिक' के प्रथम खड म कतिपय मार्क्सवादी कृतियो की समीक्षाओ को स्थान दिया। (इनम ई० ग्रोस की परिवार तथा

अथव्यवस्था के स्वरूप स सबधित पुस्तक की उसकी खुद की लिखी समीक्षा भी शामिल है) । हालाकि इसके अलावा इसमे मार्क्सवादी लेखन की चर्चा बहुत थाडी ही थी। उसन समाजवाद पर अपने भाषण के दौरान मार्क्स के सिद्धात की परख हो सकने वाले बिंदु तक पहुचने के पहले ही इसका परित्याग कर दिया। यहा हमे कुछ सामान्य सकेत प्राप्त होते हैं जिनसे पता चलता है कि दुर्खेम न मार्क्सवाद और समाजशास्त्र के सबध की निकटता को लक्ष्य किया तथा इस प्रकार परोक्ष तौर से मार्क्सवादी चितको को ही अपना मुख्य प्रतिद्वद्वी मान लिया। उसने लिखा कि 'हाल मे समाजवाद क्रमश अधिक वैज्ञानिक होता गया है। यह निस्सदेह कहा जा सकता है कि इस प्रक्रिया मे समाजवाद स्वत जितना लाभान्वित हुआ है उससे शायद कही अधिक इसने सामाजिक विज्ञान को सहायता पहुचाई है। क्योकि इसने अनुचिंतन को प्रेरित किया है, वैज्ञानिक क्रियाशीलता को अनुप्राणित किया है अनुसधान को उभारा है, समस्याए सामने रखी है कि एकाधिक प्रकार से इसका इतिहास समाजशास्त्र के इतिहास के साथ एकाकार होता दीख पडता है।[8]

परतु सामाजिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धात के रूप मे परिकल्पित मार्क्सवाद को दो बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा जिन्हे मार्क्सवाद के आलोचको ने गभीरता से लिया और जो सशोधनवादी विवाद के रूप म मार्क्सवादियो म बहस का विषय बन गई। बर्नस्टीन के 'डाइ वोराउस्सेटजुगन डेस सोशियालिज्म्स उड डाइ अफगावेन डेर सोजियाल्डेमोक्रेटी'[9] (1899) के प्रकाशन के साथ ही इस विवाद की शुरुआत हुई थी कि प्रथमत मार्क्सवाद यदि प्रत्यक्ष विज्ञान है तो इसके निष्कर्ष अनुभवो के परीक्षण के साथ ही साथ किन्ही सामाजिक तथ्यो के समुचित निदशन पर आधारित होने चाहिए। बर्नस्टीन की दलील म एक बात यह भी कही गई है कि पश्चिमी पूजीवादी समाज म विकास के लक्षण मार्क्स द्वारा सूत्रबद्ध लक्षणो से भिन्न पैदा हो रहे हैं और हाल के परिवर्तनो का विवेचित करने के लिए इस सिद्धात म सशोधन की आवश्यकता है। पुराने कागजात मे पाई गई टिप्पणियो म बर्नस्टीन अपने दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करते हुए लिखता है कृषक वर्ग समाप्त नही होता, मध्य वर्ग लुप्त नही होता, सकट हमेशा ही गहराता नही रहता, दुख और गुलामी म वृद्धि नही होती। असुरक्षा, निर्भरता, सामाजिक दूरी, उत्पादन

अर्थात एक सामान्य तथा व्यापक समाज विज्ञान के रूप में—उसे पेश किया गया। प्रमुख समाजशास्त्रियों ने इसपर प्रतिक्रिया व्यक्त की और बाद में उनकी धारणाओं के समीक्षात्मक मूल्यांकन में भी इस पद्धति का उपयोग हुआ। मार्क्सवाद तथा अन्य समाजशास्त्रीय सिद्धांत एक ही क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता करने वाले प्रतियोगी विचारों के रूप में सामने आए।

1894 में समाजशास्त्र के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर अनेक वक्ताओं ने मार्क्सवादी सिद्धांत का प्रतिपादन किया और 1900 का परवर्ती अधिवेशन तो मुख्यतः 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' की विवेचना पर ही केंद्रित रहा। इसी अवधि में दुर्खेम के समाजशास्त्र पर सोरेल का एक लंबा विवेचनात्मक निबंध प्रकाशित हुआ। इटली में लेब्रियोला ने एतिहासिक भौतिकवाद पर लेख प्रकाशित किया और उन्हीं दिनों मार्क्सवादी सिद्धांत पर क्रोचे के निबंध प्रकाश में आए। परवर्ती निबंधों का महत्व इसलिए अधिक था कि उनमें लेखकों ने एक वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में मार्क्सवाद की अवधारणा के संबंध में विवेचन मूलक प्रश्न उठाए थे। दूसरे प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारकों की कृतियों में भी समाजशास्त्र के विकास में मार्क्सवाद के बढ़ते हुए महत्व को देखा जा सकता है। एफ० टोनिस ने अपनी पुस्तक 'गेमेनशैफ्ट एंड गेसेलशफ्ट' (1887) में मार्क्स द्वारा किए गए पूंजीवादी समाज के विश्लेषण का पूरा पूरा इस्तेमाल किया है। मैक्स वेबर ने भी अपनी कृति के एक बड़े अंश में मार्क्सवादी विचारों का विश्लेषणात्मक प्रतिरोध किया है। आधुनिक पूंजीवाद के उदभव के वैकल्पिक कारणों की अपनी स्थापना में, 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' के पद्धतिशास्त्रीय स्तर के अपने मूल्यांकन में और धर्म के समाजशास्त्र संबंधी अपने अनुसंधानों में, जिन्हें वह 'इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा की सकारात्मक आलोचना' कहता है मैक्स वेबर मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। 'सिस्टम्स सोशलिस्टस' नामक अपनी कृति में परेतो ने मार्क्सवादी सिद्धांत का विधिवत विश्लेषण प्रस्तुत किया। उसने कुछ तत्वों—जैसे वर्गसंघर्ष का सिद्धांत—को अलग रखा, मगर फिर बाद में उन्हें बदले हुए रूप में अपने समाजशास्त्रीय विधान में शामिल कर लिया। दुर्खेम ने 'एनी सोशियोलाजिक' के प्रथम खंड में कतिपय मार्क्सवादी कृतियों की समीक्षाओं को स्थान दिया। (इनमें ई० ग्रासे की परिवार तथा

अथव्यवस्था के स्वरूप स सबधित पुस्तक की उसकी खुद की निजी समीक्षा भी शामिल है) । हालाकि इसके अलावा इसम मार्क्सवादी लेखन की चर्चा बहुत थाडी ही थी । उसन समाजवाद पर अपने भाषण के दौरान मार्क्स के सिद्धात की परख हो सकने वाले बिंदु तक पहुचने के पहले ही इसका परित्याग कर दिया । यहा हमे कुछ सामान्य सकेत प्राप्त होते हैं जिससे पता चलता है कि दुर्खेम ने मार्क्सवाद और समाजशास्त्र के सबध की निकटता को लक्ष्य किया तथा इस प्रकार परोक्ष तौर से मार्क्सवादी चितका का ही अपना मुख्य प्रतिद्वद्वी मान लिया । उसने लिखा कि 'हाल मे समाजवाद क्रमश अधिक वैज्ञानिक होता गया है । यह निस्सदेह कहा जा सकता है कि इस प्रक्रिया म समाजवाद स्वत जितना लाभान्वित हुआ है उससे शायद कही अधिक इसने सामाजिक विज्ञान को सहायता पहुचाई है । क्योकि इसने अनुचितन का प्रेरित किया है, वज्ञानिक क्रियाशीलता का अनुप्राणित किया है, अनुसधान का उभारा है, समस्याए सामन रखी है कि एकाधिक प्रकार से इसका इतिहास समाजशास्त्र के इतिहास के साथ एकाकार होता दीख पडता है ।[8]

परतु सामाजिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धात के रूप म परिकल्पित मार्क्सवाद को दा बडी कठिनाइया का सामना करना पडा जिन्ह मार्क्सवाद के आलोचका ने गभीरता से लिया और जा सशोधनवादी विवाद के रूप म मार्क्सवादिया म बहस का विषय बन गई । बर्नस्टीन के 'डाइ वोराउस्सेटजु गेन डेस सोशियालिज्म्स उड डाइ अफगाबेन डेर सोजियाल्डेमोक्रेटी'[9] (1899) के प्रकाशन के साथ ही इस विवाद की शुरुआत हुई थी कि प्रथमत मार्क्सवाद यदि प्रत्यक्ष विज्ञान है तो इसके निष्कर्ष अनुभवा के परीक्षण के साथ ही साथ किन्ही सामाजिक तथ्यो के समुचित निदशन पर आधारित होने चाहिए । बर्नस्टीन की दलील म एक बात यह भी कही गई है कि पश्चिमी पूजीवादी समाज मे विकास के लक्षण मार्क्स द्वारा सूत्रबद्ध लक्षणा से भिन्न पैदा हो रह है और हाल के परिवर्तना का विवेचित करने के लिए इस सिद्धात म सशोधन की आवश्यकता है । पुराने कागजात म पाई गई टिप्पणिया म बर्नस्टीन अपने दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करते हुए लिखता है 'कृषक वर्ग समाप्त नही होता, मध्य वर्ग लुप्त नही होता, सकट हमेशा ही गहराता नही रहता, दुख और गुलामी म वृद्धि नही होती । असुरक्षा, निर्भरता, सामाजिक दूरी, उत्पादन

के सामाजिक चरित्र, सपत्तिस्वामियो के क्रियागत निरर्थकता म भी वृद्धि होती है।'

बर्नस्टीन ने कुछ विस्तारपूर्वक उन आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनो की परख की जिन्होने, उसके मतानुसार मार्क्सवादी सिद्धात मे सशोधन किया जाना आवश्यक बना दिया है।[10] बर्नस्टीन के अध्ययन के इस अश मे जिस तथ्य पर सर्वाधिक महत्व दिया गया है वह है—बदलता हुआ वर्गीय ढाचा। उसके अनुसार वर्गों का ध्रुवीकरण मार्क्स की भविष्यवाणी के अनुरूप नही हो रहा है, नए छोटे और मध्यम श्रेणी के व्यवसायो क विकास के साथ ही बडे प्रतिष्ठानो म पूजी केंद्रित हो रही है, सपत्ति के स्वामित्व का और अधिक विस्तार हो रहा है, रहन सहन का सामान्य स्तर बढ रहा है, मध्य वर्ग की सख्या घटने के बजाय बढ रही है, पूजीवादी समाज का ढाचा सरल होने के बजाय और अधिक जटिल और विभेदमूलक होता जा रहा है। इस प्रकार विश्लेपण करते हुए बर्नस्टीन ने सकट के प्रश्न और पूजीवाद के क्षय के सिद्धात पर विचार किया है और यह तर्क दिया है कि विविध समतुल्य प्रभावो के कारण सकट कम हो रहा है तथा समृद्धि की अवधि बढ रही है जिसने व्यापारिक उतार-चढाव को सामान्य बनाने और बाजार की निरकुशता पर अशत काबू पाने म सहायता पहुचाई है। फिर भी जसा कि उसने सकेत किया, अपेक्षाकृत कम असहनीय रूप म सही, व्यवसायचक्र चल रहा है और सामान्य असुरक्षा की भावना मौजूद है जिस पर पूजीवादी पद्धति मे कभी पूरी तरह काबू नही पाया जा सकता। इस विश्लेपण स बर्नस्टीन ने यह राजनीतिक निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि ध्रुवीभूत बुर्जुआ और सर्वहारा वर्गों के बीच नाटकीय सघर्ष से समाजवादी सक्रमण नही होगा अपितु पूजीवाद के भीतर सर्वहारा तथा जन-साधारण म उसके सहयोगी वर्गों के सघर्षों से उत्पन्न होने वाली समाजवादी सस्थाओ के बढते जाने के फलस्वरूप क्रमश होगा।

इस सदर्भ म जो विवाद पदा हुए विशेषकर सकट के प्रश्न पर काउत्स्की के विचार, वे मार्क्सीय सिद्धात के वज्ञानिक पक्ष की दृष्टि से उस सीमा तक निराशाजनक थे जिस सीमा तक कट्टरपथी मार्क्सवादियो न सुधारवाद के विरुद्ध मार्क्सवादी सिद्धात के केवल क्रातिकारी पक्ष को सुरक्षित रखने पर ही अपना

ध्यान केंद्रित किया, अथात एक ऐसे प्रश्न पर ध्यान दिया जो विज्ञान के बजाय राजनीतिक प्रतिबद्धता का था। वास्तव म 'सशोधनवाद' शब्द का जिस गर्हित भाव मे प्रयोग किया गया था, वह स्वय ही वैज्ञानिक दृष्टि से पूणत भ्रामक था, क्योकि मार्क्सवादी सिद्धात यदि समाज का अनुभवसिद्ध विज्ञान है तो उनम नई खोजो और नए विचारो के अनुसार होने वाली निरतर आलोचना के अनुरूप परिवतन स्वाभाविक है। इस अथ म 'सशोधनवाद' किसी भयकर अपराध के बजाय महान गुण होगा।

बनस्टीन द्वारा उठाए गए प्रश्न पिछले 70 वर्षों से मार्क्सवादी समाजशास्त्र के बारे म पैदा हुए विवादो के केंद्र रहे हैं। इससे जो खास मुद्दे उठे हैं और अब भी उठ रहे हैं वे आधुनिक पूजीवाद के एक समीचीन समाजशास्त्रीय विश्लेषण से ही सबधित हैं।[11] आर्थिक विकास, व्यावसायिक और वर्गीय ढाचे मे हो रहे निरतर परिवतन तथा राजनीतिक उथल-पुथल से कतिपय प्रारभिक प्रवृत्तियो को बढावा मिला है और जाच तथा आकलन के लिए नए सामाजिक लक्षण पैदा हुए हैं। ये हैं—प्रमुख वर्गों के बीच राजनीतिक प्रभाव, प्रतिष्ठा तथा सपत्ति का पर्याप्त अतर होते हुए भी आराम, काम और उपभोग के मामले मे श्रमिक वग की हालत म वास्तविक सुधार, मध्यवग की सख्या मे निरतर बढोत्तरी और औद्योगिक श्रमिको का आनुपातिक ह्रास, विभिन्न वर्गों की घटती बढती और अनिश्चित राजनीतिक भूमिका, पिछले 30 वर्षों म पूजीवाद की आर्थिक स्थिरता और उत्तरोत्तर विकास, आर्थिक प्रबध म राज्यो की बढी हुई भूमिका, अफसरशाही का विस्तार, तकनीकी विशेषज्ञता की वद्धि, सामाजिक सेवाओ का व्यापक विस्तार, और सास्कृतिक परिवतन (खुद किन शक्तियो से पैदा हुए ?) जिन्होने नई जीवन शली और नई राजनीतिक अभिरुचियो को जन्म दिया।

एक तरह से इन प्रवृत्तियो का विश्लेषण करना अब सरल लग सकता है क्योकि इन्हे अपने को जमाने और अपना वास्तविक महत्व दिखाने म काफी समय लगा था। परतु मैं समझता हू कि कठिनाइया वस्तुत बढी है। आज के पूजीवादी समाज अपने व्यावसायिक और सामाजिक समूहो तथा अपने सास्कृतिक परिवेश म 19वी शती के अत की अपक्षा और

अधिक जटिल तथा विविधता पूर्ण है। अत इनके आपसी तत्वों के अंत सबंधों को समझना अपने आप मे कहीं अधिक जटिल और दुस्साध्य है। इसके अलावा परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है परंतु बड़े असमान रूप म। और यह निश्चित करना सरल नहीं है कि कौन सी प्रमुख प्रवत्तिया है या कौनसी प्रमुखता पाने वाली हैं। समाजशास्त्र के विकास से भी एक दूसरी कठिनाई खड़ी होती है। लगभग एक शती तक के विचार विमर्श से यह स्पष्ट हुआ है—हालांकि इस बीच कुछ नई बहसें शुरू हुईं, कुछ रुक गई—कि समाजशास्त्र के सैद्धांतिक और धारणात्मक जाल म हम जिन वास्तविकताओं को पकड़ने की कोशिश करते हैं, वे कितनी अधिक चचल ह। हाल की समाजशास्त्रीय व्याख्याओं स जो अनिश्चित निष्कर्ष सामने आए हैं उनम और मार्क्सवादी विचारधारा की कट्टर प्रवत्तियों म भिन्नता है (हालांकि आचरणवादी समाजशास्त्रियों की कट्टरता से और दुर्खेम के समाजशास्त्र के कतिपय प्रत्यक्षवादी और व्यवहारवादी निष्कर्षों से भी ये उतने ही भिन्न हैं)। अत आज मार्क्सवादी समाजशास्त्र को केवल पूजीवादी समाज का 'वास्तविक विश्लेषण ही नहीं, वरन समाज के उन रूपों का भी वास्तविक' विश्लेषण कर सकने योग्य होना पड़ेगा जो मार्क्सवाद द्वारा प्रेरित क्रांतियों से उत्पन्न हुए लेकिन जिनम मार्क्सवादी सिद्धांत की दृष्टि से अनेकों गुत्थियां ह। अगले अध्याय मे मैं इनम स कुछ प्रश्नों पर विचार करूंगा और यह तुलना करने का प्रयास करूंगा कि मार्क्सवाद तथा अन्य समाजशास्त्रीय विचारधाराओं ने हाल की सामाजिक प्रवृत्तियों को समझने म हम क्या योगदान दिया है।

लगता ह बर्नस्टीन अपने को प्रत्यक्षवादी समझता था। अपने एक परवर्ती निबंध (1924) म उसने लिखा मेरा सोचने का तरीका मुझे प्रत्यक्षवादी दार्शनिकों और समाजशास्त्रियों के दल का एक सदस्य बना देगा। मैं चाहूगा कि मेरा भाषण (वैज्ञानिक समाजवाद किस तरह सभव ह ?) को मेरे इस विचार का प्रमाण माना जाए।[12] यद्यपि मार्क्सवाद का अनुभववादी विज्ञान के रूप म विकसित करने की इच्छा रखने के कारण बर्नस्टीन प्रत्यक्षवादियों के निकट पड़ता है, तथापि समाजवाद का एक नैतिक सिद्धांत सूत्रबद्ध करने की अपनी आतरिक इच्छा के कारण वह प्रत्यक्षवादियों स अलग है। इसम वह मुख्यत जर्मन दर्शन म नव-काटवादियों के पुनरुत्थान से

प्रभावित है। इस प्रकार बर्नस्टीन ने अपनी कृति के एक भाग में अनुभववादी विज्ञान के रूप में मार्क्सवाद का ग्रहण करने की दूसरी बड़ी समस्या पर विचार किया है। अर्थात इसमें 'है' और 'होना चाहिए' के पूंजीवादी विकास की अपरिहार्य परिणति के रूप में समाजवाद और नैतिक आदर्श के रूप में समाजवाद के वस्तुगत ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और मानव के व्यक्तिगत आकांक्षाओं, संघर्षों और आदर्शों के अंत संबंधों की व्याख्या की गई है। परंतु समाजवादी आंदोलन में एक 'आदर्श' तत्व के महत्व और अस्तित्व पर बल देने के अलावा संबंधित चर्चा को आगे नहीं बढ़ा पाया।

'आस्ट्रियाई मार्क्सवादी'[13] दल के चिंतकों ने समाजविज्ञान के रूप में मार्क्सवाद तथा विज्ञान और नीतिशास्त्र के अंत संबंधों पर आधारित बहस को ज्यादा गहराई तक ले गए। आट्टो बावेर ने इस दल की मुख्य विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है

> वे लोग किसी विशेष राजनीतिक सचेतना (Orientation) से नहीं वरन अपने बौद्धिक क्रियाकलापों के खास चरित्र से ही ऐक्यबद्ध हुए। ये लोग उस अवधि में आगे आए जबकि स्टैंपलर, विंडेलबैंड और रिकर्ट जैसे लोग अपने दार्शनिक तर्कों से मार्क्सवाद पर प्रहार कर रहे थे। अत वे लोग आधुनिक दार्शनिक प्रवृत्तियों के प्रतिनिधियों के साथ विवाद में पड़ने को मजबूर थे। यदि मार्क्स एंगेल्स हीगेल से शुरू करते हैं तथा परवर्ती मार्क्सवादी भौतिकवाद से तो हाल के आस्ट्रियाई मार्क्सवादी कांट और मैक से। दूसरी ओर इन आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों को राजनीतिक अर्थव्यवस्था के तथाकथित 'आस्ट्रियाई स्कूल' के साथ विवाद में उलझना पड़ा। इस विवाद ने भी उनके विचारों की प्रणाली और ढांचे को बहुत अधिक प्रभावित किया। अततोगत्वा, राष्ट्रीय संघर्षों से घिरे हुए प्राचीन आस्ट्रिया में उन सभी को सीखना पड़ा कि कैसे इतिहास की मार्क्सवादी अवधारणा को उन बेहद पेचीदा स्थितियों पर लागू किया जाए, जिनकी व्याख्या मार्क्सवादी पद्धति के ऊपरी रीतिबद्ध उपयोग से संभव नहीं था।[14]

आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों की प्रमुख उपलब्धियां उन स्थलों पर हमें प्राप्त होती हैं जहां उन्होंने समाजशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में मार्क्सवादी तर्क पद्धति का

विश्लेषण किया है और सामाजिक जीवन के नए क्षेत्रों और दिशाओं की ओर मार्क्सवादी अनुसंधान को विस्तार दिया है। इस दल के दार्शनिक मैक्स एडलर ने यह तर्क दिया कि मार्क्स ने 'समाजीकृत मानवता' की धारणा के द्वारा वैज्ञानिक समाजशास्त्र के आधार की स्थापना की थी जिससे कार्यकारण व्याख्या की पद्धति के क्षेत्र में प्रकृति और समाज दोनों को लाना संभव हो सका। साथ ही उसने यह भी कहा कि मार्क्सवादी समाजशास्त्र कांट दर्शन के बिल्कुल अनुरूप है, क्योंकि मार्क्स का सिद्धांत—कांटीय अर्थ में—एक ऐसा सद्-असद् विवेचन था जिसके द्वारा मानव के सामाजिक अस्तित्व को विश्लेषित करने वाली श्रेणियों की स्थापना हुई।[15] परंतु कांट द्वारा स्थापित कार्यकारण प्रक्रिया से उद्भूत प्राकृतिक अथवा सामाजिक घटनाओं की दुनिया और स्वायत्तशासी, आत्मनिर्णायक नैतिक निर्णयों की दुनिया के बीच के अंतर को स्वीकार करने के लिए एडलर तैयार नहीं था। इसीलिए वह उन नव-कांटवादियों से भी सहमत नहीं था जिनकी दलील थी कि प्रत्यक्ष विज्ञान के रूप में मार्क्सवाद को एक नैतिक दर्शन के संयोग से पूर्ण बनाए जाने की आवश्यकता है। इसके विपरीत एडलर ने दावा किया कि मार्क्स के सिद्धांत में विज्ञान और नीतिशास्त्र समायोजित हैं :

> इतिहास का कार्यकारण तत्व अपने वैज्ञानिक प्रकाश द्वारा सीधे हेतुविज्ञान में रूपांतरित हो जाता है और इससे उसके कार्यकारण तत्व द्वारा स्थिर चरित्र पर कोई आंच नहीं आती। सीधी सी बात है कि एक खास सामाजिक स्थिति की वैज्ञानिक जानकारी इस कार्यकारण तत्व में पेश होता है... अतः इस दृष्टिकोण में से... दर्शन की बहुत पुरानी आकांक्षा की पूर्ति की संभावना... वैज्ञानिकता पर आधारित राजनीति का आदर्श... सामाजिक जीवन की वैज्ञानिक तकनीक... उद्भूत होते हैं।[16]

अगले अध्याय में मैं विज्ञान और नीतिशास्त्र के उपरोक्त अन्योन्याश्रय पर अधिक सूक्ष्मता से विचार करूंगा। यहां मैं मार्क्सवादी समाजशास्त्र के बारे में एडलर द्वारा सूत्रबद्ध किए गए सिद्धांतों की चर्चा करूंगा। अपनी परवर्ती कृति में, एडलर ने मार्क्सवादी सिद्धांत[17] की व्यवस्थित व्याख्या के उद्देश्य से अनेक जटिल स्थितियों में निहित सूक्ष्म कार्यकारण संबंधों की स्थापना

करते समय सामने आई खास कठिनाइया तथा कारण के रूप मे प्रेरक तत्वा की प्रकृति और सामाजिक कायकारण सबधा की जटिलताआ पर विस्तार से विचार किया है। इस प्रकार कायकारण व्याख्या की योजना के रूप म पूरी तरह इतिहास की भौतिकवादी धारणा पर अपना दृष्टिकोण भी स्पष्ट किया है। उसने और अधिक पूणता से 'सामाजिक मनुष्य' या समाजीकरण' की धारणा का विश्लेपण किया, और इसे मावसवादी विचारधारा मे मूलभूत समाजशास्त्रीय धारणा के रूप म ग्रहण किया और काटवादिया की तरह प्रश्न रखा (सिम्मेल ने भी इसी भाति प्रश्न किया था) कि 'समाजीकरण (समाज) किस भाति सभव है?' परतु उसने एक और महत्वपूण मत यह व्यक्त किया कि जिस प्रकार न्यूटन के विज्ञानिक सिद्धात प्रतिपादन के बाद ही काट का यह प्रश्न सभव हुआ कि मानव चेतना के लिए कैसे प्रकृति जिम्मेवार है, उसी प्रकार समाज की सभावना का प्रश्न भी मावस द्वारा सामाजिक प्रक्रियाआ के कायकारण सिद्धात तैयार करने के बाद ही उठाया गया।

वैज्ञानिक सिद्धात के रूप म मावसवाद सबधी एडलर की धारणा को उन सभी आस्ट्रियाई मावसवादिया ने ग्रहण किया जिन्हाने अनुभववादी अनुसधान के द्वारा इस सिद्धात का विकास करना और अन्य आर्थिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धातो का बडा विरोध करना अपना प्रमुख काय मान लिया था। हालाकि इन लोगा ने अपना यह आलोचनात्मक और वैज्ञानिक रुख बनाए रखा परतु वे बनस्टीन की तरह के 'सशोधनवादी' नही थे। वस्तुत उनके प्रथम प्रकाशित वक्तव्य (1901) म मावसवाद के इस प्रकार सशोधन करने के खिलाफ आक्रमण था। बनस्टीन के विचारो की कडी आलोचना से सबधित एक अध्ययन अमरीकी मावसवादी लुइस बोउडिन ने, जिसका आस्ट्रियाई मावसवादियो से निकट का सपक था, प्रकाशित किया था (वस्तुत उसने ही इस 'स्कूल' का परिचय देन के लिए आस्ट्रियाई मावसवादी शब्द का प्रयोग किया था)।[18] प्रारभिक अवधि मे, कम से कम प्रथम विश्वयुद्ध तक, ये लोग पूजीवाद के उन विकासा म (उदाहरण के तौर पर बदलता हुआ वर्गीय ढाचा) विशेप तौर पर दिलचस्पी नही ले रहे थे, जिससे बनस्टीन द्वारा स्थापित सुधारवादी राजनीति की वकालत विवेकसम्मत लग सके। वे वस्तुत पूजी के केंद्रीकरण, साम्राज्यवाद का विस्तार और अतर्राष्ट्रीय

प्रतिद्वद्विता जैसी अनेक विशेष समस्याओ म दिलचस्पी ले रहे थे जिन पर मार्क्स ने विस्तार से विचार किया था। इनम स कुछ समस्याए थी—सवहारा आदोलनो के सदभ म राष्ट्रीय सघष तथा राष्ट्रीयता का महत्व, या आर्थिक ढाचे तथा विशिष्ट सद्धातिक 'बाहरी ढाचे' जैसे विधि व्यवस्था के बीच के सूक्ष्म सबध।

हिल्फर्डिंग ने अपने विस्तृत अध्ययन 'डास फिनैंज कैपिटल'[19] उपशीर्षक ऐ स्टडी आन दि मोस्ट रिसेंट डेवलपमट आफ कैपिटलिज्म' म निगम (कारपोरेट) सबधी मालिकाना की केंद्रीयता, औद्योगिक और बक पूजी के विलय करारो और ट्रस्टो के माध्यम से सपूण अथव्यवस्था पर नियत्रण करने के प्रयास सरक्षणवाद का आनुषगिक विकास, पूजीवादी राष्ट्रो के बीच राजनीतिक आर्थिक सघष की गहनता और राष्ट्रीय एकाधिपत्य के माध्यम स आर्थिक शोषण का क्षेत्र विस्तृत करने के क्रम म उपनिवेशवाद के विकास पर अपना विवचन प्रस्तुत किया है।[20] बावेर की पुस्तक[21] म आस्ट्रियाई-हगरियाई साम्राज्य म राष्ट्रीय जातियो की समस्या और जातीय सस्कृतियो की प्रकृति पर विचार किया गया है और फिर 'यहूदी प्रश्न' के मार्क्सवादी विश्लेपण की चर्चा की गई है और आगे चलकर साम्राज्यवाद के एक सिद्धात की स्थापना की गई है जो बावर के अनुसार आर्थिक मदी और पूजी निवेश के लिए नए तथा अधिक लाभकारी क्षेत्रो की खोज का प्रतिफलन था।

एक दूसरी मौलिक अनुसधान पद्धति काल रेनर की थी जिसने 1904 म विधि सस्थाओ पर अपना अध्ययन प्रकाशित किया। इसम रेनर न कानून का एक मार्क्सवादी सिद्धात विकसित करने का प्रयास किया जिसम विधि नियमो के विश्लेपण के अतिरिक्त दो सयुक्त क्षेत्रो—कानून की उत्पत्ति और सामाजिक प्रयोग—' की अनुभववादी जाच पडताल भी शामिल है। उन्होने लिखा है कि विधि विश्लेपण के प्रारभ और अत दोनो स्थानो पर कानून एक सामाजिक सिद्धात है जो हमारे इस जीवन के सभी विधि से इतर तत्वो को उसी प्रकार परस्पर सबद्ध करता है जसे सामाजिक घटनाओ की पूरी मशीन को उसके चक्के के दाते करते है।[22]

अपनी परवर्ती कृतियों में आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों ने अन्य समस्याओं की ओर ओर ध्यान दिया जो पूजीवादी समाज के ढाचे म हुए नए परिवर्तनों और उनकी नई व्याख्याओं से उठ खड़ी हुई थी। मक्स एड्लर ने श्रमिक वग पर 1933 म प्रकाशित[23], अपने दो निबंधों में यूरोपीय श्रमिक वग म क्रातिकारी दृष्टिकोण जगा सकने के सदभ म चार वर्षों के आर्थिक सकट की विफलता पर प्रकाश डाला है और श्रमिक आभिजात्य के विकास और सामाजिक विभेदों की वद्धि की जाच की है। श्रमिक अभिजात्य को उमने श्रम सगठनों की नौकरशाही के रूप म (जैसा मिचेल्स ने पहले कहा था) रेखाकित किया है। रेनर ने मरणोपरात प्रकाशित अपने दो लेखों म मार्क्सवादी वर्गसिद्धात म कुछ नए तत्वों को समाहित किया और मार्क्सवादी पद्धति के प्रयोग पर जोर दिया।[24] प्रथमत रेनर न प्रबधको और वेतनभोगी कमचारियों के नए वग के विकास का विश्लेषण किया। इसे 'कमचारी वग' कहते हुए उसन तक दिया कि विकसित पूजीवादी समाज म दो प्रमुख वग हैं—कमचारी वग और श्रमजीवी वग। उसने सुझाव दिया कि ये दोनों वग एक दूसरे के निकट आ रहे हैं और इनके एक हो जाने की भी सभावना है। अत इन समाजों का विशेष चरित्र यह था कि इनमें अविरोधी वग उपस्थित थे और स्पष्ट रूप से परिमाणित कोई सत्तारूढ वग अनुपस्थित था। द्वितीयत वर्गों की समस्या पर साधारण रूप म विचार करते हुए रेनर ने तक दिया कि सपत्ति के प्रभुत्व के आधार पर बने वर्गों के अतिरिक्त भी प्रभुत्व और शोषण की श्रेणिया रही हैं और 'मार्क्सवादी गुट प्राधिकरण के सभी ऐतिहासिक तथा सभावित सबधो की व्यवस्थित जाच पडताल करने म विफल रहा है।'[25] ऐसा कहकर रेनर न मार्क्सवादी सिद्धात के पूर्ण सशोधन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

युद्ध के बाद आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों ने कतिपय नए लक्षणों की ओर ध्यान दिया। उन्होंने युद्धोत्तर क्रातियों और रूसी क्राति की चारित्रिक विशेषताओं तथा परिणतियों का विश्लेषण किया और लोकतत्र के सदभ म क्रातिकारी आदोलनों की नीतियों और व्यवहार के मूल्याकन का प्रयास किया। उनके अध्ययन के अतगत जमनी और आस्ट्रिया मे नाजी आदोलन के उभार के साथ ही लोकतत्र को अधिकाधिक महत्व प्राप्त हुआ। क्राति

और लोकतन्त्र के क्रम मे ही उन्होंने युद्ध के बाद की अवधि म श्रमिक परिषदो के विकास और उनकी गतिविधियो की जाच पटनाल की जिस पर पर मैक्स एडलर ने एक छोटी पुस्तक प्रकाशित की।[26] इन अध्ययनो म उन क्षेत्रो की समस्याओ की चर्चा की गई है जहा सामाजिक सिद्धान और राजनीतिक काय आपस म अतस्सबधित हो जाते हैं। परवर्ती अध्याय म इस पर विचार किया जाएगा।

यह प्रश्न उठाए जाने योग्य है[27] कि मार्क्सवादी समाजशास्त्र के विकास म आस्ट्रियाई मार्क्सवादियो के अध्ययन और सशोधनवादी' विवादो के स्तर से अधिक प्रगति हुई है या नही। बुखारिन ने 1921 म मार्क्सवादी समाजशास्त्र की एक पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की जिसम अन्य रोचक विषयो म से एक यह है कि मार्क्सवादी साहित्य के दायरे म सीमित न रह कर उसम मैक्स वेबर, राबर्ट मिचेल्स सहित अन्य समाजशास्त्रियो के विचारो की विश्लेषणात्मक चर्चा करने की कोशिश की गई है। ओट्टो न्यूराथ के अनुभववादी समाजशास्त्र शीर्षक प्रलेख[28] म सभवत सबसे अधिक दृढता के साथ प्रत्यक्ष और अनुभव सिद्ध विज्ञान के रूप म मार्क्सवाद को पेश किया गया है और इसम आस्ट्रियाई और वियेना क्षेत्र के विचारको को सम्मिलित कर लिया गया है। न्यूराथ के अनुसार वैज्ञानिक ढग से गैर आध्यात्मिक भौतिकतावादी समाजशास्त्र की रचना करने के जो प्रयास किए गए हैं उनम मार्क्सवाद सबसे अधिक पूर्ण है। (पृ० 349)। आध्यात्मिकता की प्रतिगामी धाराओ ने चूकि प्रायोगिक मार्क्सवादी समाजशास्त्र के विकास का विरोध किया इसलिए न्यूराथ ने इनकी आलोचना की और मार्क्सवाद को 'भौतिक आधारशिला का समाजशास्त्र कहा है और उसकी रूपरेखा तैयार की। इन प्रतिगामी धाराओ मे वर्स्टेहेन (Verstehen) पद्धति मुख्य है। न्यूराथ ने बताया है कि समाजशास्त्रियो का काय है—अत्यधिक 'जटिल सामाजिक यत्रो की सक्रियता के नियमो की खोज करना और इसके बाद सभव हो तो इन नियमो को आधारभूत सबधो के नियमो म बदलना (पृ० 371)। मार्क्सवाद ने समय की स्थितियो द्वारा निरूपित आवश्यक विशेष नियमो के साथ ऐतिहासिक सरचना के रूप म युग के सपूर्ण ढाचे का वर्णन करते हुए ऐसे ही समाजशास्त्र की रूपरेखा प्रदान की है (पृ० 358)। मार्क्सवादी समाजशास्त्र के

अध्ययन से सबधित एक दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक काल कोस्च की है, जिसमे उन्होंने आधुनिक समाजशास्त्रियो की[29] चर्चा की है। परतु इसकी विवेचना बाद म करना सुविधाजनक होगा, जब मार्क्सवाद सबधी काल कोस्च की अवधारणा के विकास की चर्चा की जाएगी, जो आरभ मे दार्शनिक थी मगर बाद मे अपेक्षाकृत समाजशास्त्रीय हो गई थी।

मुख्य बात यह है कि इस सदी के प्रारभ मे शुरू हुए मुख्य समाजशास्त्रीय अनुसधानो और विचारा पर व्यवस्थित ढग से विचार नही हुआ है और जिस सपूर्ण क्षेत्र पर मार्क्सवादी समाजशास्त्र का प्रभाव होना चाहिए था उस पर वस्तुत समाजशास्त्र के अन्य विचारका ने विशेषतया द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाजशास्त्र के त्वरित विस्तार की अवधि म अपना प्रभाव जमा लिया। वास्तव मे सामाजिक स्तरीकरण या सामाजिक परिवर्तन और सघर्ष पर जो भी लेखन काय हुआ उसके अधिकाश भाग म मार्क्सवाद या तो नायक या एक परछाईं अथवा प्रच्छन्न प्रवतक की भाति मौजूद रहा। प्रारभ म चर्चा की गई ओस्सावस्की तथा डाह्रेंडोफ के वर्गीय ढाचे सबधी अध्ययन पर जाज फ्रायडमैन के औद्योगिक समाजशास्त्र सबधी अध्ययन पर, सी॰ राइट मिल्स तथा अन्य व्यक्तिया द्वारा अभिजात और वर्गों के विश्लेषण, पर जाज गुर्विटच के समाजशास्त्रीय सिद्धात पर, डब्लू॰ जी॰ फ्रायडमैन के 'ला ऐंड ए चेंजिग सोसायटी '[30] पर जिसे रेनर की कृति का विकास भी कहा जा सकता है, मार्क्सवाद का और अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। परतु पिछले कुछ वर्षों म ही औद्योगिक समाज और नव पूजीवाद पर फिर से शुरू हुई बहसो के साथ 'विकासमान देश' कहे जाने वाले देशो के सदभ मे साम्राज्यवाद के नए अध्ययनो के साथ, और वामपथी राजनीतिक आदोलना के पुनर्जीवित होने से उभरी दिलचस्पी के साथ मार्क्सवादी समाजशास्त्र के अपेक्षाकृत स्पष्टतर रूप सामने आए हैं।

व्यापक मार्क्सवादी समाजशास्त्र के विकास की विफलता के कई कारण हैं। मार्क्सवादी सिद्धात स्वय इसका एक सामान्य कारण बताता है और वह है सत्तारूढ वग के विचारा का सस्कृति, विशेषकर शैक्षणिक पद्धति पर प्रभुत्व। बुर्जुआ सस्कृति की पुनप्रस्तुतीकरण के माध्यम से पूजीवादी समाज को

बनाए रखने के इस लक्षण की स्वभावत ही विस्तृत रूप से जाच पडताल की जानी चाहिए[31] परतु कई पश्चिमी देशो के विश्वविद्यालयो मे मार्क्सवादी समाजविज्ञान के अध्ययन के समक्ष पेश की गई कठिनाइयो के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। इस प्रकार की नीति का महत्वपूर्ण प्रभाव था जर्मनी म नाजी सत्ता की स्थापना, जिसने मार्क्सवाद और समाजशास्त्र दोनो को उस समाज के लिए समाप्त कर दिया जहा बौद्धिक स्थितिया विशेष तौर पर मार्क्सवादी समाजशास्त्र के विकास के अनुकूल थी।

फिर भी विफलता के लिए केवल यही एक पर्याप्त कारण मुझे प्रतीत नही होता। इस पर एक दूसरा बडा प्रभाव मार्क्सवादी कट्टरपन का पडा था। यह समाज का विज्ञान होने का दावा तो करता था परतु वह रूस तथा सपूर्ण अतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आदोलन म एक राजनीतिक मतवाद के सिवाय कुछ भी नही था, और इस आधिकारिक सिद्धात ने कई दशको तक गभीर विचार या अनुसधान को रोके रखा। अब अत म, हम पश्चिमी यूरोप और विशेषकर जर्मनी के उन बुद्धिजीवी आदोलनो पर विचार करना है जो मार्क्सवाद को एक समाजविज्ञान के रूप म मानने के विचार स अलग दार्शनिक और हीगेलवादी घटको को पुन प्रतिष्ठित करने की दिशा म मार्क्सवादी चितको को हटा ले गए।

सदर्भ

1 एनाल्स द ल इंस्टीट्यूट इंटरनेशनल द सोशियोलॉजी पहला खड (पेरिस जियार्ड एट ब्रियर 1895) इसी वर्ष महत्वपूर्ण एनरिको फेरी ने 'सोशलिज्म ऐंड पाजिटिव साइंस' (डार्विन स्पेन्सर मार्क्स) (रोम 1894 अग्रेजी अनुवाद लदन इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी 1906) पुस्तक प्रकाशित की जिसम यह दिखाना चाहा कि मार्क्सवाद समाजशास्त्र का एकमात्र प्रत्यक्ष पद्धति और वैज्ञानिक मूल्य का विधान है आधुनिक वैज्ञानिक क्राति का सामाजिक जीवन म एकमात्र व्यावहारिक और सामजस्य रूप है [illegible] पूर्व माक्सवाद [illegible] की सभी शाखाओ म प्रायोगिक पद्धति के पुनरुत्थान म जिसका सूत्रपात हुई था

2 एनाल्स [illegible] (पेरिस जियार्ड एट ब्रियर, 1902)

3 जी० सोरेल, लेस पियरिज दि एम० दुर्खेम ल डवेनिर सोशल (अप्रल-मई 1895) प० 1 26, 148 80 1895 98 की सक्षिप्त अवधि म सोरेल ने इस पत्रिका का समारभ और सपादन किया तथा इसम एगल्स काउत्स्की प्लेखनोव, स क्रियोला और श्रोच सहित प्रमुख यूरोपियन मार्क्सवादी विचारको और अध्येताओ क निबध प्रकाशित किए पत्रिका म समीक्षा भाग म समाजशास्त्र तथा सामाजिक इतिहास स सबधित नए साहित्य पर विचार विमश भी प्रकाशित किया गया

4 एटोनियो स क्रियोला, इन मेटरियालिस्मो स्टारिको (रोम 1896) अगरेजी अनुवाद 'एसेज आन दि मटेरियलिस्टिक कसप्शन आफ हिस्ट्री (शिकागो चाल्स केर, 1908)

5 1895-1899 के मध्य लिखित और 'मटेरियालिस्मो स्टारिको एंड इकानामिया मार्क्सिस्टिका ए० डी० लिंडस द्वारा सपादित अगरेजी अनुवाद 'हिस्टारिकल मेटेरियालिज्म एंड दि इकानामिक्स आफ काल मार्क्स (लदन हाउआड लटिमर 1913) के एक खड म प्रकाशित

6 अगरेजी अनुवाद 'कम्युनिटी एंड एसोसिएशन (लदन रूटलेज एंड कगन पाल 1955)

7 मार्क्स और वेबर म सबधो के लिए देखिए काल लाविथ का मक्स वेबर एंड काल मार्क्स (1932) जिसका अगरेजी अनुवाद शीघ्र प्रकाशित होने वाला है

8 एमिल दुर्खेम 'ल सोशियालिज्म' (पेरिस एफ० एल्कन 1928) पृ० 3-4

9 अगरेजी अनुवाद 'इवोल्यूशनरी सोशलिज्म ('यूयाक शाकोकेन बुक्स, 1961) शीषक से

10 पीटर ग के 'दि डायलेमा आफ डिमोक्रेटिक सोशलिज्म ('यूयाक कोलबिया यूनिवर्सिटी प्रस 1952) म बनस्टीन के विचारो का अच्छा आकलन और विश्लेषण है

11 यहा ध्यान देना जरूरी है कि, जसा कि हम देखेंगे लुकाच ने 1920 म मार्क्सवाद की एक बिल्कुल अलग व्याख्या की और वह मार्क्सवादी सिद्धान्त को लेकर व्यक्त किए गए अपने अतिम विचारो म इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुचा था जब उसने आज पूजीवाद की आतरिक प्रकृति के वास्तविक विश्लेषण की समस्या का चचा की जिस उसके अनुसार समझने म 'मार्क्सवाद विफल रहा है इस्तवान मेस्जारोस द्वारा सपादित 'एस्सेज्स हाफ हिस्ट्री एंड क्लास काशसनेस (लदन रूटलेज एंड कगन पाल 1971)

12 दि डायलमा आफ डिमाक्रेटिक सोशलिज्म प० 153-54 (फुटनोट) म पीटर ग द्वारा उद्धृत

13 प्रमुख बुद्धिजीवी थे—मक्स एडलर ओट्टो बावेर एडोल्फ हिल्फर्डिंग और कार्ल रनर सद्धांतिक और राजनीतिक मतविरोधों के बावजूद इन लोगों ने एक साथ मार्क्सवादी विचारों के अत्यंत महत्वपूर्ण 'स्कूल' का निर्माण किया इस तुलना में यह अकेला दल था जो फ्रैंकफर्ट इंस्टीटयूट आफ सोशल साइंसेज के चारों ओर हावी हुआ परंतु उनके लेखन की बहुत अधिक उपेक्षा हुई है और काफी अल्प मात्रा में ही उनका अंगरेजी अनुवाद हुआ है

14 आट्टो बावर आस्ट्रो-मार्क्सिज्मस आर्बेइटर जइतुंग (वियेना 3 नवंबर 1927) में प्रमुख लेख के रूप में बिना नाम के प्रकाशित

15 इस विचार की व्याख्या के लिए विशेषकर एडलर के मोनोग्राफ डेर सोशियोलाजिश सिन डर लेहर वान कार्ल मार्क्स (लिप्जिग सी० एल० हर्स्चफल्ड 1914) देखिए

16 वही पृ० 25

17 'लेहरबच डर मटेरियालाइस्टिशन गश्चिटस्अफस्सग (वियेना 1930-32) शीर्षक से दो खंडों में प्रकाशित सोशियालाजी डस मार्क्सिज्मस (वियेना यूरोपेस्क वर्लागसान्स्टाल्ट 1964) शीर्षक से प्रकाशित इस ग्रंथ का तीसरा खंड अप्रकाशित पाडुलिपि के रूप में है

18 लुइस बोउडिन दि थियराटिकल सिस्टम आफ कार्ल मार्क्स इन दि लाइट आफ रिसेंट क्रिटिसिज्म (शिकागो, 1907 न्यूयार्क मथली रिव्यू प्रेस 1967 द्वारा पुन मुद्रित)

19 (वियेना 1910) 60 वर्ष बाद अब जाकर इस महत्वपूर्ण कृति के अंगरेजी अनुवाद का प्रकाशन हुआ है

20 जान विल्सन के इम्पीरियलिज्म (न्यूयार्क प्रेगर 1971) के सप्तम अध्याय में लेनिन रोजा लक्जमबर्ग और स्कपटर के सिद्धांतों के संदर्भ में हिल्फर्डिंग की कृति पर अच्छा विवेचन किया गया है

21 'डाइ नेशनलाइटेटनफ्रेज अंड डाइ सोशियालडमाक्रेटिक' (वियेना मार्क्स स्टुडियेन 2 1907)

22 'डाइ सोशियाल फंक्शन डर रीशइन्स्टीट्यूट' बिलोइस डेस एजेंटम्स (वियेना 1904 संशोधित संस्करण 1928) आट्टो काहन-फ्रेंउड द्वारा दि इंस्टीट्यूशन्स आफ प्राइवेट ला एंड देयर फंक्शन्स' शीर्षक से भूमिका सहित अंगरेजी में अनूदित (लंदन रुटलेज एंड केगन पाल 1949) पृ० 54 55

23 'बोहनग डर आर्बिटरक्लासे डर कैंर' (सितंबर अक्तूबर 1933)

24 कार्ल रेनर वडिनिगन डर माडर्नेन गसेलशाफ्ट ज्वेइ अभांडलुगन उबर डाइ प्राब्लेम डर नचक्रीगजइट (वियेना वियेनर फोक्सबुखहांडलुंग 1953)

25 स्टनिस्ला ओस्सोवस्की ने 'क्लास स्ट्रक्चर इन दि सोशल कांशसनेस' (लन्दन रूटलेज ऐंड केगन पाल 1963) म पूर्वी यूरोप क समाजवादी समाज म प्राप्त अनुभवो को देखत हुए इस विचार को बारे म विकास किया और अधिक सामान्य तौर पर राल्फ डाहरेनडार्फ ने 'क्लास ऐंड क्लास कनफ्लिक्ट इन इडस्ट्रियल सोसाइटी' (लन्दन रूटलेज ऐंड केगन पाल 1959) न इसका विकास किया

26 'डिमोक्रेटी ऐंड रातेसिस्टेम' (वियेना सोजियालिस्टिक बुचेरेइराइ 1919)

27 एन० बुखारिन का अगरेजी अनुवाद 'हिस्टारिकल मटरियलिज्म ए सिस्टम आफ सोशियालाजी' (न्यूयार्क इटरनेशनल पब्लिशर्स 1925)

28 'एपायरिश सोजियाजी डर विस्सेशाफ्टलिच गहाल्ट डर गशिक्ट्ले अड नेशनलाकोनोमी (वियना, 1931) अगरेजा अनवाद मरी न्यूराथ और रावट एस कोहेन (डारड्रक्ट रेडल 1973) द्वारा सपादित आट्टो न्यूराथ का 'एपायरिसिज्म ऐंड साशियालाजी' पृ० 319-421

29 काल कोर्स 'काल मार्क्स' (लदन चपमन एड हाल 1938) जरमन मूल का सशाधित सस्करण गोट्ज लागकाउ द्वारा सपादित होकर प्रकाशित हुआ है काल मार्क्स (फ्रकफट यूरापइश्चे वर्लाग्सेंस्टाल्ट 1967)

30 (लन्दन स्टीवेंस 1959)

31 इस अध्ययन-क्षेत्र मे पियरे बोर्डियु के हाल क लेखो का महत्वपूर्ण योगदान है परतु आज के पश्चिमी समाज की सस्कृति जिसे सही तौर पर बुर्जुआ कहा जा सकता है के बारे म एक व्यापक प्रश्न भी है इस प्रश्न पर नामन बनबाउम के 'दि क्राइसिस आफ इडस्ट्रिअल सोसाइटी' (न्यूयार्क आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस 1969) म कुछ रोचक विचार व्यक्त किए गए हैं

3 ▫ समाजशास्त्र के विरोध मे मार्क्सवाद

□□

मार्क्सवाद को एक प्रत्यक्ष विज्ञान मानने की धारणा के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई उस पर न केवल बौद्धिक प्रवृत्तियों, वरन राजनीतिक परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ा। जैसा कि स्टुअर्ट ह्यूज ने माना है,[1] प्रत्यक्षवाद के विरुद्ध विद्रोह 1890 के दशक में ही प्रबल रूप ग्रहण कर चुका था और उसका प्रभाव शीघ्र ही मार्क्सवादी विचारधारा तक व्याप्त हो गया। क्रोचे की मार्क्सवाद में अल्पकालिक रुचि थी। परंतु इस अवधि में भी उसने इसे हीगेल के दर्शन से गहन रूप में संबद्ध, ऐतिहासिक व्याख्या की एक पद्धति के रूप में, न कि सामान्य सामाजिक विज्ञान के रूप में, समझा था। सोरेल ने प्रारंभ में 'संशोधनवादी विवाद'[2] के समय बर्नस्टीन का पक्ष लिया और आगे चलकर मार्क्सवाद को क्रांतिकारी समुदायवाद[3] के सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया किंतु उसके दृष्टिकोण में सदा ही एकरूपता थी। उसने बर्नस्टीन की रचनाओं में न केवल वास्तविक जगत के निरीक्षण और उसके वर्णन की प्रशंसा की वरन उसके नए क्रियावादी रूप, विश्व में समाजवादियों को 'सचमुच प्रभावी भूमिका' निबाहने का निमंत्रण देने और इन सबसे भी अधिक समाजवाद में निहित नैतिक तत्व पर बल देने की प्रशंसा की है। क्योंकि सोरेल हमेशा ऐतिहासिक अनिवार्यता के विचार के विरुद्ध था और उसका तर्क था कि समाजवाद मुख्यत एक नैतिक सिद्धांत है जिसने विश्व में 'संपूर्ण मानवीय क्रियाकलापों के मूल्यांकन' अथवा नीत्शे के शब्दों में, 'सभी मूल्यों के मूल्यांतरण' की नई विधि विश्व को दी

पैदा की जिनका अध्ययन फ्रैंकफर्ट इस्टीट्यूट से सबद्ध कुछ विचारको ने 1930 के आसपास शुरू किया था, जिससे मार्क्सवादी सामाजिक सिद्धात के मूल्याकन सबधी अन्य विभेद पैदा हुए।

लुकाच के मार्क्सवादी विचारो मे ऐसे बहुत से प्रभाव परिलक्षित होते है जो उसकी 'इतिहास और वर्गचेतना'[5] नामक पुस्तक म सकलित निबधो मे सूत्रबद्ध किए गए है। बाद म कुछ बातो[6] के खडन के बावजूद उसकी विचारधारा को इससे दिशा मिलती रही। यह दो प्रमुख विचारो पर आधारित था प्रथम यह कि इतिहास के विषय मे सत्य की खोज एतिहासिक प्रक्रिया की तर्कसगत अतर्दृष्टि से की जा सकती है, न कि निरीक्षण और अनुभव पर आधारित समाजशास्त्रीय जाच-पडताल से। समाजशास्त्र और मार्क्सवाद (जो द्वद्ववाद की प्रणाली से विश्लेषित है) म यह विपर्यय लुकाच द्वारा बुखारिन के पाठयग्रथ की आलोचनात्मक समीक्षा के उन प्रसगो म भली भाति प्रकट हुआ है जहा उसने बुखारिन के 'मिथ्या पद्धतिशास्त्र और मार्क्सवाद के बारे म बुखारिन की समझ को 'सामान्य समाजशास्त्र' नाम देते हुए लुकाच आगे कहता है

> उनकी प्राकृतिक-वैज्ञानिक समय के अनिवार्य परिणाम के रूप म समाजशास्त्र को किसी विशुद्ध पद्धति म सीमित नही किया जा सकता। वह अपने स्वय के लक्ष्यो के साथ एक स्वतत्र विज्ञान के रूप म विकसित होता है। द्वद्ववाद इस प्रकार की स्वतत्र सूक्ष्म उपलब्धियो के बिना भी काम चला सकता है। उसका क्षेत्र पूरी एतिहासिक प्रक्रिया का है। इसके पृथक ठोस, अनिवर्तनीय क्षण अपने द्वद्वात्मक सार को ठीक ठीक उनके गुणात्मक भेदो और उनकी वस्तुगत सरचना के निरतर रूपातरण म प्रकट करते हैं। 'समग्रता द्वद्ववाद का क्षेत्र है।[7]

दूसरा मौलिक विचार यह है कि पूजीवाद के युग मे ऐतिहासिक प्रक्रिया के अतर्गत पर्याप्त अथवा सच्ची अतर्दृष्टि केवल सर्वहारा को ही प्राप्त होती है और ऐसा समाज म उसकी स्थिति के कारण होता है। मार्क्सवाद म इस

अतर्दृष्टि को तर्कसगत तथा व्यवस्थित रूप दिया गया है इसलिए उस सवहारा की वगचेतना म तदरूप समझा जा सकता है। किंतु चूकि श्रमजीवियो की वास्तविक चेतना विविध रूप ग्रहण करती है और प्रमुखत क्रांतिकारी नही होती तथा अपवादस्वरूप उदाहरणो को यदि छोड दे तो वह इतिहास के मार्क्सवादी दृष्टिकोण को समावेश नही करती इसलिए लुकाच को वास्तविक मनोवैज्ञानिक चेतना' तथा 'प्रदत्त तकसगत चेतना म, जो मार्क्सवादी सिद्धात स मेल खाती हो भेद करना पडा। किंतु 'प्रदत्त' ज्ञान की यह प्रक्रिया बुद्धिजीवियो और मार्क्सवादी विचारको की है। इसलिए अतत मार्क्सवाद इतिहास की एक विशेष व्याख्या है जिसकी सर्वोपरिता का दावा केवल इस सैद्धातिक तकरता के आधार पर न किया जाए कि उसकी धारणा श्रमजीवी वग के दृष्टिकोण म गहीत हुई है। उस अय व्याख्याओ के विरुद्ध किसी युक्तियुक्त और अनुभवसिद्ध ढग स अपनी सत्यता स्थापित करनी होगी। जसा कि हमन दखा है मार्क्सवाद को लकर बीसवी शताब्दी म पदा हुए विवादो म यह प्रश्न बहुत महत्व का रहा है कि पूजीवादी समाज क अतगत श्रमजीवी वग के मार्क्सवादी सिद्धात तथा श्रमिक वग की राजनीतिक चेतना और सगठना के अनुभवजनित विकास के बीच क्या सबध है। यह एसा प्रश्न ह जिसपर लुकाच न वास्तव म कभी विचार नही किया।[8]

मार्क्सवाद और समाजशास्त्र मे उसके सबध के बारे म लुकाच और ग्रामची के दृष्टिकोण म कई बातें समान थी। बुखारिन पर लिखी गई पाठ्य पुस्तक के भीतर एक आलोचनात्मक निबंध म एक बार फिर सर्वाधिक स्पष्टता से इसे सूत्रबद्ध किया गया है

> यह कहन का क्या अथ होता है कि समाजशास्त्र अभ्यास का दशन है? एसा समाजशास्त्र किस प्रकार की चीज होगा? राजनीति का एक *विज्ञान और इतिहासलेखन? अथवा राजनीति की कला और* एतिहासिक शोध के बाह्य नियमो पर विशुद्धत प्रायोगिक मतियो का विशेष व्यवस्थित रूप म वर्गीकृत व्यवस्थित सकलन ? क्या समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यो अर्थात राजनीति और इतिहास का

तथाकथित विज्ञान—दूसरे शब्दो म अपरिपक्व अवस्था का दशन प्रस्तुत करने का प्रयास नही है ? क्या समाजशास्त्र ने अभ्यास दशा के समान ही कुछ करने का प्रयास नहीं किया है ? समाजशास्त्र ऐतिहासिक और राजनीतिक विज्ञान की एक ऐसी पद्धति के निर्माण का प्रयास है जो पहले से ही प्रत्यक्षवादी विकासवाद द्वारा भली प्रकार व्याख्यायित दाशनिक पद्धति पर आश्रित था और जिसके विरुद्ध समाजशास्त्र ने प्रतिक्रिया की थी, भले ही आशिक रूप मे। अत यह प्रायोगिक प्रणाली से मानव समाज के विकास के नियमो को ग्रहण का ऐसा प्रयास है जिससे यह 'भविष्यवाणी' की जा सके कि शाहबलूत का वक्ष शाहबलूत के बीज से ही विकसित होगा। छिछला विकासवाद समाजशास्त्र की जड मे है और द्वद्वात्मक सिद्धात को समाजशास्त्र परिणाम से गुण तक की यात्रा के आधार पर नही समझ सकता। किंतु यह यात्रा, एक छिछले अथ म समझे जाने वाले, विकास के किसी स्वरूप और एकरूपता के किसी भी नियम को बनने नहीं देता।[9]

किंतु ग्रामची न इस द्वद्ववादी सिद्धात या पद्धति की इस अवधारणा की विस्तृत व्याख्या नही की। उसने घटनाओ के एक विशेष क्रम की अविच्छिन्न जाच पडताल म उसका महत्व नही दिखलाया और न ही आधुनिक समाजशास्त्र द्वारा प्रस्तुत किसी व्याख्या का सारपूण विश्लेषण प्रस्तुत किया जिससे उसकी अनुमान की सीमाए और त्रुटिया स्पष्ट रूप से प्रकाश म आती।[10] उसने केवल इस आशय की सामान्य आलोचना की कि समाजशास्त्र ने कोई सही 'नियम प्रस्तुत नही किए (यह कथन प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र की किसी भी आलोचनात्मक बहस म एक सामान्य बात है)। उसने एक विशेष रूप म मानव और समाज के सबध की समस्या (जिसका समाजशास्त्र के अतगत विवादो म एक आम स्थान हो गया है) की रूपरेखा यह तक देकर पेश की 'आम जनता म दलो के विस्तार और स्वय उनके घनिष्ठ (आर्थिक उत्पादक) जीवन से आगिक रूप म सयुक्त होने के साथ ही साथ वह प्रक्रिया, जिससे जनभावना का मानव बनता है यान्त्रिक और आकस्मिक (अर्थात परिस्थिति अथवा ऐसी अन्य दशाओ से उत्पन्न) होनेवाली नहीं रहती। वह चैतन्य तथा जीवत हो जाती है।'[11]

ग्रामची का मुख्य प्रयोजन दार्शनिक विश्व दृष्टिकोण के रूप म मार्क्सवाद को प्रस्तुत करना था। उसके अनुसार कट्टर मार्क्सवाद की मूल धारणा यह ह कि *'अभ्यास का दर्शन अपने आप म पर्याप्त'* है, *उसम स्वय ही व सब मूलभूत* तत्व निहित है जिनकी विश्व के बारे म पूर्ण समन्वित धारणा पूर्ण दर्शन और *प्राकृतिक विज्ञान* के सिद्धात की रचना के लिए आवश्यकता है। केवल यही नहीं, समाज के एक समग्र व्यावहारिक सगठन का जीवन देने के लिए अर्थात एक समग्र समन्वित सभ्यता बनाने के लिए आवश्यक प्रत्येक वस्तु उसम है।[12] ये विचार अपने आप मार्क्स के विचारो से विशेष रूप म अलग थलग हो जाते है (सभवत इसी आशय से मार्क्स न कहा था कि 'मैं मार्क्सवादी नही हू')। ग्रामची के इन विचारो के विरुद्ध हो सकनेवाली आलोचनाओं पर आगे विस्तार से विचार करने के पहले एक सामान्य विचार प्रकट करना यहा उपयुक्त होगा। ग्रामची के लेखन के समय से अब कही अधिक यह सशय होता है कि क्या मार्क्सवाद वास्तव मे एक नई सभ्यता के लिए *बौद्धिक और सास्कृतिक आदान प्रदान करने के महान उद्देश्य* को पूरा करने म समर्थ है ? हालाकि समाजवादी देशो मे, मार्क्सवाद सत्ता की सैद्धातिक विचारधारा है किंतु वहा भी एसा प्रतीत होता है कि यह कथन नैतिक आदर्श की कल्पना से उत्पन्न उत्साह से नही बल्कि कुछ अनिच्छापूर्वक ही स्वीकार किया जाता है और व्यावहारिक सामाजिक जीवन बहुत कुछ उन्ही (जीवन की भौतिक दशाओ, जीवन का तरीका पदोन्नति अवकाश के कार्यकलापो पर केंद्रित) मूल्यो स जोकि पश्चिमी समाजो मे प्रचलित हैं निर्देशित होते हैं। दूसरी ओर मार्क्सवाद न बहुत से समाजवादी देशो मे अनायास अथवा सायास, राजनीतिक दमन और सास्कृतिक दैन्य की ऐसी दशाए उत्पन्न की हैं जो बहुत से समीक्षको की दृष्टि म पहले से अर्जित सभ्यता के स्तर स भी निम्नतर अध पतन का लक्षित करती ह। इसलिए यह कहना अधिक सगत प्रतीत होता है कि आज तक समग्र दर्शन के रूप मे मार्क्सवाद की अपेक्षा समाजवाद' ने ही अपन विविध रूपो मे अपने अतगत एक नई सभ्यता का उपादान वहन किया है।

यद्यपि ग्रामची एक विश्व दृष्टिकोण के रूप म मार्क्सवाद और एक सामाजिक विज्ञान के रूप म समाजशास्त्र म स्पष्ट अतर रखना चाहता था

किंतु ऐसा नही है कि उसने 'व्यावहारिक पर्यवेक्षणा के एक प्रायोगिक सग्रह' के रूप म समाजशास्त्र के महत्व को नजरअदाज कर दिया था। उदाहरण के तौर पर यह माक्सिज्म के रूप मे नियोजन के लिए एक आधार का काम देगा।[3] कोस्च न भी माक्सवाद का एक दशन के रूप मे प्रस्तुत करने का काम बहुत कुछ लुकाच[14] की भाति ही यह तक देकर प्रारभ किया कि मार्क्सवाद भौतिकवादी दशन के रूप म ठीक उसी प्रकार क्रातिकारी सवहारा की सैद्धातिक अभिव्यक्ति है जैम कि जमन आदशवादी दशन क्रातिकारी बुजुआ[15] की सैद्धातिक अभिव्यक्ति है। मार्क्सवाद म समाजशास्त्र और समाजशास्त्रीय तत्वा का अधिक प्रमुखता दी गई। सन 1937[16] म प्रकाशित निबध मे कोस्च ने मार्क्सवाद और आधुनिक समाजशास्त्रीय शिक्षण के बीच सबध' की जाच करन का कदम उठाया किंतु काम्त का सक्षेप म अस्वीकार करके। काम्ते द्वारा प्रवर्तित और मिल तथा स्पेंसर द्वारा प्रचारित उन्नीसवी और बीसवी शताब्दी के समाजशास्त्र को 'आधुनिक समाजवाद के विरुद्ध प्रतिक्रियावाद' की सज्ञा देन के बाद उन्होंने मुश्किल से ही किसी आधुनिक समाजशास्त्रीय अध्ययन का उल्लेख किया। उन्हाने माक्सवाद के चार बुनियादी सिद्धाता को 'अपने समय के सच्चे सामाजिक ज्ञान' और श्रमिक वग के सघष के व्यावहारिक साधन-सूत्रा का रूप दिया। ये चार बुनियादी सिद्धात थे (1) ऐतिहासिक विशेषीकरण का सिद्धात—'माक्स सभी चीजो को, एक निश्चित ऐतिहासिक युग के सदभ म, सामाजिक कहते हैं', (2) ठास क्रियान्वयन का सिद्धात बुजुआ परिवार, सपत्ति सबध आदि की मार्क्सवादी आलोचना के प्रायोगिक आधार के साथ इसका सबध प्रतीत होता है, (3) क्रातिकारी परिवतन का सिद्धात—विकासवादी सिद्धाता के विरोध मे, और (4) क्रातिकारी अभ्यास का सिद्धात—विश्लेषण और आलोचना के माध्यम मे सामाजिक विकास की भावी मुख्य प्रवृत्तियो को खोजना और ऐतिहासिक प्रक्रिया म चेतन तथा तत्सगत रूप से सलग्न होना।

अपनी मुख्य रचना 'काल मार्क्स' म कोस्च ने इन सिद्धाता की विस्तृत व्याख्या की और अधिक स्पष्ट ढग से उस नई दिशा को इगित किया जिसकी ओर वे पद्रह वष पूव की दाशनिक चिताओ को छोडकर मुडे थे

> मार्क्सवाद के परवर्ती विकास म मार्क्स ने जिस महत्वपूर्ण भौतिकवादी सिद्धात का निष्कप प्रायोगिक पद्धति से निकाला था उमकी विस्तृत व्याख्या करके एक सामान्य सामाजिक दर्शन का रूप दिया गया। भौतिकवादी सिद्धात के प्रबल प्रायोगिक और आलोचनात्मक भाव की विकृति से एक कदम आगे बढकर यह विचार उत्पन्न हुआ कि मार्क्स के ऐतिहासिक और आर्थिक विज्ञान का आधार न केवल एक व्यापक सामाजिक दर्शन वरन एक व्यापक भौतिकवादी दर्शन होना चाहिए जिसके अन्तर्गत प्रकृति और समाज दोनो का समावेश हो अर्थात उसम विश्व की सामान्य दार्शनिक व्याख्या हो।[17]

और अतिम अध्याय म उन्होने अपने विचारो का उपसहार इस प्रकार किया

> ऐतिहासिक भौतिकवाद की मुख्य प्रवत्ति अब दार्शनिक नही वरन प्रायोगिक वैज्ञानिक पद्धति है। इससे एक विशेष समस्या के वास्तविक समाधान की शुरुआत होती है कि प्राकृतिक विज्ञान की पद्धतियो को सामाजिक विज्ञान पर सभी दृष्टियो से लागू करने से प्रकृतिवादी भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद की समस्या हल होती दिखी।[18]

इस पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण सार तत्व ह कोर्स्च द्वारा सभी सामाजिक काय कलापो का अर्थव्यवस्था के सदभ म विश्लेषण और ऐतिहासिक लक्षण के रूप मे अर्थव्यवस्था की धारणा पर बल देना और सामाजिक विज्ञान का इस मार्क्स की महान देन मानना। अपनी पुस्तक के परवर्ती संस्करण म रखे जानेवाले अश म कोर्स्च ने यह भी तक दिया कि समाजशास्त्र और मार्क्सवादी सामाजिक सिद्धात मे मुख्य भेद इस तथ्य म था कि समाजशास्त्र सामाजिक सबधो के अनुसधान को स्वतत्र क्षेत्र की भाति मानता है जबकि मार्क्सवाद उसे अर्थव्यवस्था के पूव विश्लेषण के दृष्टिकोण स देखता है 'इस सीमा तक मार्क्स द्वारा प्रवर्तित समाज का भौतिकवादी विज्ञान समाजशास्त्र नही वरन राजनीतिक अर्थव्यवस्था है।'[19] समाजशास्त्र की सभी परवर्ती मार्क्सवादी आलोचनाओ मे यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न बना रहा। फिर भी, यह कहना जरूरी है कि वास्तव म समाज के मार्क्सवादी सिद्धात की रूपरेखा बडे अस्पष्ट तरीके से प्रस्तुत की और उन्होने

ऐसे प्रायोगिक प्रश्नों की ओर कम ध्यान दिया, जैसे कि पूंजीवाद का बीसवीं शताब्दी में वास्तविक विकास और उससे उठने वाली समस्याओं का प्रश्न या वे प्रश्न जिन्हें बर्नस्टीन तथा आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों ने आर्थिक संरचना या वर्गप्रणाली में परिवर्तन के संबंध में उठाया था। निश्चय ही कोर्श ने आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों और बर्नस्टीन के विचारों या हाल के अन्य आर्थिक अथवा समाजशास्त्रीय अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं किया। इस व्याख्या के अंतर्गत स्पष्टतः मार्क्सवाद उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य का एक सिद्धांत है। जिसे मुख्यतः ऐडम स्मिथ और रिकार्डो के अर्थशास्त्र के विरोध में परिभाषित किया गया।

बाद में कोर्श ने मार्क्सवाद की व्यवस्थित आलोचना किए बगैर ही उसका बिल्कुल परित्याग कर दिया।[20] वे समाज के बारे में एक दार्शनिक दृष्टिकोण ही पुनः अपनाते से प्रतीत हुए। जिसमें व्यक्तिगत और आत्मगत विशेषता ही अधिक थी। सन 1950 में यूरोप की एक व्याख्यानमाला के लिए 'आज के मार्क्सवाद पर दस विचार'[21] शीर्षक से हस्तलेख के रूप में वितरित किए गए निबंध में उन्होंने दावा किया कि 'अब यह प्रश्न उठाने का कोई अर्थ नहीं होता कि मार्क्स और एंगेल्स के सिद्धांत आज भी किस सीमा तक सैद्धांतिक रूप से समीचीन, व्यवस्थित तथा उपयोगी हैं। मार्क्सवादी सिद्धांत को एक संपूर्ण दर्शन और श्रमिक वर्ग की सामाजिक क्रांति के सिद्धांत के रूप में इसके मूल कार्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयास अब प्रतिक्रियावादी कल्पना के विषय हैं।' परंतु इससे आगे बढ़कर तब उन्होंने ऐसे सूत्र बनाए जिन्हें वह 'क्रांतिकारी सिद्धांत और व्यवहार की पुनरचना' की दिशा में पहला कदम मानते थे। 'नए क्रांतिकारी सिद्धांत और राजनीतिक क्रियाकलाप की यह आकांक्षा उस विचार योजना में अब नहीं पाई जाती जो (जैसा मार्क्सवाद ने किया) समाज का एक नियमित सिद्धांत या व्यापक दार्शनिक विश्व दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वह विचार योजना मानव इतिहास के विशुद्ध आत्मगत अध्ययन पर आधारित केवल व्यक्तिगत (और हीगल के विचार में मनमाने) नैतिक या दार्शनिक निर्णय से उत्पन्न प्रतीत होता है। इस दृष्टिकोण से कोर्श के विचारों का बाद में जो विकास हुआ, वह फ्रैंकफर्ट इंस्टीट्यूट से संबद्ध कुछ विचारकों के ठीक उसी प्रकार समांतर प्रतीत होता

है जैसा कि इस विचार यात्रा के प्रारभ म था। वास्तव म कोर्श ने सन 1922 म मनाए गए उस प्रथम मार्क्सवादी काय सप्ताह म भाग लिया था जिससे फ्रकफर्ट इस्टीटयूट विकसित हुआ। इस पहली बैठक म हुई बहस बहुत कुछ उनकी प्रकाशित होने वाली 'मार्क्सिज्म ऐंड फिलासफी'[22] से सबधित थी। इस पुस्तक ने और लुकाच की पुस्तक 'हिस्ट्री ऐंड क्लास काशसनस' न मार्क्सवादी विचारो के अतगत मार्क्सवाद के एक विशेष दार्शनिक रूप के विकास की प्रेरणा प्रदान की। यह प्रेरणा एक ओर 'द्वद्वात्मक भौतिकवाद' या 'मार्क्सवाद लेनिनवाद' के आधिकारिक पराभौतिक सिद्धात से, तो दूसरी ओर प्रत्यक्षवादी सामाजिक विज्ञान स भिन्न थी। (यद्यपि प्रारभिक वर्षा म इस्टीटयूट के कई सदस्या यथा ग्रेनबग विट्टफोगल ग्रासमन न अधिक प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण बनाए रखा) जैसा कि लिचथेम न कहा था ' यहा हम जो कुछ मिलता है वह मार्क्सवाद के प्रामाणिक सार का पुन आविष्कार नही है बल्कि उस दार्शनिक परपरा का पुनरावतन है जिसे सही तौर पर हीगलवादी कहा जा सकता है।'[23]

फ्रकफर्ट इस्टीटयूट के सर्वाधिक प्रभावशाली विचारक—हार्खीमर अडोर्नो और मारक्यूज आदि—1840 के दशक म युवा हीगलवादियो के विचारो की ओर लौट आए। सबसे अधिक उन्होने व्यावहारिक क्रियाकलापो म आत्मगत तत्व के महत्व पर बल दिया, सास्कृतिक बाह्य ढाचे को अधिक स्वायत्तता और महत्व दिया और इस प्रकार 'आलोचनात्मक आलोचना' को विस्तार देने का अधिक प्रयास किया जिसकी मार्क्स ने निंदा की थी। अवश्य ही, 1840 और 1930 के दशको की स्थितियो म पर्याप्त अतर था। अनेक अन्य बौद्धिक विचारधाराए प्रकट हुई जिनके बहुत से विचार हीगेल के दशन स प्राप्त किए गए थे और जिनम प्रत्यक्षवाद की आलोचना की जाती रही। इस बीच महान आर्थिक और राजनीतिक परिवतन हुए, विशेषकर सोवियत सघ म सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली का विकास और फासीवाद का उदय—जिन्होने गभीर विचार के लिए नई नई समस्याए प्रस्तुत की। किंतु एक विशेष बात है जो फ्रकफर्ट के विचारको को युवा हीगेलवादियो से सबद्ध कर देती है और वह है श्रमिक वग का अभाव। युवा हीगेलवादियो से आगे बढकर मार्क्स न जीवन म महत्वपूर्ण शक्ति

के रूप मे सर्वहारा के आविष्कार द्वारा अभ्यास दर्शन की स्थापना की, जो व्यावहारिक-आलोचनात्मक गतिविधि की एक अवधारणा थी। उसके अनुसार सर्वहारा मे क्रांतिकारी कार्य और सैद्धांतिक आलोचना या तो एक हो गए थे या होने वाले थे। फ्रैंकफर्ट के विचारकों का एक ऐसी स्थिति से सामना हुआ जिसमें, उनके विचार से, श्रमिक वर्ग क्रांतिकारी नही रह गया था। इसलिए वे क्रांतिकारी क्रियाकलाप के मार्क्सपूर्व की धारणा की ओर लौट गए। जिसके अनुसार इसकी उत्पत्ति एक क्रांतिकारी 'आलोचनात्मक चेतना' से होती थी। इस विचार का पूर्ण प्रभाव इधर के वर्षों म मारक्यूज के परवर्ती लेखो मे और युद्धोत्तरकालीन फ्रैंकफर्ट विचारको की युवा पीढी की रचनाओ म स्पष्ट हुआ जिसपर मैं शीघ्र ही विचार करूंगा।

फ्रैंकफर्ट के विचारको ने प्रत्यक्षवाद की आलोचना के माध्यम म समाजशास्त्र की जो आलोचना की वह मुख्यत अपरोक्ष थी। यद्यपि मारक्यूज ने 'रीजन ऐंड रिवोल्यूशन' म काम्ते के समाजशास्त्र को कुछ ऐसे शब्दो म अस्वीकार किया जो अधिक व्यापक क्षेत्र पर लागू होते थे

> सामाजिक अध्ययन को ऐसे सामाजिक नियमो के आविष्कार का विज्ञान होना चाहिए जिनकी वैधता भौतिक नियमो के समान हो। सामाजिक व्यवहार, विशेषकर समाज व्यवस्था को बदलने, का प्रश्न यहा निर्ममता से खत्म कर दिया गया। समाज को ऐसे तर्कसगत नियमो से शासित समझा गया जो प्राकृतिक आवश्यकता से चालित होते हैं। अध्यात्म विज्ञान का प्रत्यक्षवादी खण्डन भी सामाजिक सगठनों का अपनी तर्कसगत इच्छा के अनुसार पुनर्गठित करने या बदलने के मनुष्य के दावे के खडन से जुडा हुआ था।[21]

यद्यपि प्रत्यक्षवाद की दार्शनिक आलोचना सदा प्रबल रही, किंतु इस्टीट्यूट का सपूर्ण कार्य यही नही था। उसने बहुत से ऐसे नए विषयो की खोजबीन की जो प्रत्यक्षत मार्क्सवादी सामाजिक सिद्धात के विकास के लिए महत्वपूर्ण थे। मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण को मार्क्सवाद की सीमा म लाना और फासीवाद के नए तथा अक्रांतिकारी धारणा के विश्लेषण म इन विधाओ का

उपयोग करने के बारे में यह बात विशेष रूप से तथ्यपूर्ण है।

इन आधारों पर अध्ययन करने की प्रेरणा मुख्यतः एरिक फ्राम से मिली। उनका 1930 आरंभ से 1939 तक की अवधि में इंस्टीट्यूट से संबंध था। इसके बाद वे उससे अलग हो गए क्योंकि इंस्टीट्यूट में वामपंथी रुझान की कमी दीख पड़ने लगी थी। फ्राम ने इंस्टीट्यूट की पत्रिका 'जीतशरिफ्ट फर सोजियलफोर्सचुंग' (1932) के पहले अंक में 'विश्लेषणात्मक सामाजिक मनोविज्ञान की पद्धति और कार्य' विषय पर एक निबंध प्रकाशित किया। उन्होंने इस निबंध में यह तर्क दिया कि मनोविश्लेषण (अपने संशोधित रूप में भी) मानवीय प्रकृति की मार्क्सवादी धारणा को समृद्ध बनाने एवं समाज के आर्थिक आधार और सैद्धांतिक बाह्य ढांचे के संबंध को अधिक स्पष्ट करने में सहायता कर सकता है। आधुनिक समाज में व्यक्तित्व के विकास अधिनायकवाद और नाजीवाद मनोविज्ञान पर बाद में प्रकाशित अपने एक अध्ययन की एक अनुक्रमणी में उन्होंने सामाजिक चरित्र का अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया और अपने विचारों को संक्षेप में इस प्रकार रखा

> आर्थिक शक्तियां प्रभाव डालती हैं किंतु उन्हें मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं नहीं वरन वस्तुगत दशाओं के रूप में समझना चाहिए, मनोवैज्ञानिक शक्तियां प्रभाव डालती हैं किंतु उन्हें भी ऐतिहासिक दशाओं से प्रभावित समझा जाना चाहिए सिद्धांत प्रभाव डालते हैं किंतु उनका मूल किसी सामाजिक समुदाय के सदस्यों की पूर्ण चारित्रिक संरचना में देखा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में सामाजिक दशाएं चरित्र के माध्यम से सैद्धांतिक लक्षणों को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर चरित्र सामाजिक दशाओं की निष्क्रिय स्वीकृति का परिणाम नहीं है। बल्कि उन तत्वों के आधार पर सक्रिय स्वीकृति का परिणाम है जो या तो मानव प्रकृति में जैविक रूप से विद्यमान होते हैं या ऐतिहासिक विकास के प्रतिफलन के रूप में उपस्थित होते हैं।"[6]

फ्राम के लेखों में इंस्टीट्यूट के अनेक अन्य सदस्यों की तुलना में प्रत्यक्षवादी और अनुभववादी प्रवृत्तियां अधिक थीं विशेषकर इस बात की स्वीकृति में

कि यद्यपि समाज मे आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और वैचारिक शक्तिया अ यायाश्रित हैं, किंतु उनम एक सीमा तक स्वतत्रता भी है। उ होन कहा कि यह विशेषकर आर्थिक विकास के सबध म सत्य है और वस्तुगत कारणा जसे प्राकृतिक उत्पादक शक्तिया प्रविधि भौगोलिक परिस्थितिया पर निभर हान से अपन ही नियमा से यह घटित होता है।[27] किंतु इस्टीटयूट की सामा य चिताए अधिकाधिक दार्शनिक हाती गइ विशेषकर 1949 म जमनी म वापस आ जाने के बाद स। आलाचनात्मक सिद्धात के व्याख्याताआ न अय जन मस्कृति की आर ध्यान दिया, जिसमे उ होन प्रबुद्ध तकवाद के नकारात्मक पक्ष और वैज्ञानिक तथा प्राविधिक विचार की मानसिक बहुलता की आलाचना की। काफी हद तक उनके विचार प्रत्यक्षवाद की सामा य आलोचना के साथ एकाकार हो गए और क्रमश मार्क्सवादी सिद्धात के साथ उनका काई विशिष्ट सबध न रहा। प्र यक्षवाद ने कुछ नई विषय वस्तुआ का आरभ करत हुए भी 19वी शती क अतिम वर्षो के पद्धतिशास्त्रीय विवाद को ही फिर से उठाया था।[28] विचारा का यह आदोलन मारक्यूज तथा कुछ उन लेखका—मुख्यत हबरमस और वल्मर—के लखन म दीख पडता है जि ह सातवें दशक क अत म भग होने वाले फ्रकफट स्कूल के विचारका, की अतिम पीढी माना जा मकता है।

वन डाइमेशनल मैन[29] म मारक्यूज ने यह प्रतिपादित किया है कि उन्नत औद्योगिक देशा म विज्ञान और प्रविधि न आधिपत्य के एक ऐस रूप और सामाजिक नियत्रण की एक ऐसी पद्धति की स्थापना की है जिसन सामाजिक और सास्कृतिक रूप से श्रमिक वग को समाज मे इस तरह एकाकार कर दिया है कि तीव्र ऐतिहासिक परिवतन से प्राप्त एक नए समाज की स्थापना करने म समथ किसी वास्तविक शक्ति के उदभव की सभावना समाप्त हो गई है

> समाज के आलोचनात्मक सिद्धात का (अथात माक्सवाद को) अपन प्रारभिक काल म स्थापित समाज की ऐसी वास्तविक शक्तिया से सावका पडा जो एक समय प्रगति मे बाधा बन गई मौजूदा सस्थाआ का समाप्त कर अधिक तकसगत तथा स्वतत्र सस्थाआ की स्थापना की दिशा मे अग्रसर हुई थी (अथवा परिचालित की गई

थी)। इन प्रायोगिक आधारों पर ही उक्त सिद्धांत की रूपरेखा स्थिर की गई थी। ऐसी शक्तियों के प्रदर्शन के बिना समाज की व्याख्या फिर भी वैध और तर्कसंगत होती किंतु वह अपनी तर्कसंगति का ऐतिहासिक क्रियाकलापों का रूप देने में समर्थ नहीं होती।

उनका निष्कर्ष यह है कि समाज के आलोचनात्मक सिद्धांत के पास कोई ऐसी धारणा नहीं है जो वर्तमान और भविष्य के बीच की खाई को पाट सके। बिना किसी संभावना और सफलता के वह नकारात्मक होकर रह जाती है।[30] उससे केवल इतिहास की आत्मगत मनमानी व्याख्या के प्रति 'आलोचनात्मक सिद्धांतवादी' की दृढ़ प्रतिबद्धता प्रकट होती है। जिसका संबंध न तो किसी ऐसे सामाजिक आंदोलन से और न किसी ऐसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध ज्ञानभंडार अथवा वैधता की कसौटी से होता है जिससे उसके दावों का मूल्यांकन किया जा सके। वह ऐसी किसी बात का अंतिम परित्याग भी है जिसे मार्क्सवादी सिद्धांत कहा जा सकता है, क्योंकि यह मार्क्सवादी विचारधारा के दो अभिन्न तत्वों को अस्वीकृत कर देता है। और ये तत्व हैं अर्थव्यवस्था के विकास की मूलभूत प्रगतिशील धारणा और एक क्रांतिकारी शक्ति अद्वितीय ऐतिहासिक प्रतिनिधि और एक नई सभ्यता के धारक रूप में श्रमिक वर्ग की धारणा। इसी प्रकार हेबरमस और वेलमर अपने को मार्क्सवाद से यह कहकर अलग कर लेते हैं कि सामाजिक वर्गों का महत्व वर्तमान पूंजीवादी समाजों[31] में बहुत कम अथवा नगण्य हो गया है। वे आर्थिक आधार को महत्वपूर्ण परिवर्तन का क्षेत्र मानने की अपेक्षा सांस्कृतिक ढांचे का मानते हैं। उन्होंने सबसे अधिक और संभवतः सही तौर पर उनके मत से मार्क्स के सिद्धांत में प्राप्त प्रत्यक्षवादी तत्वों की आलोचना की जिनके कारण मानवसमाज के अध्ययन की पद्धति के रूप में उनके अनुसार मार्क्स अप्रभावी सिद्ध होता है।

दार्शनिक मार्क्सवाद के विकास में दो समाजशास्त्र विरोधी सामान्य लक्षण दिखाई देते हैं—पहला है विचारों के मार्क्सपूर्व ढांचे की ओर वापसी, इन अर्थों में कि ये विचार मार्क्स की अपेक्षा हीगेल के अधिक निकट हैं—जैसा कि फ्रैंकफर्ट स्कूल की परवर्ती रचनाओं में सर्वाधिक प्रकट होता है। जैसा कि लिचथेम ने कहा 'यदि हम यह पाते हैं

कि समकालीन चिंतन एक पूर्वकालीन ऐतिहासिक स्थिति की समस्याओं को पुन प्रस्तुत करता है—अर्थात उन समस्याओं का जिनसे मार्क्सवाद उत्पन्न हुआ—तो हम यह मानने का अधिकार है कि ऐसा वह इसलिए करता है कि सिद्धांत का व्यवहार स संबंध एक बार पुन उसी प्रकार की समस्या बन गया है जैसा कि 1840 के आस पास के वर्षों म हीगेल के अनुयायियों के लिए था।[32] मैं सिद्धांत और व्यवहार के समूचे प्रश्न पर अगले अध्याय म विचार करूंगा किंतु इस समय कुछ प्रश्नों को, जो पिछली बहस स उत्पन्न हुए हैं, एक साथ रखना उपयोगी होगा। हीगेल के रंग म रंग मार्क्सवाद का विकास मुख्यत बीसवीं शताब्दी म प्रकट हुई राजनीतिक स्थितियों म क्रांतिकारी कार्यकलापों की सैद्धांतिक आधारों के अनिश्चय की प्रतिक्रियास्वरूप हुआ था, जैसे—प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारंभ के साथ जमन समाजवादी लोकतंत्र और द्वितीय इंटरनेशनल का पतन (विश्वयुद्ध का ही उनके सुधारवाद का—और यह सुधारवाद उनके मार्क्सवाद की वैज्ञानिक विकासवादी टीका का—परिणाम समझा जा सकता है), इसके ठीक विपरीत एक क्रांतिकारी 'एवंत गार्ड' की कारवाई से रूसी क्रांति की सफलता, पश्चिमी यूरोप म श्रमिक वग की क्रांतिकारी प्रतिबद्धता का ह्रास और दूसरी ओर सक्रिय दक्षिणपंथी आंदोलनों का प्रसार, सोवियत रूस मे स्तालिनवादी शासन की (जिसने एक वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप मे मार्क्सवाद की दुहाई देकर अपना औचित्य बताया) सुदृढता के परिणामस्वरूप उत्पन्न वचनाएं और इसके बाद पूर्वी यूरोप के अन्य समाजों मे उसका प्रसार। और अधिक सामान्य रूप स हम यह सकते हैं कि सामाजिक विकास के कमोबेश सकल्पात्मक सिद्धांत के रूप म मार्क्सवाद का प्रत्यक्षत उस समय अधिक प्रभाव था जब वह समाजवाद की ओर ले जाता हुआ प्रतीत होता था, और यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता था कि 'इतिहास हमारे पक्ष मे है'। किंतु जब इतिहास की घटनावली न उसका एक कम सुखद पक्ष, फासीवादी या स्तालिनवादी अधिनायक शासनों के रूप मे सामने रखा, या 1945 के परवर्ती तथा अधिक स्थायी प्रतीत होनेवाले असमानायक कल्याणकारी पूंजीवाद के रूप मे प्रदर्शित किया तो जो विचारक पूंजीवाद मे समाजवाद मे रूपांतरण की क्रांतिकारी आशा बनाए रखना चाहते थे वे मार्क्सवाद के एक भिन्न अथ की ओर झुक गए ऐसे अथ की ओर जिसकी व्यावहारिक सक्रियता मे आत्मगत तत्वों, क्रांतिकारी चेतना और प्रतिबद्धता पर

य न दिया गया था। निश्चय ही यह अथ अब भी विभिन्न रूप ग्रहण कर सकता था। लुकाच ग्रामची और कोर्स्च ने सन 1920 के बाद के प्रारंभिक वर्षों म क्रातिकारी चेतना का कम्युनिस्ट पार्टी मे साकार होते देखा था जबकि फ्रैंकफर्ट के विचारको न उसे अपेक्षाकृत मार्क्सवादी बुद्धिजीवियो का लक्षण माना। किंतु इन दोनो ही दशाओ म और और दूसरी दशाओ म जो यहा-वहा तनिक भेद रखती थी यही एक दावा किया गया कि व इतिहास के विषय म ऐसी विशेष अतर्दृष्टि रखते ह जो ऐतिहासिक घटनाओ की उनकी सारी अक्रातिकारी उच्छ गलताओ के साथ अनुभववादी समाजशास्त्रीय विवरण और कारणो की व्याख्या से विरुद्ध हो सकती है।

दार्शनिक मार्क्सवाद के विकास म दूसरी बहुत विचित्र बात यह है कि यद्यपि उसका प्रारभ समाजशास्त्र की मार्क्सवादी आलोचना स हुआ किंतु वह मार्क्स के सिद्धात के मौलिक (और सर्वाधिक प्रभावशाली) विचारो मे अधिकाधिक दूर और साथ ही उन धारणाओ और पद्धतियो के अधिक निकट होता गया जो समाजशास्त्र के कुछ आधुनिक रूपो म पाए जात ह। और व्यापक अथ म ले तो गोचरशास्त्रीय (phenomenological) मार्क्सवाद का गोचरशास्त्रीय समाजशास्त्र के साथ मेल हुआ किंतु इस प्रक्रिया म कुछ विशिष्टता खो गई। विचार के क्षेत्र म आलोचना के मुख्य लक्ष्य अब समाजशास्त्र म प्रत्यक्षवाद न कि समाज के बुर्जुआ सिद्धात और व्यावहारिक जीवन म तकनीकी समाज, न कि पूजीवाद ह। निश्चय ही आलोचना के य लक्ष्य एक दूसरे से सबद्ध है जस कि मार्क्सवादी सिद्धात म पूजीवाद और बुर्जुआ विचार थे, क्योकि प्रत्यक्षवाद (अथवा 'यात्रिक तक') तकनीकी समाज मे उत्पन्न प्रमुख विचार समझा जाता है और उस समाज की सस्थाओ का बल दने तथा दढ करनेवाले सिद्धात के रूप म काम करता है। जो चीज बिल्कुल ही स्पष्ट नही है, जसा कि युवा हीगेलवादियो के बारे म भी स्पष्ट नहा था कितने सूक्ष्म रूप म परवर्ती मार्क्सवादी 'आलोचनात्मक सिद्धात' का राजनीतिक दृष्टि से वामपथी या क्रातिकारी समझा जा सकता है। 1960 के वर्षों म वामपथी छात्र आदोलनो का अधिकाशत निष्फल और निश्चय ही सक्षिप्त सामना हुआ किंतु इनम मुख्य प्रयास विश्व को समझने का था, बदलने का नही। एक क्रियावादी सिद्धात के रूप म जिसका प्रारभ हुआ था वह मौजूदा वक्त के लिए एक निराशावादी चिंतन म समाप्त होता हुआ प्रतीत हो रहा है।

संदर्भ

1 एच० स्टुअर्ट हृम्स कांशसनेस ऐंड सोसाइटी (लदन मकगिबन ऐंड की, 1959) द्वितीय अध्याय
2. जाज सोरल 'लस पोलेमिक्स पाअर इटरप्रिटेशन डु मार्क्सिज्म', रिव्यू इटरनेशनल डे सोशियालाजी (पेरिस 1900)
3 देखिए विशपकर रिफ्लेक्शस सुर ल वायलस (पेरिस मार्सल रिविरे 1908)
4 सेवेरिया मार्लीनो, 'फार्म्स एट एसेंस डु सोशियालिज्म' (पेरिस 1898) की भूमिका
5 पहली बार गश्चिच्टे ऐंड क्लासेबेवुस्टसेइन' बर्लिन 1923 म प्रकाशित, अगरेजी अनुवाद (लदन मर्लिन प्रेस 1971)
6 अपने जीवन के अतिम दिनो मे ही लुकाच न अधिक आधारभूत रूप से मार्क्सीय सिद्धात की अपनी व्याख्या के बारे म शका प्रकट की और हिस्टरी ऐंड क्लास काशसनेस (1967) प्रथम सस्करण की भूमिका म आत्मालोचन के ढग से इन निबधो मे व्यक्त क्रातिकारी अतिकाल्पनिक मसियानिज्म (messianism) का उल्लेख किया और मार्क्सवाद के आवश्यक तत्व तथा पद्धतिशास्त्रीय वधता, जसी कि उसने व्याख्या की है, के बारे में अपनी अनिश्चयता स्पष्ट की
7 1925 म प्रकाशित अगरेजी अनुवाद टेक्नालाजी एड सोशल रिलेशस शीर्षक से न्यू लेफ्ट रिव्यू 39 (1966)
8 टाम बाटमोर की पुनर्मुद्रित पुस्तक 'सोशियालाजी एज सोशल क्रिटिसिज्म लन्दन एलेन ऐंड अनविन 1974 सप्तम अध्याय में सकलित निबध 'क्लास स्ट्रक्चर ऐंड सोशल काशसनस मे और पूर्ण रूप से लुकाच की वगचतना सबधी विचारो से पदा हुई समस्याओं पर विचार किया गया है
9 क्विटिन हाअर और ज्याफ्रे नोवेल स्मिथ द्वारा सपादित 'सेलेक्शस फ्राम दि प्रिजन नोटबुक्स आफ एटोनियो ग्रामची (लदन लारेंस ऐंड विशर्ट 1971, पृ० 419-72 विशेषकर पृ० 426 पर क्रिटिकल नोटस आन ऐन अटेंप्ट एट पापुलर सोशियोलाजी'
10 इस टिप्पणी का महत्व बहुत व्यापक है समाजशास्त्र की हीगलवादी मार्क्सवादी आलोचना का यह एक विचित्र और सचमुच पूहड पक्ष है कि इसमें आधुनिक समाजशास्त्र पर लिखी गई सभी कृतियों को नजरअन्दाज करते हुए काम्ते के 'प्रत्यक्ष दर्शन'

(समाजशास्त्र के विकास म जिसका कोई खास योगदान नही था) और मार्क्सीय सिद्धात के अतर पर ध्यान दिया गया है हम देखेंगे कि कोर्स्च और मुख्यत मारक्युज के लखन में यही स्थिति है

11 सेलेक्शस फाम दि प्रिजन नोटबुक्स प० 429

12 वही प० 462

13 वही प० 428 9 सर्वेक्षण के आक्डा के सगह के रूप मे ही समाजशास्त्र का समाजवादी देशा म विकास हुआ है

14 काल कोर्स्च मार्क्सिज्म एड फिलासफी लेप्जिग 1923 अगरेजी अनुवाद लदन न्यू लेफ्ट बुक्स 1970 एक सक्षिप्त पश्चाद लेख मे कार्स्च ने लुकाच के हिस्टरी ऐंड क्लास काशसनेस हवाला दिया है जो उस समय प्रकाशित हुआ जब उसकी पुस्तक प्रस म जा रही थी और इसके मूल कथ्य के साथ अपनी आधारभूत सहमति व्यक्त की है परतु बाद म पुस्तक के द्वितीय सस्करण (1930) भूमिका म उसने अपने और लुकाच के बीच अतभदो को स्पष्ट किया हालाकि उसने यह विचार नही किया कि उनके राजनीतिक मतभद सद्धातिक असहमतियो से किस हद तक सबद्ध थे

15 'मार्क्सिज्म ऐंड फिलासफी प० 42

16 लीडिंग प्रिंसिपल्स आफ मार्क्सिज्म ए रिस्टेटमट मार्क्सिस्ट क्वाटली 1 3 (अक्टूबर दिसबर 1937) काल कोर्स्च की थी एस्सज आन मार्क्सिज्म (लदन प्लुटो प्रस 1971) मे पुन मुद्रित

17 'काल मार्क्स सशोधित जरमन सस्करण प० 145

18 वही पृ० 203

19 वही पृ 277

20 जीवन के अतिम वर्षों म कोर्स्च मार्क्सवादी सिद्धात पर अपने विचारा का विस्तारित लेखा जोखा कर रहे थे परतु बीमारी के कारण वे यह काय नही कर पाए (मैं इस सूचना के लिए श्रीमती हेडा कोर्स्च का आभारी हू)

21 इसके बाद ही फ्रेंच भाषा के आर्गुमेंटस 16 (1959) में और जरमन भाषा के अल्टरनेटिव, 41 (1965) म प्रकाशित

22 जे, दि डायलेक्टिकल इमजिनेशन प० 5 प्रथम कुछ वर्षों के बाद कोर्स्च का इस्टीटयूट से बहुत थोडा या बिलकुल ही सबध नही था, क्योकि वे अन्य सदस्यो की अपेक्षा राजनीतिक गतिविधियो से अधिक सलग्न थे क्यो कि अशत जसा कि हमने देखा है कि वे दाशनिक मार्क्सवाद से हटकर 1930 के लगभग वज्ञानिक

धारणा का ओर अग्रसर हुए थ

23 जाज लिचथेम 'मार्क्स टु हीगेल' (लदन आर्बेक ऍंड चवस 1971) पृ० 2 इसके प्रथम निबंध म उन स्थितिया का सुदर वणन है जिन्होंने 1930 के दशक म और पुन 1945 म जब हीगलपथी दशन और लक्षणवाद के प्रभाव को अस्तित्ववाद मे नया जीवनप्राप्त हुआ हागलपथी मार्क्सवाद के विकास को प्रोत्साहित किया

24 एच० मारक्यूज 'रीजन ऍंड रिवोल्यूशन हागल ऍंड दि राइज आफ सोशल थियरी (न्यूयाक आक्सफोड यूनिवर्सिटी प्रेस 1941) पृ० 343-4

25 इरिक फ्राम दि क्राइसिस आफ साइको एनालिसिस अग्रेजी अनुवाद (न्यूयाक होल्ट राइनहाट ऍंड विस्टन 1970)

26 दि फीयर आफ फ्रीडम (लन्दन रूटलेज एड केगन पाल 1942) पृ० 252-53

27 वही पृ० 253

28 उदाहरण के लिए दखिए पाटर विन्च का दि आइडिया आफ सोशल साइस ऍंड इटस रिलेशन टु फिलासफी (लन्दन रूटलज ऍंड केगन पाल 1958)

29 (बास्टन बीकन प्रस 1964)

30 'वन डाइमशनल मन पृ० 254 5

31 वेल्लमर 'क्रिटिकल थियरी आफ सोसाइटी पृ० 138 निष्कष निकाला गया है कि मार्क्स की वग सबधी धारणा ने विश्लेषण के एक औजार के रूप म उपयोगिता खो दी है

32 जी० लिचथेम फ्राम मार्क्स टु हीगेल (लदन आर्बेक ऍंड चवस 1971) पृ० 14

4 □ सिद्धात और व्यवहार

□ □

मार्क्सवादी विचारधारा म सिद्धात और व्यवहार को मिलाकर एक करने के विचार को मुख्य स्थान दिया गया है। 1840 के दशक म हीगेलपथियों की बहसा तथा विशेषकर 1838 म प्रकाशित आगस्ट सीस्जकोव्स्की की पुस्तक 'प्रोलेगोमेना जुर हिस्टोरियोस्की'[1] मे इस विचारधारा की जडें पाई जाती हैं। सीस्जकोव्स्की ने तक दिया है कि चूकि लोग हीगेल-दशन के माध्यम से पूण ज्ञान तक पहुच चुके हैं अत उनके विकास का अगला चरण केवल यह हो सकता है कि इस ज्ञान का उपयोग विश्व का रूपातरण करने के लिए किया जाए

> दशन ऐसे उत्कृष्ट बिंदु पर पहुच चुका है कि अब उसे अपने को ऊपर उठाना है और इस प्रकार सपूण विश्व साम्राज्य को एक दूसरे व्यावहारिक-सामाजिक जीवन को समर्पित कर देना है। अब आगे से विशुद्ध व्यावहारिक, अर्थात राज्य के अतगत सामाजिक काय और जीवन ही अतिम लक्ष्य होंगे। अस्तित्व और विचार की सक्रियता म, कला और दशन का सामाजिक जीवन विलीन होना होगा, जिससे कि सामाजिक के सर्वोत्कृष्ट रूप म व पुन प्रकट होकर विकसित हो सकें।[2]

सीस्जकोव्स्की ने पूण ज्ञान से पैदा हुए सामाजिक व्यवहार को 'सिद्धातोपरात

व्यवहार' अथवा अभ्यास कहा। जिसमे अस्तित्व और विचार का सर्वोच्च सभव समन्वय प्राप्त हुआ और यह धारणा जिस विचारसमूह पर आधारित थी वह मार्क्स के सिद्धात[3] तथा मार्क्सवाद के परवर्ती विकास मे गहरे प्रवेश कर गया। इस प्रकार सीस्जकाव्स्की ने 'तथ्य' और 'काय' के बीच भेद किया। तथ्य वे घटनाए थी जिनकी मानवीय चेतना के बल पर व्याख्या और रूपातरण हो सकता है किंतु पहले स वे निर्धारित नहीं हो सकती, काय व घटनाए हैं जिनपर पहले विचार किया जाता है और फिर उस चेतन होकर पूरा किया जा सकता है। यह धारणा प्रत्यक्षत मार्क्स के इस विचार से मेल खाती है जिसके अनुसार 'इतिहासपूर्व' काल म मनुष्य का सामाजिक जीवन मुख्यत बाह्य शक्तियों से नियत्रित होता था, और परवर्ती काल म मनुष्य जाने अनजाने अपनी आतरिक प्रकृति के साथ बाह्य प्रकृति पर तकसगत नियत्रण करता है और सचेतन होकर तथा समझबूझकर अपना स्वय का इतिहास तयार करता है।' इन दो युगो म भेद है।

किंतु जसा कि लोब्कोविस्ज ने कहा है सामाजिक व्यवहार की समस्याओ के बारे मे सीस्जकोव्स्की द्वारा प्रतिपादित समाधान बहुत अस्पष्ट और सूक्ष्म था[4] तथा केवल मार्क्स की रचनाओ म ही उसके मुख्य विचारो को बहुत व्यावहारिक और राजनीतिक महत्व प्राप्त हुआ। मार्क्स की बडी उपलब्धि एक ऐसे सामाजिक सिद्धात की रचना करने मे थी जो यद्यपि सभी मानवीय समाजो का विश्लेषण करने के लिए विश्वव्यापी ढाचे का काम दे सकता था किंतु विशेषरूप से पूजीवादी समाज मे श्रमिक वग का सिद्धात था। साथ ही श्रमिक वग के विकास का तथा समाज और इतिहास का एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करता था जो श्रमिक वग की चेतना म आत्मसात होकर उसे राजनीतिक व्यवहार का माग दिखला सकता था। अत मार्क्स के सिद्धात के अनुसार एक वास्तविक तथा निश्चित रूप स पहचाना जा सकनेवाले सामाजिक समुदाय सामूहिक विषय के रूप म श्रमिक वग सिद्धात और व्यवहार की एकता को स्थापित करता है। किंतु इस धारणा के विभिन्न अथ लगाए जा सकते हैं और इन भेदो का जानना महत्वपूण है। मार्क्सवादी सिद्धात की लुकाच की व्याख्या हीगेलवादी स्वरूप ग्रहण कर लेती है

जब वह सवहारा की परिभाषा ऐतिहासिक प्रक्रिया के विषय-वस्तु के रूप रूप मे करता है तथा पूण ज्ञान को इतिहास क अतिम सत्य के रूप म हीगेल की धारणा को पुन प्रतिपादित करता है।[5] स्पष्टत यह पूण ज्ञान व्यावहारिक क्रिया के लिए (जैसा सीस्जकोस्की का विचार था) और मावसवादी विचारक के लिए —व्यक्तिगत हैसियत से अथवा सामूहिक रूप म कम्युनिस्ट पार्टी के लिए, जैसा कि लुकाच स्वीकार करते हुए प्रतीत होते हैं, मागदशक का काम करता है और इसी के बल पर वे सही तौर पर तय करते हैं कि ऐतिहासिक विकास के हर दौर मे श्रमिक वग की राजनीतिक कारवाई का सही दृष्टिकोण क्या है। कुछ भिन रूपो मे उसी प्रकार के विचार मारक्यूज के 'वन डाईमेशनल मैन म व्यक्त किए गए सिद्धात के आधार बनते हैं। किसी तरह 'आलोचनात्मक सिद्धातवादी' अपने को मौजदा समाज पर निर्णय देनेवाले सर्वोच्च न्यायाधीश और मनुष्य की 'वास्तविक' आवश्यकताओ के अतिम नियता के रूप मे प्रतिष्ठित कर लेता है।

किंतु स्वय मावस के सिद्धात मे विशुद्ध ज्ञान के एस विचार को कोई भूमिका नही दी गई है। वस्तुत केवल विशुद्ध भाववाद मानकर उसकी तीव्र आलोचना की गई है जिसमे से वह भाववादी विचारक पैदा होता है जो समाज और इतिहास को अतर्ज्ञान मे ही समझने की प्रतिज्ञा करता है।[6] तब, यदि हम मानते हैं कि मावसवादी सिद्धात इस आदशवादी धारणा और पद्धति के विरुद्ध उत्पादन के भौतिक तरीको के विश्लेषण पर आधारित समाज के प्रायोगिक विज्ञान के रूप म विकसित हुआ है तो हमे यह भी अवश्य विचार करना चाहिए कि विचारो का यह मोड किस सीमा तक सिद्धात और व्यवहार के बीच एक भिन प्रकार के सबध का द्योतक है। इसका कारण यह है कि विज्ञान से पैदा हुआ ज्ञान पूण होने के बजाय अस्थायी होता है तथा बाद मे उसमे सशोधन की सभावना अधिक हो जाती है। उस एक सीमा तक ही किसी 'सही' व्यवहार के लिए निश्चित आधार माना जा सकता है। व्यवहार का तब दूसरा ही रूप हो जाता है। तब वह उस अथ म एक सिद्धात से लैस सामाजिक व्यवहार नही होता जिस अथ म ऐतिहासिक प्रक्रिया के सत्य की पूरी जानकारी से पैदा हुए सामाजिक दलो या व्यक्तियो के

आत्मसजग, अनिश्चितत क्रियाकलाप होते हैं। वह सामाजिक सरचना और एतिहासिक घटनाओ के अनुभववादी अध्ययन स प्राप्त हुए उस ज्ञान पर आधारित रहता है जो आशिक और त्रुटिपूण होना ह। इसके साथ ही हम देखत है कि स्वय व्यवहार अर्थात सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक सबधो का वास्तविक विकास नई समस्याए पदा करता है और कुछ ऐसे सैद्धातिक प्रश्न खडा करता है जो सिद्धात के अग होते है अथवा निष्कष के रूप म पेश किए जाते है। और इस प्रकार सिद्धात को प्रभावित करना है। सक्षेप मे कह तो सिद्धात और यवहार म सबध या व्यवहार की समस्या को केवल सैद्धातिक तौर पर किसी एसे प्रश्न के रूप म नही समझा जा सकता जिसका समाधान किसी सामान्य सैद्धातिक अथवा दार्शनिक योजना से निश्चित ही हो जाएगा। उसे व्यवहार की दृष्टि से भी देखना चाहिए जिसम सामाजिक जीवन के नए रूपो के विकसित होने स सिद्धात म हुए आवश्यक परिवतनो और अभ्यास की प्रायोगिक जाच-पडताल पर ध्यान रखा जा सके। अर्थात किसी सामाजिक और एतिहासिक स्थिति मे सिद्धात और व्यवहार के परस्पर सबध को उचित महत्व दिया जा सके।

इस दृष्टिकोण से पूजीवाद म हुए परिवतनो के बारे म बनस्टीन के अध्ययन और उसके परवर्ती अन्य आलोचनात्मक अध्ययनो म अभ्यास की समस्या की जाच के लिए उठाए गए प्रश्न पूणत उपयुक्त हैं। इन प्रश्नो म यह नही पूछा जाता कि सामाजिक व्यवहार किस प्रकार किसी दार्शनिक अतदृष्टि की पुष्टि करते हैं बल्कि पूछा यह जाता है कि किस प्रकार एक सैद्धातिक पद्धति को सामाजिक व्यवहार की प्रवत्तियो की अधिक पर्याप्त रूप स व्याख्या करने के लिए तथा अधिक स्पष्ट रूप से चित्रित करने के लिए प्रयोगवादी ढग से किस प्रकार विकसित और सशोधित किया जा सकता है। इसके साथ ही इन अध्ययनो से एक और प्रश्न उत्पन्न होता है जो मावसवादी व्यवहार स सबधित विवादो के मूल म अर्थात विज्ञान और नीतिशास्त्र के सबध को लेकर, उन्नीसवी शताब्दी के अत स निरतर मौजूद रहा है। जिन विचारको ने मोटे तौर पर प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण अपनाया और तथ्यो तथा मूल्यो के बीच भेद स्वीकार किया उनके सामने समाजवादी आदोलन की व्याख्या म ही अनेक

कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई। जहाँ तक उन्होंने पक्के तौर पर इतिहास को कारणभूत प्रक्रिया के रूप में समझा, उन्हें समाजवादी आंदोलन को एक आवश्यक पूर्वनिश्चित घटना तथा समाजवादी समाज में रूपांतरण को पूर्णतः अनिवार्य मानना पड़ा। अतएव नैतिक उत्प्रेरणा और लक्ष्य अप्रासंगिक थे और समाजवादी राजनीति को (उदाहरण के लिए जिसका प्रतिनिधित्व काउत्स्की करता है) समाज के विचार पर आधारित नैतिक दृष्टि से तटस्थ सामाजिक प्रविधि के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता था। किंतु दूसरों ने विशेषकर बर्नस्टीन और वारलेंडर[1] ने यह तर्क दिया कि यदि समाजवाद को नैतिक दृष्टि से अधिक ऊँचा और अंतिम समाधान के रूप में हासिल करने के लिए किए जाने वाले संघर्ष के योग्य प्रदर्शित करना है तो मार्क्सवादी सामाजिक विचार को किसी नैतिक सिद्धांत की सहायता से पूरक बनाने की आवश्यकता है। परंतु सामाजिक विज्ञान और नैतिक सिद्धांत को साथ रखने से ही मुख्य समस्या हल नहीं हुई। यह प्रश्न करना अब भी आवश्यक था कि सामाजिक विकास के किसी नियतिवादी सिद्धांत को नैतिक चयन (केवल एक प्राकृतिक या भौतिक विश्व के संदर्भ में) की संभावना के अनुरूप कैसे किया जा सकता है और नैतिक चयन की वास्तविकता तथा विविध नैतिक आदर्शों के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए यह सोचा गया कि नैतिक असहमतियों का कैसे समाधान किया जाना चाहिए और किस प्रकार तर्क उदाहरण के लिए समाजवाद की नैतिक श्रेष्ठता निर्धारण के लिए, उपयुक्त होगा। जैसा कि हमने पहले देखा, मैक्स एडलर ने इन प्रश्नों में से कुछ पर नैतिक प्रभावों और वैज्ञानिक ज्ञान को कारणभूत प्रक्रिया में आत्मसात करके, विचार किया और यह तर्क दिया कि ये चीजें स्वयं ही कारणभूत हैं, जिनका समाजशास्त्रीय खोजबीन तथा साधारणीकरण से परीक्षा हो सकता है। किंतु इनसे सब कठिनाइयाँ हल नहीं हुईं। उनसे यह स्पष्ट नहीं हुआ कि सामाजिक जीवन के विकास में कारणभूत माध्यमों के रूप में सामने आनेवाले नैतिक प्रयोजन और अनुभववादी या सैद्धांतिक ज्ञान कारणभूत प्रक्रिया से पैदा हुए हैं अर्थात वे मात्र ऐसी अनुभववादी घटनाएँ हैं जिनको उनकी उपयुक्तता, सत्यता या वैधता के मापदंडों से नहीं समझा जा सकता। इसके अतिरिक्त एडलर बहुत कुछ मार्क्स के ढंग से यह स्वीकार करते प्रतीत होते हैं कि सामाजिक विकास में सामान्य ढंग पर

प्रगतिशीलता होती है और आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन के तथ्यगत विकास एवं एक उच्चस्तर के नैतिकता वाले समाज की प्राप्ति के बीच कोई सौभाग्यपूर्ण संयोग होता है।

दूसरी ओर हीगेलवादी मार्क्सवादियों ने तथ्य और मूल्य, विज्ञान और नीतिशास्त्र के बीच भेद नहीं माना। उनका तर्क था कि सामाजिक जीवन को ऐसे विज्ञान का लक्ष्य नहीं बनाया जा सकता जो उसका वर्णन और विश्लेषण बाहर से करे। इस संबंध में विषय और वस्तु दोनों मनुष्य ही हैं। समाज के विषय में उनके ज्ञान के विकास की वृद्धि और मुक्ति का आंदोलन आत्मसचेतना है। यहां ज्ञान और क्रिया अविच्छेद्य हैं। मनुष्य में अपनी स्थिति की समझ उसी समय निर्धारित कर देती है कि वे किस प्रकार कार्य करें। अपने मार्क्सवादी रूप में इस हीगेलवादी धारणा ने एक विशेष चरित्र ग्रहण किया जिसमें *विषय को एक सामूहिक रूप एक सामाजिक वर्ग समझा गया और बढ़ती हुई* आत्मचेतन प्रक्रिया को अंततः सर्वहारा की वर्गचेतना में परिणत समझा गया। किंतु यह दृष्टिकोण भी उन प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ था जो सिद्धांत और व्यवहार के संबंध के बारे में उठते हैं। पहले तो यह उतना ही पूर्व निश्चित सा विचार प्रतीत होता है जितना कि प्रत्यक्षवादी। हां, अब ऐतिहासिक विकास *की अनिवार्य प्रक्रिया को प्रकृतिवादी आधार के स्थान पर वस्तुगत मस्तिष्क* के संदर्भों में सूत्रबद्ध किया जाता है। इसके अतिरिक्त जिन आधारों पर इस आवश्यकता पर बल दिया जाता है उनमें प्रत्यक्षवादी समय की तुलना में तर्क और आलोचना कम होती है क्योंकि वे अनुभववादी समझ की अपेक्षा इतिहास के तर्क की अंतर्दृष्टि से तैयार होते हैं। यह समझना कठिन है कि यदि प्रयोगवादी परीक्षण की किसी न किसी संभावना को बिल्कुल अलग कर दिया जाए तो इतिहास की भिन्न भिन्न व्याख्याओं पर दृढ़ता से बहस कैसे हो सकती है? अंत में इसपर ध्यान देना चाहिए कि ज्ञान के विकास में चरम बिंदु पर बल देने की हीगलवादी अवधारणा एक खास तरह का रूढ़िवादी रूप ग्रहण कर सकती है। 'पूर्ण ज्ञान' की प्राप्ति का दावा किसी भी ऐतिहासिक स्थिति में किया जा सकता है, चाहे वह हीगल द्वारा प्रशियन राज्य का आदर्शीकरण हो चाहे लुकाच द्वारा रूसी क्रांति का आदर्शीकरण मगर इसका खंडन किसी ऐसे तर्क से कैसे किया जा सकता जो एक साथ नैतिक और

वैज्ञानिक दोनों न हो जैसा कि हीगेल की पद्धति के खिलाफ मार्क्स ने मूलत आरोप लगाए थे।

यहा मुझे मार्क्सवादी नैतिक सिद्धात[8] की समस्याओं की गहराई से जाच पडताल नही करनी है। विचारणीय केवल यह है कि उनका मार्क्सवादी समाजशास्त्र से क्या सबध है और विशेषकर वे सामाजिक सिद्धात और सामाजिक व्यवहार के सबध के बारे म मार्क्सवादी दृष्टिकोण को कहा तक प्रभावित करते है। उन्नीसवी शताब्दी के अत से जो विवाद चलते आए हैं उनसे यह अधिकाधिक स्पष्ट हो गया है कि मार्क्सवादी सिद्धात के कुछ मूलभूत प्रस्तावनाओं की—जैसे श्रमिक वर्ग के आदोलन का विकास, उसका राजनीतिक कार्य मे उपयोग और पूजीवादी समाज का समाजवादी समाज मे रूपातरण—वैज्ञानिक और नीतिशास्त्रीय आलोचना आवश्यक है। बर्नस्टीन के समय से आज तक कोई न कोई आगे बढकर बार बार यह घोषणा करता रहा है कि मैं मार्क्सवाद के 'क्रातिकारी तत्व' की सुधारवाद और सशोधनवाद स रक्षा कर रहा हू किंतु यह घोषणा तब तक निरर्थक है जब तक उसके साथ आधुनिक समाज (विशेषकर क्रातिकारी वर्गों की सघटित वास्तविकताओं अथवा ऐतिहासिक प्रवृत्तियो की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति) के विशिष्ट रूपो म सक्रिय राजनीतिक शक्तियो का वास्तविक विश्लेषण न हो और क्रातिकारी आदोलनो तथा शासनो के 'प्रगतिशील' और 'मुक्तिदायक चरित्र का मूल्याकन न हो।

मार्क्स तथा परवर्ती मार्क्सवादियो के विचारो म क्राति की जो धारणा है वह एक ऐसा केंद्रीय बिंदु है जिस पर सिद्धात और व्यवहार, व्यावहारिक आलोचनात्मक कार्य' की बहस टिकी हुई है। अत मार्क्सवादी समाजशास्त्र का सबध क्राति सबधी धारणा और उसके ऐतिहासिक अनुभवो के विश्लेषण तथा अध्ययन से होना चाहिए, इसके महत्व के बावजूद थोडे से ही मार्क्सवादी विचारको ने आधुनिक विश्व म क्रातिकारी परिवर्तन की प्रक्रिया की गहरी आलोचनात्मक जाच की है। जैसा कि हम देख चुके हैं कोर्श विकासवादी धारणाओ के विरोध म क्रातिकारी परिवर्तन के विचार को मार्क्सवादी समाजशास्त्र के चार मूल सिद्धातो म स एक समझता था। यही विचार ग्रामची द्वारा की गई बुखारिन की आलोचना म पाया जाता है। किंतु

मनुष्य समाज के इतिहास की समाज की एक सरचना स दूसरी म छलागने की पद्धतिवादी अनिवार्यता की जाच नही की गई। यद्यपि यह अन्वेषण का मार्गदर्शक एक फलप्रद सिद्धात था और उसका औचित्य वास्तविक सामाजिक इतिहास म, विशेषकर आधुनिक काल म, पाया जा सकता था किंतु उसम उत्पन्न हुए कतिपय प्रश्नो—विकासवादी और क्रातिकारी परिवर्तनो के बीच सबध, क्राति और हिंसा के ससग और लोकतत्र के सदभ म क्राति का अथ—की पूरी जाच पडताल नही हुई।

मेरे विचार म दो समाजवादी विचारको ने दूसरो की तुलना म क्राति का गभीर विश्लेषण करन म अधिक योगदान दिया है रोजा लक्जेमबग ने रूसी क्राति के सबध म 1918 म लिखे गए अपने पैम्फ्लेट मे और ओटो बावेर ने 1919 से 1936 के बीच प्रकाशित अपने कई निबधो और पुस्तको मे, जिनके चुने हुए अश हाल ही म फ्रासीसी भाषा के सस्करण[9] मे प्रकाशित हुए हैं। नेटल का मत है कि 'लक्जेमबग के अध्ययन मे मुख्यत विस्तृत नीतियो का विवेचन नही था। उसम क्राति की बुनियादी अवधारणाओ की समीक्षा थी उन्हाने सुस्थापित और व्यवस्थित निष्कर्षों की कसौटी पर नए तथ्यो को परखा।'[10] इस प्रकार उन्हाने समाजवादी क्राति और लोकतत्र के बीच निकटसबध होन का दावा किया, सविधान परिषद के विघटित किए जाने, चुनाव कराने मे विफलता समाचारपत्रो की स्वतत्रता और सभा करने की स्वतत्रता को समाप्त करने तथा आतक पर आधारित सत्ता पर अधिक भरोसा करन के लिए बोल्शेविको की आलोचना की और इस खतरे की ओर सकेत किया कि एक वग की तानाशाही एक पार्टी अथवा गुट की तानाशाही का रूप ले लेगी। रोजा लक्जेमबग के लिए क्राति का अथ था लोकप्रिय मुक्ति आदोलन की शुरुआत न कि एसे एकाधिकारवादी शासन की स्थापना, जो क्रातिकारी नताओ को सत्ता मे रखने के लिए लोकतात्रिक अधिकारो का प्रतिबधित करे। उन्हाने लिखा कि लेनिन जिन उपायो को काम म लाए उनमे वे बिल्कुल गलती पर हैं। आदेश, फक्टरी के ओवरसियर की तानाशाही क्षमता, भारी दड, आतक द्वारा शासन—ये सब चीजें अस्थायी राहत देनेवाली हैं। पुनजन्म का एकमात्र माग स्वय जनजीवन की पाठशाला सर्वाधिक असीम व्यापक लोकतत्र और जनमत है। आतक मे

जरिए किया गया शासन हतोत्साहित कर देता है।

फिर भी रोजा लक्जेमबर्ग ने इन समस्याओं की पर्याप्त गहराई से जांच नहीं की। यदि वे सोवियत सामाजिक क्रांति का परवर्ती विकास देखने के लिए जीवित रहतीं तो शायद ऐसा भी संभव हो पाता। इस प्रकार उन्होंने इस प्रश्न पर विचार नहीं किया कि क्या समाजवाद में तब तक संक्रमण करना संभव है जब तक बुर्जुआ समाज ने उच्चस्तरीय उत्पादन और उपभोग पर आधारित एक विकास प्राप्त न कर लिया हो, दृढ़ता से स्थापित लोकतांत्रिक व्यवहार, लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रयोग का व्यापक अनुभव एवं व्यापक वैज्ञानिक तथा मानववादी संस्कृति के समायोजन से विकास की उन्नत दशा प्राप्त न कर ली हो जो मानव स्वतंत्रता के विस्तार का विश्वसनीय आधार दे पाती। उन्होंने संभवतः ऐसे विचारों को काउत्स्की की भांति सुधारवादी मानकर अस्वीकार कर दिया होगा। यद्यपि उपसंहार में प्रकट की गई उनकी इस सम्मति से, कि रूसी क्रांति केवल प्रश्न ही पैदा कर सकी थी, समाधान नहीं, ऐसा संकेत प्राप्त होता है कि वे विश्व में समाजवाद की प्रभावी स्थापना को कतिपय अधिक उन्नत पूंजीवादी देशों में समाजवादी क्रांति की सफलता पर आश्रित नहीं समझती थीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस पर भी विचार नहीं किया कि क्रांतिकारी हिंसा कहां तक न्यूनाधिक आवश्यकता के साथ एक अधिनायकवादी और श्रेणीबद्ध राजनीतिक शासन की ओर ले जा सकता है, अपना आतंक का शासन जारी रख सकता है और इस प्रकार ऐसी सामाजिक संस्थाएं और अभिवृत्तियां उत्पन्न कर सकता है जिन्हें बाद के अधिक लोकतांत्रिक ढांचे में सुधारना बहुत कठिन होगा।

ओटो बावेर ने भी रूसी क्रांति का विश्लेषण किया[11], किंतु वे उसे उसके आर्थिक और सामाजिक उपादानों के दृष्टिकोण से एक ऐसी बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति मानते थे जिसका नेतृत्व उस समय के रूस में मौजूद परिस्थितियों के कारण एक श्रमिक वर्ग की पार्टी ने किया। उस समय उनका विचार था कि बोल्शेविक पार्टी अपने शासन को उदार बनाएगी और तब क्रांति का बुर्जुआ लक्षण और अधिक स्पष्ट दिखाई देगा। किंतु बुर्जुआ गणतंत्र में भी श्रमिक वर्ग बहुत सी सुविधाएं बनाए रखेगा और रूस श्रमिक वर्ग के लोकतंत्र के विकास में एक शक्तिशाली भूमिका पूरे विश्व में निभाता रहेगा। किंतु क्रांति

के अध्ययन म बावेर का सवाधिक महत्वपूण योगदान उनका 'धीमी गति की क्राति' का सिद्धात था।[12] उन्होने (मावस की भाति) राजनीतिक क्राति और सामाजिक क्राति के बीच भेद किया। राजनीतिक क्राति आकस्मिक और हिंसात्मक हो सकती है किंतु यदि उसक साथ उत्पादन के साधना और सामाजिक सबधा म मौलिक परिवतन नही होत ता वह एक 'अल्पमत' वाल शासक की स्थापना दूमरे 'अल्पमत' वाने शासक द्वारा ले लन स कुछ और अधिक न हागा। उत्पादन के क्षेत्र म शुरू हुए सामाजिक सबधा म परिवतन सामाजिक क्राति की रचना करत है। जिसका विकास अपेक्षाकृत धीमे होता है। समाजवादी समाज की रचना क्रमश एव लबी अवधि म सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रा म त्वरित सुधारा के माध्यम से ही हो सकती है।

किंतु बावेर के लेखा मे सामाजिक क्राति को, मुख्यत सामाजिक पुनरचना का एसी प्रक्रिया के रूप म दखा गया है जो राजनीतिक क्राति अर्थात श्रमिक वग द्वारा सत्ता हथियाने के बाद आती है। किंतु मुझे सामाजिक क्राति के एक 'युग' की धारणा अधिक यथाथ और उज्वल प्रतीत होती है। यह सामाजिक परिवतन और सघप का एसा दीघकाल है जिसम समाज का पुराना ढाचा क्रमश टूट जाता है अथवा उसका क्षय हो जाता है और एक नया समाज ऐसा रूप ग्रहण करता है जिसके अतगत विभिन्न राजनीतिक क्रातिया होती है। जिनम से कुछ अपरिपक्व, विफल और कुछ उल्लेखनीय स्वतत्रता तथा समानता लान म समथ होती है। इस प्रकार की धारणा एसे पूजीवाद के उदभव से पूरा मेल खाती है जो निश्चय ही किसी एक नाटकीय राजनीतिक क्राति का प्रतिफल नही होता (यद्यपि उसके बहुत से विशिष्ट लक्षण फ्रासीसी क्राति मे स्पष्ट ही भासित हो गए थे) बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक परिवतना के लबे क्रम और राजनीतिक सघर्षों की श्रृखला का परिणाम था जिन्होने प्रत्येक देश म अपना अलग विशिष्ट रूप ग्रहण किया। इस परिप्रेक्ष्य मे उन्नीसवी शताब्दी से अभी तक के समय का समाजवादी क्राति का युग मान सकत हैं जिसम रूसी क्राति प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात पश्चिमी यूरोप के क्रातिकारी आदोलन द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात विश्व के विभिन्न भागों मे क्रातिकारी शासन की स्थापना तथा अन्य अनेक राजनीतिक सघप और उथल पुथल हुए जिन्होने मिलकर आर्थिक और सामाजिक सबधा तथा

सास्कृतिक मूल्या के नमिक रूपातरण द्वारा नए समाज को आग
बढाने के अनेक प्रयत्ना का प्रतिनिधित्व किया।
किंतु इस प्रकार की व्याख्या पूजीवादी समाज की उत्पत्ति के ऐतिहासिक
लेखे जोखे की अपेक्षा फिर भी अस्थायी या कामचलाऊ होगी क्योकि हम लाग
अभी उन परिवतना के बीच मे ही रह रहे हैं। यद्यपि विकास की मुख्य धाराआ
को हम समझ सकते है, किंतु मैं नहीं समझता कि ऐसा कोई भी माग है जिससे
हम यह जान सके कि वतमान समाज मे क्या परिवतन होगे और किस प्रकार का
समाज उसके बाद आएगा।[13] यदि मार्क्सवादी समाजशास्त्र का एक दढ
प्रत्यक्षवादी रूप मे लिया गया होता और साथ ही हम यह विश्वास करते कि
इसने कुछ ऐसे बहुत सामान्य कारणभूत नियमा के सूत्र सफलतापूवक बना लिए
हैं जिनसे हम पूरे समाज के विकास की सविस्तार भविष्यवाणी[14] कर सकते है
अथवा विकल्प रूप म उसकी धारणा इतिहास के ऐसे दशन के रूप मे की गई
होती जिसमे इतिहास के अतिम लक्ष्य का समथन के लिए पूण सुनिश्चित और
विवाद रहित अतद ष्टि प्राप्त हो सकती तो हम समाजवाद म रूपातरण
का एक आवश्यकता समझ सकते। इनम से कोई भी स्थिति
समाजशास्त्रीय सिद्धाता के निमाण, परीक्षण और तुलना म अब तक अनिर्णीत
सभी कठिनाइया का देखत हुए स्वीकाय प्रतीत नही होती और दूसरी आर
आलोचनात्मक जाच पडताल की अपक्षा कट्टर सिद्धातवादी दाव को
अधिक प्रात्साहन देनी प्रतीत होती है।

अन्य समाजशास्त्रीय पद्धतिया के समान मार्क्सवाद का भी अस्थायी रूप स तथा
आत्मालाचना के माध्यम से विकास होना जरूरी है। इसका उददेश्य उचित
व्याख्या प्रदान करना यदि हो सके तो कारणभूत व्याख्या को सूत्रबद्ध (जा किसी
भी मामले म सीमित सामान्यीकरण के ही हो सकते हैं) करना और साथ ही इस
सभावना को स्वीकृति देना है कि मनुष्य के स्वतत्र और सचेतन क्रियाकलाप
वस्तुत समाज विज्ञान के नियमा का परिवर्तित करने म सक्षम हो सकते हैं।
यदि 'प्रागितिहास' और 'इतिहास' के अतर पर गभीरता[15] से ध्यान
दिया जाए तो मार्क्सवादी विचारधारा मे उपर्युक्त अतिम तक
शामिल माना जा सकता है। इस रूप म लेने पर सैद्धातिक योजना
का व्यावहारिक जीवन के साथ दूसरा ही सबध बनता है। जैसाकि मैंने पहले

ही संकेत किया है वांछित (भविष्यवाणी की गई) परिणति तक पहुंचने के लिए इस संबंध का सही सिद्धांत का क्रियान्वयन नहीं कहा जा सकता बल्कि इसे *सामाजिक क्रिया और सामाजिक विचार की एक विकासशील अंतःक्रिया के रूप में* देखा जाएगा जिसमें गत कार्यों और उनके परिणामों की जांच करने और उन पर विचार करने के बाद विचार स्वयं अपना सुधार करता है मानवीय आत्मरचना की प्रक्रिया में वास्तविक नएपन के प्रति ग्रहणशील रहता है।

किंतु यह नहीं समझना चाहिए कि ये सारे प्रश्न केवल मार्क्सवादी समाजशास्त्र में ही पैदा होते हैं। सभी समाजशास्त्रों और इस अर्थ में सभी समाज विज्ञानों का कमोबेश व्यावहारिक सामाजिक जीवन पर इच्छाकृत आत्मचेतन और प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है और वास्तव में इनका विकास आधुनिक समाज में मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व के लिए इच्छाकृत, सचेतन और ज्ञान के माध्य नियमन तथा नियोजन की आवश्यकता की धारणा में से हुआ है। मार्क्सवादी विचारधारा का एक खास गुण यह है कि वह सिद्धांत और व्यवहार के संबंध पर स्पष्ट और असंदिग्ध प्रकाश डालता है, उसकी एक प्रमुख कमजोरी यह है कि वह किसी खास तरह के व्यवहार विशेषतः जब वह व्यवहार किसी संघटित राजनीतिक पार्टी की गतिविधियों में अंतर्भुक्त होता है से प्रतिबद्ध हो सकता है। यह अनालोच्य हो जाती है और निरूपित सत्य का ऐसा रूप में लिया जाता है जिसका व्यावहारिक नरतय के लिए किसी कीमत पर सुरक्षित रखना आवश्यक है। तब अन्य समाजशास्त्रीय पद्धतियों की तुलना में मार्क्सवादी समाजशास्त्र की वैधता और मूल्य पर विचार करते समय हम केवल इसके सामाजिक ढांचे की प्रकृति और व्याख्यात्मक अभिधारणाओं पर ही नहीं वरन इस तथ्य में भी सबल होना जरूरी है कि यह तथा इसके प्रतिस्पर्द्धी किस प्रकार सामाजिक जीवन और विशेषकर राजनीतिक कार्रवाई के *व्यावहारिक आचरण के साथ अपना संबंध* बनाते हैं और लागू करते हैं।

संदर्भ

1 लीस्नकाव्स्की के विचारों का निकोलस लोबकोविज ने थियरी ऐंड प्रैक्टिस (नात्र डेम न्यूयार्क यूनिवर्सिटी आफ नात्रे डेम प्रेस 1967)

अध्याय 13 म अपक्षाकृत विस्तृत विवचन किया है और स क्षिप्त रूप म डविड मकलेलन न दि यग हीगेलियस ऐंड काल मावस (लदन मकमिलन 1969) म दोना न ही युवा हीगलपथियो क बौद्धिक परिवश का लाभप्रद विवरण दिया है

2 मीस्जकास्की प्रोलेगामेना पृ० 101 112 लावकाविन्जद्वारा पृ० 198 200 पर उदधत

3 इस बात का कोई प्रमाण नहा है कि मावस सीध सोस्तकोस्की की कृति स प्रभावित हुए थ परन्तु व मोजज हस क जरिए मीस्जकोव्स्की के विचारो स अवगत हुए होग जो भी हो इस विचार युवा हीगलपथियो क बीच चचा क विषय बन हुए थ लावकाविरज की टिप्पणी थियरी एण्ड प्रक्टिस के पृ० 203 ० पर दखिए

4 वही पृ० 202

5 लुकाच ने काफी बाद म इस विचार का मान्यता दी और हिस्ट्री ऐंड क्लास कान्शसनस (न्यूविट लच्टरहैंड वर्लाग 1967) के नए प्रकाशन का भूमिका म उसने लिखा कि इस कृति की अतिम दाशनिक आधारशिला परिवयात्मक विषयवस्तु है जो स्वय का पनिहासिक प्रक्रिया म (हीगेल का विशुद्ध आत्मा) अनुभव करता है यह हीगल का अस्वीकारने का प्रयास था यह प्रत्यक्ष सभव ययाथ के ऊपर दृढ़ता स निर्मित स्तभ है परतु अपनी कृति में लुकाच हीगेलपथी तत्वो का आलोचना करते हुए बहुत आगे तक नहा बढ पाया

6 इकोनामिक ऐंड फिलासाफिकल मनुस्क्रिप्टस दखिए टी० बा० बाटमोर द्वारा सपादित कार्ल मार्क्स अर्ली राइटिंग्स (लन्दन वाटस 1963) पृ० 199 200 216-17

7 के० वार्लेन्डर, जो एक प्रमुख नव-कान्टवादी दाशनिक था जिसन काट ऐंड डेर सोशियालिज्म (बर्लिन, 1900) म नतिक समाजवाद की व्याख्या की और काट ऐंड मार्क्स (टुबिंगेन जे० सी० बी० मोह्र 1926) म सपूण सशोधनवादी आन्दोलन क दार्शनिक विचारो का गहन विवेचन किया है

8 यद्यपि यह मार्क्सवाद का एक उपेक्षित क्षेत्र है पर ता कि एम० स्टोजनोविच ने अपनी बहुमूल्य कृति बिटवीन आइडियल्स ऐंड रियलिटी (न्यूयाक आक्सफोड युनिवर्सिटी प्रस 1973) मे माना है मार्क्स के नाम के उपयुक्त मार्क्सवादी नीतिशास्त्र की रचना अब भी पूरा होनी है (पृ० 137) उन्हे आगे भी विशषकर नवें अध्याय में रिवोल्युशनरी टलियालाजी ए इथिक्स के सन्दभ म उन कुछ बड पराा पर

विचार किया है जिसके साथ ऐसा ही नीतिशास्त्रीय सिद्धांत की सगति है लकाच मार्क्सीय नीतिशास्त्र पर व्यवस्थित ढग से पुस्तक लिखना चाहते थे परतु वे अस्तित्व की प्रकृति (ontology) से सबद्ध लबी भूमिका से अधिक लिख पाने म असमर्थ रहे (देखिए इस्तवान मेस्जारोस लुकाचइज़ कसेप्ट आफ डायलेक्टिक लदन दि मर्लिन प्रेस 1972 पृ० 6 7) मार्क्सीय नीतिशास्त्र के बारे म सर्वाधिक प्रकाश डालनेवाले जो कतिपय कार्य हुए हैं वे लस्जेक कोलाकोव्स्की के मार्क्सिज्म ऐंड बियाड (लदन पाल माल प्रेस 1969) विशेषकर रिस्पासिबिलिटी एड हिस्ट्री म प्राप्त है

9 राजा लक्जमबग दि रशियन रिवोल्यूशन (बट्राम डी० वुल्फ एन आबर द्वारा सपादित न्यूयार्क ग्रहारण यूनिवर्सिटी आफ मिशिगन प्रेस 1961) यवान बोर्डट द्वारा सपादित आटो बावेर एट ल रिवाल्यूशन (पेरिस एटम्स एट डाकुमेटशन इटरनेशनल्स 1968) क्रांति के मार्क्सीय सिद्धान्त की तुलना म हिंसा के प्रश्न पर एम० मार्लिउ पोन्टी ने बाद म ह्यूमनिज्म एट टरिअर (परिस गलिमार्ड 1947) म विचार किया है

10 जे० पी० नेटल राजा लक्जमबग (लदन आक्सफाड यूनिवर्सिटी प्रेस 1966) II 703-4

11 1921 म प्रकाशित पर्चे म, देखिए बार्डट ओटो बावर पृ 73 84

12 डर वेग जम सोजियालिज्मस (वियेना वियनर वोल्कस्बुकहैंडलग 1919) देखिए बोर्डट आटो बावेर पृ० 87 130

13 उदाहरण के लिए बीसवी शताब्दी के अधिकाश राजनीतिक आन्दोलनो और क्रातियो को पूजीवाद से समाजवाद नहीं कृषि से औद्योगिक समाज म रूपातर के अथ म व्याख्यायित किया जा सकता है जसा कि बरिंगटन मूर ने सोशल आरिजिंस आफ डिक्टेटरशिप ऐंड डेमोक्रसी (बोस्टन बीकन प्रेस 1966 म सुझाव दिया है

14 सभवत मार्क्स ने जसा कि मैने पृ० 6 पर पूजी के द्वितीय सस्करण से उद्धत किया है एसा दावा किया है

15 विशेष तौर पर देखिए, गाजो पेट्रोविक की पुस्तक मार्क्सिज्म इन दि मिड ट्वेंटियथ सेंचरी (गार्डेन सिटी न्यूयार्क डबलडे ऐंकर 1967) पृ० 99 114 जिसमे निष्कष दिया गया है कि मार्क्सीय विचारधारा का मूल अथ यह समझ है कि मनुष्य आर्थिक पशु नहीं वरन एक व्यावहारिक इसलिए स्वतत्र सार्वभौमिक, रचनात्मक और आत्मरचनात्मक सामाजिक प्राणी है

5 □ मार्क्सवादी तथा अन्य समाजशास्त्र

□ C

मार्क्सवाद को विशिष्ट समाजशास्त्रीय पद्धति का दर्जा देने के प्रयास मे इस बात के असख्य कारण है कि ऐसा करते समय बहुत सावधानी और सतर्कता के साथ आगे बढा जाए। प्रथमत जैसा कि प्रारभिक विचार-विमर्श से स्पष्ट हुआ होगा, मार्क्सवाद अपने आप म कोई सयुक्त या एकरूपतायुक्त विचारधारा नही है। पिछले सौ वर्षों स जो विवाद उठते रहे है उनसे अत्यत विरोधी व्याख्याए और यहा तक कि मार्क्सवादी विचारधारा के कई 'गुट' भी पैदा हुए है। इनके दो प्रमुख विभाजन उन लोगो के ह जिनमे एक ता मार्क्सवाद का दार्शनिक विश्वदृष्टिकोण या इतिहास दर्शन मानते हैं और दूसरे लोग मूलत इसे सामान्य समाज विज्ञान या समाजशास्त्र मानते हैं। फिर भी इनम से प्रत्येक व्यापक मान्यता मे कई प्रकार के वैचारिक मतभेद हैं और ये मतभेद मार्क्सवादी पद्धति के मूलभूत विचार, ऐतिहासिक घटनाओ या समाज के विशेष रूपो की व्याख्या और निर्धारित परिस्थितियो म राजनीतिक गतिविधि के चयन से सबधित मार्क्सवादी विश्लेषण के बारे म हैं।

मार्क्सवादी सिद्धात का विश्वदृष्टिकोण के रूप मे लिया जाय तो उसमे समाजशास्त्र का स्थान बहुत अनिश्चित लगता है। यह बात पूरी तौर से अस्वीकृत भी की जा सकती है कि या किसी सामान्य समाज विज्ञान की आवश्यकता है अथवा सामाजिक सर्वेक्षण करने तक (जिसे और अच्छे ढग स

'सामाजिक साम्यिकी' कहा जा सकता है) इसकी भूमिका को, जैसा कि ग्रामची ने कहा है, सीमित किया जा सकता है। दूसरी ओर समाज के किसी विशिष्ट सिद्धांत को विश्व दृष्टिकोण, तत्व मीमांसा, ज्ञान के सिद्धांत और नीतिशास्त्र से पूरी तरह मुक्त रूप मे भी ग्रहण किया जा सकता है ताकि 'मार्क्सवादी समाजशास्त्र' को 'ईसाई समाजशास्त्र' 'हिंदू समाजशास्त्र' या संभवत 'मानवीय समाजशास्त्र' के समान ही परिभाषित किया जा सके। परंतु यह कोई बहुत उपयुक्त या फलप्रद विचार प्रतीत नहीं होता और इस निश्चय ही मार्क्सवादी विचारधारा म पूरी तरह नहीं समझा गया है क्योंकि यद्यपि प्रत्येक समाजशास्त्रीय सिद्धांत स दार्शनिक प्रश्न पैदा होते हैं और इन पर विज्ञान दर्शन तथा ज्ञान के समाजशास्त्र की दृष्टि स विचार करने की आवश्यकता है तथापि इसका अर्थ यह बिलकुल नहीं है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की रचना और उनका विकास किसी समग्र विश्वदृष्टिकोण की पूर्व व्याख्या या निरंतर चर्चा पर निर्भर रहा है या निर्भर करता है।

किंतु यदि हम अन्य मुख्य सिद्धांतों को स्वीकार कर और मार्क्सवाद को प्रथमत समाजशास्त्रीय पद्धति मान लें तो भी आगे कठिनाइयां आती हैं क्योंकि समाजशास्त्र भी संयुक्त तथा एकरूप विचारधारा नहीं होता। शुरू से ही, समान समस्याओं और विषयवस्तु के बावजूद अनेक तरह की विचारधाराएं समाधान खोजते हुए असंख्य प्रश्न और प्रत्यक्षत असमान सिद्धांत पैदा हुए हैं हाल के वर्षों म सिद्धांतों तथा विचार दृष्टियों की अधिकता एक ऐसे स्तर पर पहुंच गई है जिसे कुछ लोग चुनौती से भरा बौद्धिक संकट और अन्य लोग (और निराशा से) पूर्ण असंगति के रूप म देखते हैं। मार्क्सवादी समाजशास्त्र की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं को परिभाषित करने तथा अन्य समाजशास्त्रों की तुलना म इसकी फलप्रदता और वैधता की जांच करने के लिए हमें कमोवेश विचारों के एक स्थिर व्यापक ढांचे की आवश्यकता है जो यह बता सके कि एक अच्छा समाजशास्त्रीय सिद्धांत, एक 'उपयुक्त' पद्धति और अभिधारणाओं की जांच तथा परीक्षण के लिए स्वीकार करने योग्य नियम क्या हैं। परंतु इन सब पर मतभेद है और होता यह प्रतीत हो रहा है कि मार्क्सवादी तथा गैर मार्क्सवादी विचारों का आश्चर्यजनक एकीकरण पैदा हो रहा है जो समाजशास्त्र के तत्व के

रूप म एक या अन्य विचारा, प्रत्यक्षवादी गोचरवादी आदि का
तिपादन करते हैं।

अत मे, एक स्पष्ट मार्क्सवादी समाजशास्त्र का निर्धारण करने म एक तीसरी कठिनाई है जो आशिक तौर पर उस बात से सबधित है जिसकी चर्चा अभी अभी मैंने की है। *यह स्वाभाविक है कि मार्क्सवाद की कुछ व्याख्याओं मे किसी कारणवश* सामाजिक विचार की अन्य रीतियो से विचार ग्रहण किए गए हो या वे उनसे प्रभावित हुई हो, जैसे कि गोचरशास्त्र, अस्तित्ववाद या सरचनावाद। आज भी इस बात का काफी महत्व है कि समाजशास्त्रीय विचार ने, बहुधा सशोधित रूप मे ही सही, मार्क्सवाद की कई धारणाओ को अपने मे शामिल कर लिया है—*उदाहरण के लिए वर्ग, सामाजिक सघर्ष विचारधारा और यह कि* समाजशास्त्र के सर्वाधिक प्रमुख विवाद उन विचारो तथा सिद्धातो के चारो ओर घूमते रहे हैं जिनका स्रोत मार्क्स के विचारो मे था। इसलिए किसी हद तक हम सहमत हो सकते हैं कि एकीकरण की प्रक्रिया कोलाकोवस्की द्वारा रेखाकित रास्ते पर ही चल रही है 'मानविकी मे अनुसधान तकनीको के धीरे धीरे परिमार्जन के साथ एक विशिष्ट विचारपद्धति के रूप म मार्क्सवाद की धारणा धुधली पड जाएगी और फिर निश्चय ही पूर्णतया विलुप्त हो जाएगी मार्क्स की कृतिया म जो कुछ स्थाई है उसका वैज्ञानिक विकास के स्वाभाविक क्रम मे अतग्रहण हो जाएगा।'[1] अभी भी ढेर सारे विभिन्न प्रकार के परिणाम निश्चित रूप से सभव है। सभव है कि सूत्रबद्ध आलोचना के विरुद्ध मार्क्स की अधिकाश मौलिक अभिधारणाओ के दृढता से स्थापित हो जाने से समाजशास्त्र और भी अधिक मार्क्सवादी हो जाए अथवा दूसरी ओर मार्क्स की कृतियो के अधिकाश भाग मे नई खोजो के कारण इतना त्वरित सशोधन या पूर्ण परित्याग हो कि इसके विशिष्ट विचारो का केवल अल्पाश ही सामान्य समाजशास्त्रीय विचारो के घेरे म बचा रहे।

इन विभिन्न कठिनाइयो को ध्यान मे रखते हुए मैं यह स्पष्ट करने का प्रयास करूगा कि समाजशास्त्र के रूप म मार्क्सवाद म मुझे क्या चीज विशिष्ट और मूल्यवान प्रतीत होती है, और ऐसा यह मानते हुए कि मेरे तक समाजशास्त्र और मार्क्सवाद दोनों के उद्देश्य और क्षेत्र की किसी धारणा पर

आधारित होंगे जिन्हें मैं यहां स्पष्ट नहीं कर सकता। यह धारणा है समाजशास्त्र का एक अनुभववादी विज्ञान के रूप में मानने की जिसमें एक सैद्धांतिक ढांचे के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की सम्मतियां और वक्तव्य अंतर्भुक्त हैं। सामाजिक लक्षणों नियात्मक अंतर्संबंधों, कारणिक या अर्ध कारणिक संबंधों को वर्गीकरण स्थापित करना तथा मार्क्सवाद का इस संदर्भ में समाज विज्ञान की रचना एवं उसका विकास करने का प्रयास करना इसका सामान्य उद्देश्य है।[2] कार्ल कोर्स्च द्वारा निरूपित मार्क्सवादी समाजशास्त्र (ऊपर देखिए पृ० 39) के सिद्धांतों से इस बहस की लाभदायक शुरुआत हो सकती है। अभ्यास का प्रश्न जिस पर मैंने पिछले अध्याय में विचार किया है, अलग रख देने पर कोर्स्च की व्याख्या में चार मुख्य मुद्दे हैं। प्रथम समाज के मार्क्सवादी विश्लेषण में आर्थिक ढांचे की प्राथमिकता जिसे कोर्स्च ने यह कहकर व्याख्यायित किया कि मार्क्सवाद को समाजशास्त्र की अपेक्षा राजनीतिक अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है, द्वितीय, सभी सामाजिक लक्षणों का ऐतिहासिक स्पष्टीकरण या निर्धारण, तृतीय, एक ऐतिहासिक आर्थिक संदर्भ में खास सामाजिक लक्षणों के अनुभववादी अध्ययन को नियत करना, और चतुर्थ, समाज के एक रूप से दूसरे में संक्रमण की ऐतिहासिक निरंतरता में होनेवाले विराम और विकास के साथ ही क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तनों को पहचानना।

जहां तक पहले मुद्दे का सवाल है यह निस्संदेह मार्क्सवादी समाज सिद्धांत के एक विशिष्ट पक्ष का संकेत करता है। इसका अर्थ बस इतना ही नहीं कि आधुनिक समाजशास्त्र के एक बड़े अंश ने संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण करने में आर्थिक ढांचे की उपेक्षा की है या इसे नाम्य स्थान दिया है (ताकि समाजशास्त्र स्वतंत्र रूप से सामाजिक जीवन में गैरआर्थिक पक्षों का विज्ञान प्रतीत हो सके), बल्कि किसी अन्य समाज सिद्धांत ने 'भौतिक जीवन की उत्पादन प्रणाली' को अपनी आधारभूत श्रेणियों में स्थान नहीं दिया है। जैसा कि मैंने यह अंतर अन्यत्र वर्णित किया है

अन्य समाजशास्त्रीय प्रणालियों के विपरीत जो समाज को स्वायत्त विषय मानते हैं प्राकृतिक दुनिया में उसके अस्तित्व को निर्धारित

जैसा कुछ मानते है मार्क्स का सिद्धात समाज और प्रकृति के पारस्परिक सबध के विचार पर दृढता से आधारित है। इसकी मूल धारणा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे मानवीय श्रम' है, यह मनुष्य और प्रकृति के बीच एक विकासशील अत सबध है जो एक ही साथ मनुष्य म सामाजिक सबधो की रचना करने के साथ साथ क्रमश उन्ह रूपातरित करता है।[3]

परतु इस मूलभूत विचार की मार्क्सवादी विचारधारा के भीतर और बाहर—दोनों तरफ आलोचना हुई है और आर्थिक 'आधार' तथा सामाजिक-सास्कृतिक 'बाह्य ढाचे' के अत सबधो के प्रश्न ने इस सिद्धान की व्याख्या सबधी गभीर कठिनाइया पदा की है। इतिहास की 'प्राविधिक व्याख्या न होने देन के लिए किसी खास सदभ मे या साधारण ढग से, आर्थिक परिवतनो की सूक्ष्म निर्धारक' शक्तियो को सूत्रबद्ध करना सरल नही है, चाहे अन्य विपरीत सामाजिक प्रभावो के विरुद्ध अथव्यवस्था की प्राथमिकता पर भी जोर क्या न दिया जाए।

मार्क्सवाद के अनेक समाजशास्त्रीय आलोचको ने सामाजिक विकास म गैरआर्थिक पक्षो के महत्व की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। सर्वाधिक प्रसिद्ध आलोचना मैक्स वेबर की है जिसे उन्होने पश्चिमी पूजीवाद के विकास म प्रोटेस्टेंट नैतिकता की भूमिका और सामाजिक जीवन को 'तकसम्मत बनाने की पूरी प्रक्रिया का चित्रित करने के सदभ मे स्पष्ट किया है, जिसका उद्देश्य मार्क्सवादी सिद्धात की प्रशसा और उसका सशोधन करना था। हाल म टाल्काट पार्सस ने इतिहास की 'भौतिकवादी व्याख्या के स्थान पर 'आध्यात्मिक व्याख्या' पेश करते हुए और अधिक उग्र विचार सामने रखा है 'मैं विश्वास करता हू कि सामाजिक व्यवस्था म सामाजिक परिवतन के लिए प्राकृतिक तत्व रचनात्मक इकाइयो के 'भौतिक हितो की अपेक्षा अधिक महत्वपूण हैं।'[4] परतु यह कथन विश्वास की अभिपुष्टि है न कि निदशन। यह स्पष्ट है कि सामाजिक जीवन मे अनेको गरआर्थिक शक्तिया जो अधिक या कम परिमाण म स्वायत्त होती हैं, सामाजिक परिवतन या सामाजिक सघष पर विशेष प्रभाव डालती हैं, हालाकि ये शक्तिया कभी कभी आर्थिक हितो, विज्ञान के विकास, राष्ट्रीयतावाद, राजनीतिक लाकतत्र धार्मिक विश्वास, धार्मिक समुदाय या पारपरिक दल से सबद्ध भी रहती हैं।

माक्सवादी चिंतकों ने इन शक्तियों की बहुधा उपेक्षा की है और यदि कहीं इनकी चर्चा भी की है तो उत्पादन प्रणाली के विकास और वर्ग संरचना पर आधारित व्याख्या के मूल ढांचे में इनको समाहित करना आम तौर पर कठिन सिद्ध हुआ है।[5]

परंतु मार्क्सीय सिद्धांत के मूल आधार अर्थात 'मानवीय श्रम की धारणा' की कहीं अधिक उग्र आलोचना परवर्ती फ्रैंकफर्ट स्कूल की कृतियों में स्वयं मार्क्सीय विचारधारा के अंतर्गत सूत्रबद्ध हैं।[6] यह मार्क्सीय विचारधारा की उस मान्यता के विरुद्ध है जो मानव समाज के ऐतिहासिक विकास की व्याख्या केवल भौतिक वस्तुओं के उत्पादन रूप में गृहीत श्रम की प्रक्रिया के अर्थ में करता है और मनुष्य की दो शारीरिक विशेषताओं पुर्जे बनाने और भाषा बनाने पर आधारित मानवीय आत्म संरचना तथा मानव प्रकृति का विरोध करता है। इस प्रकार हैबरमस ने मानवीय क्रिया व्यापार के दो पक्ष उदघाटित किए हैं 'श्रम' और 'पारस्परिक क्रिया (अथवा 'साधन स्वरूप व्यवहार' और संप्रेषणात्मक व्यवहार)। ये विचार बहुत हद तक मार्क्स की अपनी कृतियों से ही पैदा होते हैं क्योंकि उन्होंने बहुधा ही 'श्रम' का प्रयोग अत्यंत व्यापक अर्थ में (विशेषकर अपने प्रारंभिक लेखन के दौरान) किया है ताकि इसे अनुमानतः मानवीय क्रिया या सामान्यतः मानवीय क्रियात्मक शक्तियों के प्रयोग के समानार्थक स्तर पर लिया जा सके चाहे वह भौतिक उत्पादन के विकास में हो, सामाजिक संस्थाओं के उत्कर्ष में हो या सांस्कृतिक पदार्थ की रचना में। परंतु अब भी ऐसा लगता है कि मार्क्स के ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत से भौतिक श्रम और उत्पादन रूपों के विकास तथा 'आर्थिक अंतर्विरोधों' से उठने वाले वर्ग संघर्षों को अत्यधिक महत्व मिला है। फ्रैंकफर्ट इंस्टीटयूट द्वारा इस धारणा की आलोचना ने सामाजिक घटनाओं की व्याख्या में जर्मन आदर्शवादी दर्शन के तत्वों और साथ ही एक अनियतिवाद को (अमूर्त कारणों की सक्रियता के रूप में) पुनः प्रस्तुत किया है क्योंकि उन्होंने खोज और व्याख्या के उस शक्तिशाली स्रोत को उसके विशिष्ट पद से अलग हटा दिया जिसे मार्क्स ने अपनी आर्थिक व्याख्या में स्पष्ट किया था। मार्क्सवादी समाजशास्त्र की विशिष्टता इतिहास के उस नए दर्शन में छिप जाती है जिसके अंतर्गत सामाजिक विकास में

आध्यात्मिक' कारणों की भूमिका पर बहुत अधिक जोर दिया गया है, परन्तु साथ ही यह दर्शन परिवर्तन की मुख्य प्रवृत्तियों या सामाजिक संघर्ष में सक्रिय शक्तियों को साफ साफ परिभाषित करने में अक्षम हो जाता है।

कोर्स्च के अनुसार मार्क्सवादी समाजशास्त्र का दूसरा विशिष्ट पक्ष 'ऐतिहासिक विशिष्टीकरण' का सिद्धांत है। यह मार्क्सवाद को समाजशास्त्र के अन्य रूपों से बहुत अधिक अलग नहीं करता क्योंकि इनमें बहुत से रूप—उन्नीसवीं सदी के 'सामाजिक विकासवाद' और मैक्स वेबर के 'ऐतिहासिक समाजशास्त्र'—ने किसी युग अथवा समाज के प्रारूप की सामान्य विशेषताओं के साथ खास सामाजिक लक्षणों का संबद्ध कराने का प्रयास करते हैं। मार्क्सवादी ऐतिहासिक योजना विषय—उत्पादन प्रणाली के अर्थ में इसके द्वारा समाज का वर्गीकरण, और इस सिलसिले में वह चरम बिंदु जिसे मार्क्स ने 'समाज के आर्थिक गठन में प्रगतिशील युग' कहा है—अंतर का पैदा करता है। परन्तु मार्क्सवादी सिद्धांत का विषय भी मार्क्सवाद के भीतर और बाहर, अत्यधिक आलोचना का विषय रहा है। प्रथमतः, मार्क्सवादी योजना में समाज के उस रूप का जिसे मार्क्स ने 'एशियाई'[7] कहा है, अवस्थान करने की जाहिरा कठिनाई। आगे ऐसा लगता है कि समाज के दो प्रारूप जिन्हें मार्क्स ने अलग अलग किया है—सामंत और आधुनिक पूंजीपति—मार्क्सवादी विश्लेषण के बहुत अधिक अनुरूप रहे हैं और निश्चय ही अधिक पूर्णता से इनका अध्ययन हुआ है, जबकि समाज की प्रारंभिक अवस्था का, जिसे मार्क्स ने 'आदि साम्यवाद' कहा है मार्क्सवादी अध्ययन अब तक बहुत कम लाभदायक और सामान्य रहा है।[8]

जो भी हो, संपूर्ण मार्क्सवादी ऐतिहासिक दृष्टिकोण की और भी अधिक आधारभूत आलोचना मुख्यतः विचारों[9] के नए 'संरचनावादी' गुट की ओर से हुई है। आलोचना की यह प्रवृत्ति क्लाड लेवी स्ट्रास की कृतियों से संक्षेप में निर्दिष्ट की जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्ट्रास का उद्देश्य सभी मानवीय समाजों के आधारभूत और सार्वदेशीय संरचनात्मक तत्वों को उभारना था। 'दि सवेज माइंड' के अंतिम अध्याय में सार्त्र के साथ अपने मतभेदों की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'मानव जाति संबंधी विश्लेषण

मानव समाजों की अनुभव की विभिन्नता के बाहर स्थित नियमों की तह तक पहुचने का प्रयास करता है।' यह समाजशास्त्र के प्रारभिक सरचनावादी—कमवादी गुट के दृष्टिकोण के प्रतिकूल नहीं है। जो कि समाज के सार्वदेशीय सरचनात्मक पूर्वापेक्षाओं की खोज म सलग्न था। इनका मुख्य अतर लेवी स्ट्रॉस के इस दावे म है कि उसका मकसद ढाचे के भीतरी स्तरों का समाज के सरचनात्मक तत्वों का मानवीय मनोवृत्ति की सरचना तथा आखिरकार मस्तिष्क की सरचना (फलत अपनी पद्धति के ह्रासवाद) के साथ सबद्ध करने की आकाक्षा से है। उसका दृष्टिकोण साभिप्राय गैर एतिहासिक है उसका कथन है— सत्यार्थ की प्राप्ति के लिए एतिहासिक चेतना की ओर उन्मुख होना बेकार है वह इतिहास और मानवशास्त्र (अथवा समाजशास्त्र) को इस खास अर्थ म एक दूसरे का पूरक मानता है कि एतिहासिक मानवशास्त्र या समाजशास्त्र न तो हो सकता है और न होना चाहिए। परतु, यद्यपि सरचनात्मक खोजबीन से (मुख्यत भाषाशास्त्र म तथा सीमित रूप म मानवशास्त्र में) कुछ दिलचस्प सामग्री सामने आती है समाजशास्त्र के प्रति इसका योगदान अब तक महत्वपूर्ण नहीं रहा है और लगता है कि इसने उन अधिकाश महत्वपूर्ण प्रश्नों को नजरअदाज किया है जो सामाजिक सरचना के नियामक है, एक समाज के दूसरे म ऐतिहासिक रूपातरण के निर्धारक है।

अल्थूसर की मार्क्सवाद की व्याख्या[10] के रूप म सरचनावाद का एक आधार मार्क्सवादी अध्ययन के क्षेत्र म कायम किया गया है। मैं यहा विचारों[11] के की इस विशेष दुरूह स्थिति पर नहीं अपितु 'सरचना और 'इतिहास' के सबध तक पहुचने के तरीके पर विचार करूगा जो मॉरिस गोडेलियर[12] के एक निबध म वर्णित है। मार्क्स को अग्रगामी सरचनावादी सिद्ध करने के लिए बेहद मामूली तर्क देते हुए गोडेलियर ने एतिहासिक विश्लेषण के ऊपर सरचनात्मक विश्लेषण की उत्कृष्टता को अपना प्रधान कथ्य बनाया और कहा कि सरचना के मूल तत्व का अध्ययन उस सरचना के बारे म पूर्व ज्ञान के निर्देशानुसार ही हो सकता है।' परतु यह कथन मार्क्सवादी विश्लेषण के सदर्भ म भी समान रूप से सच है, किसी खास सामाजिक गठन के ढाचे (उदाहरण के लिए पूजीवाद) का अध्ययन पहले से स्थापित उस एतिहासिक योजना के आधार पर ही हो सकता

है जो सिलसिलेवार अपनी विशेषताओं और अपनी स्थिति की प्राथमिक परिभाषा प्रदान करती है। मार्क्सवादी समाजशास्त्र में ऐतिहासिक और संरचनात्मक विश्लेषण तथा इन दोनों के बीच की गति का नैरंतर्य बना रहता है।

संरचनावादी दृष्टिकोण से मार्क्सवादी विचारों को संकीर्ण करने का एक और तरीका भी है। यहां ऐसा दावा किया जाता प्रतीत होता है कि यदि एक बार भी सामाजिक गठन के मूलभूत ढांचे को आवरण रहित कर दिया जाए तो रूपांतरण और मूल तत्व के लक्षणों को स्वयं इस सूक्ष्म ढांचे का एक पक्ष मान लिया जाएगा। तब ऐतिहासिक प्रक्रिया का रूप 'रक्तविहीन श्रेणियों का पैशाचिक नर्तन' सा हो जाएगा। एक ओर निरूपित ढांचे तथा दूसरी ओर सामाजिक दलों और व्यक्तियों के यथार्थ जीवन की सचेतन क्रियाओं के बीच की क्रिया प्रतिक्रिया भी व्याख्या की योजना से लुप्त हो जाती है। जिसे मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करते समय महत्वपूर्ण स्थान दिया है। यहां केवल यह और बताने की आवश्यकता है कि संरचनावादी विश्लेषण से बीसवीं शती में पूंजीवादी समाज के विकास की मुख्य प्रवृत्तियों का कोई विशेष अर्थगर्भित विवेचन नहीं हो पाया है।

बोटोमोर द्वारा उठाए गए तीसरे प्रश्न पर और संक्षेप में विचार हो सकता है। मैंने पहले ही कहा है, विशेष सामाजिक लक्षण के प्रायोगिक अध्ययन का विशद विकास करने में मार्क्सवादी समाजशास्त्र पिछड़ा रहा है। अपराध वाले अपराध, नौकरशाही, राजनीतिक दल, परिवार, तथा खोजबीन के अन्य बहुसंख्यक विशेष क्षेत्रों के अध्ययन में और सामाजिक वर्गों तथा स्तरीकरण के अध्ययन में भी, जिसका मार्क्सवादी सिद्धांत में महत्वपूर्ण स्थान है, कोई विशेष या गहरा योगदान मार्क्सवाद का नहीं है और वह ऐतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय जांच-पड़ताल भी उल्लेखनीय रूप से गायब है जिसकी आशा की जा सकती थी। अधिक सामान्य ढंग से यह कहा जा सकता है कि नए सिद्धांतों का विकास करने तथा अनुसंधान के नए मार्ग प्रशस्त करने में मार्क्सवादी समाजशास्त्र की कोई प्रेरणादायक भूमिका नहीं रही है जिन्हें नए सिद्धांतों को वैज्ञानिक विकास के दौरान इसकी प्रारंभिक मान्यताओं की

मौलिकता म से ही पदा होना चाहिए था। हाल के वर्षों म, समाजशास्त्रीय अनुसधान पर मार्क्सवादी विचारा क गभीर प्रभाव आर अनुसधान के आधार पर मार्क्सवादी सिद्धात का अधिक उपयुक्त स्पष्टीकरण हान के लक्षण दिखाई पडन लग ह। एक उदाहरण जिसम मैं विशेषकर अवगत हू मार्क्स द्वारा प्रेरित विकासशील दशा और विकास तथा अल्पविकास की सपूण प्रक्रिया क आलोचनात्मक अध्ययना का है हालांकि इस सदभ म बहुधा ही सशोधन हुए ह और कुछ पारपरिक मार्क्सवादी धारणाआ का जोडा घटाया भी गया है। पाल बरन क दि पालिटिकल इकोनामी आफ ग्रोथ[13] स प्रारभ होकर और ए० जी० फ्रैंक तथा अन्य लोगा[14] के इन अध्ययनो ने विकास के अध्ययन म विहित प्रश्ना का महत्वपूण ढग स पुनर्निरूपण किया और एक नए सदभ म परनिभरता और साम्राज्यवाद के जटिल सबधा और पूजीवाद की विश्वव्यापी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था क मार्क्सवादी विश्लेषण का पुनर्जीवित किया।

बाटम न जिन अतिम विभेदमूलक तथ्य की आर सकेत किया है वह ह क्रातिकारी परिवतन की प्रक्रिया स मार्क्सवादी समाजशास्त्र का सबध। यह मार्क्सवाद का उन समाजशास्त्रीय सिद्धाता स पूणतया अलग कर देता है जो सामाजिक परिवतन पर कम ध्यान दते हैं और सामाजिक जीवन के चक्राकार या अनत तथा अपरिवतनीय पक्षा पर ध्यान केंद्रित करत हैं अथवा परिवतन का बढती हुई सामाजिक विभेद की विकासात्मक प्रक्रिया या ज्ञान का (स्पेंसर और पार्संस के समान) पुजीभूत विकास मानते हैं। वस्तुत मार्क्सवादी सिद्धात म दो विचार शामिल है—एक है, ऐतिहासिक निरतरता म टूटन का, नए समाज की ओर भारी सचरण का और दूसरा ह प्रतिद्वद्वी दला म सघष के माध्यम से सामाजिक परिवतन का। हमारी अपनी क्राति की शती म मार्क्सवादी समाजशास्त्र के इन तत्वों को और अधिक यथाथ, सामाजिक विकास की सही समझ के और अनुकूल होना चाहिए—प्रतिद्वद्वी समाजशास्त्री सिद्धातो की धारणाआ की अपेक्षा। परतु फिर भी अनक अविश्लेषित समस्याए रह जाती है जिनम से कुछ पर मैंने पूववर्ती अध्याया म विचार किया है। क्रातिकारी और विकासात्मक परिवतना के बीच के सबध का और अधिक उजागर करने की आवश्यकता है

और सूक्ष्म रूप म क्रांतिकारी युगो की प्रकृति का विश्लेषण करना है। पूजीवादी समाज म गर क्रांतिकारी रूपो में श्रमिक वग के आदोलन के विकास की समस्या को और अधिक सावधानी से जाचना है जो कि स्वय मार्क्सवादी सिद्धात के विकासवादी सूत्रो की ओर ले जा सकती है (जैसा कि बनस्टीन ने किया)। इस विशेष सदभ मे पुन मार्क्सवादी विचारो की यह आलोचना की जा सकती है कि यह अनुभववादी अध्ययनो, तथा अनुभववादी खोजो पर आधारित चिंतन को बढावा देने म असमथ रहा है, जो क्रांतिकारी परिवतन के सिद्धात को एक अत्यत अस्पष्ट सिद्धात या नमूने की अभिव्यक्ति से आगे बढा सकता था।

□

इस पूववर्ती चर्चा मे मैंने अनुभववादी विज्ञान के रूप म गृहीत मार्क्सवादी समाजशास्त्र के मुख्य लक्षणो को प्रकाश म लाने और साथ ही इसके सामथ्य और सीमाओ की ओर सकेत करने का प्रयास किया है। जिस हद तक इसकी आलोचना हुई है उस पर विचार करते समय यह ध्यान मे रखना चाहिए कि अन्य समाजशास्त्रीय सिद्धातो की और भी अधिक कटु आलोचना हुई है। समाज के विकास की प्रमुख समस्याओ को परिभाषित या विश्लेषित करने, अथ कारणिक सबधो को सूत्रबद्ध करने और आधारभूत सैद्धातिक प्रश्नो पर विवादो को जन्म देने म मार्क्सवाद की तरह कोई अन्य सामान्य सिद्धात सक्षम नही रहा है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि मार्क्सवादी समाजशास्त्र—हालाकि अन्य सिद्धातो के समान ही—सामाजिक जीवन को समझने और उसकी व्याख्या करने के बडबोले दावे करता है और सामाजिक अत क्रियाओ की विपुल जटिलताओ तथा रचनात्मक मौलिकता की अनत मानवीय क्षमताओ का सामना करने वाले सभी समाजशास्त्रीय चिंतनो की सीमाओ को स्वीकार करने को प्रस्तुत नही रहा है। इस बडबोलेपन का, जो रूढिवादिता की ओर झुका हुआ है, मार्क्सवाद के एक दूसरे वैशिष्ट्य से सबध है। यह वैशिष्ट्य है एक भावी समाज के रूप मे समाजवादी आदश के प्रति उसकी प्रतिबद्धता।

यहा पुन यह केवल 'नैतिक विज्ञान' के रूप मे, जैसा कि दुर्खेम ने दावा किया है, समाजशास्त्र की एक पारिभाषिक विशेषता को और अधिक स्पष्ट

तरीके से प्रदर्शित करता है, स्वभावत ही दार्शनिक विचारों में अपने को प्रसारित करता है और सचमुच प्रायः इसी स्थल से प्रारंभ होता है। महत्वपूर्ण है समाजशास्त्र और दर्शन के बीच कुछ दूरी बनाए रखना तथा समाजशास्त्रीय क्षेत्र को इस भांति अवधारित करना कि जहा प्रतिद्वंद्वी सिद्धांत सामाजिक जीवन के तथ्यों की अपनी व्याख्या करने में होड ले सकें। वांछित और संभावित भविष्य के रूप में समाजवाद का विचार मार्क्सवादी समाजशास्त्र की विशिष्ट समस्याओं के चयन, उपयोगी अनुसंधान के संचालन और प्रतिरोधी व्याख्याओं की आलोचना में सहायता पहुचाता है, परंतु समाजवाद की अनिवार्यता का विचार, ने सामाजिक जीवन के तथ्यों में इसके अभिलेखन ने मार्क्सवादी विचारधारा को विकृति और दारिद्र्य की ओर प्रवृत्त किया है।

संदर्भ

1 लेरजक कोलाकोव्स्की मार्क्सिज्म एंड बियोंड (लंदन पाल माल प्रेस 1969) पृ० 204
2 अधःकारणिक से मेरा तात्पर्य कारणभूत संबंध की एक कोटि से है जिसमें कारण और प्रभाव के बीच का संबंध चेतना से बनता है देखिए जी० एच० वोन राइट के एक्सप्लेनेशन एंड अंडरस्टैंडिंग (लंदन रूटलेज ऐंड केगन पाल 1917) चतुर्थ अध्याय इसका प्रभाव उन विचारों की प्रकृति से संबद्ध समस्याओं पर पड़ता है जो समाजशास्त्रीय अनुसंधान में तैयार होते हैं
3 टी बी० बाटमोर (संपादन) 'कार्ल मार्क्स (एंजलवुड क्लिफ्स एन जे० प्रेंटिस-हाल 1973) 38-9
4 टाल्काट पार्सन्स सोसाइटीज इवोल्यूशनरी एंड कंपरेटिव पर्सपेक्टिव्स (एंजलवुड क्लिफ्स एन० जे० प्रेंटिस हाल 1966) पृ 113
5 आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों ने राष्ट्रीयता और राष्ट्रीयतावाद का विश्लेषण करने में अन्य मार्क्सवादी लेखकों की अपेक्षा अधिक योगदान दिया है क्योंकि उन्हें प्राचीन आस्ट्रियाई हंगरियाई साम्राज्य में अपने राजनीतिक जीवन के अंतर्गत इन प्रश्नों का सामना करना पड़ा था देखिए विशेषकर ओटो बावेर 'डाइ नेशनलिटटनफ्रेज एंड डाइ सोजियाल डमोक्रेटी (वियना मार्क्स-स्टडिएन 2 1907)

6 देखिए विशेषकर—जर्गेन हेबरमस, 'नालेज ऐंड ह्यूमन इंटरेस्ट' (लंदन हेनमन 1972) और अल्ब्रेख्ट वेल्मर के 'क्रिटिकल थियरी आफ सोसाइटी' अध्याय 2 म इस प्रश्न पर सामान्य विचार विमर्श जिन विचारों पर यह परवर्ती आलोचना आधारित है उनमें से कुछ मूलतः मक्स होर्खीमर द्वारा 1930 के दशक म सूत्रबद्ध किए गए थे 'क्रिटिकल थियरी' में संगृहीत उनके निबंधों को देखिए (न्यूयार्क एम० गिसर 1968)

7 जाज लिक्थम का निबंध मार्क्स ऐंड दि एशियाटिक मोड आफ प्रोडक्शन' देखिए जो उनकी पुस्तक दि कनसेप्ट आफ आइडियालाजी ऐंड अदर एसेज (न्यूयार्क रेंडम हाउस 1967) म पुन मुद्रित हुआ है। इसके अतिरिक्त एरिक हाब्सबाम द्वारा कार्ल मार्क्स के प्रिक पिटलिस्ट इकानामिक फार्मेशन (लन्दन लारेंस ऐंड विशार्ट 1954) की भूमिका म मार्क्स की ऐतिहासिक योजना के बारे म किया गया विचार विमर्श देखें।

8 मार्क्सवाद और सामाजिक मानवशास्त्र का सामान्य परिचय प्राप्त करने के लिए देखें 'प्रोसीडिंग्स आफ दि रिटिश अकादमी खंड 58 (लन्दन 1972) म रेमड फर्थ का दि स्केप्टिकल एंथ्रोपोलोजिस्ट सोशल एंथ्रोपोलोजी ऐंड मार्क्सिस्ट व्यूज आन सोसायटी मार्क्स का स्वय ही समाज के प्रारंभिक रूपों में प्रबल रुचि था और अपने जीवन के अंतिम कुछ वर्षों तक उन्होंने इसी क्षेत्र के अध्ययन म अपना अधिकांश समय लगाया। इस अवधि की उनकी टिप्पणियां को हाल म ही एल० क्रेडर द्वारा संपादित दि एथ्नोलोजिकल नोटबुक्स आफ कार्ल मार्क्स (एसेन वान गोर्कम 1972) पुस्तक म क्रेडर की व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है ये टिप्पणियां प्रारंभिक समाज के बारे म मार्क्सवादी धारणा के पुनरावलन के लिए लाभदायक सामग्री प्रदान करती हैं जैसा कि फर्थ ने कहा है वतमान समय म और अधिक आलोचक मार्क्सवादी मानवशास्त्र के प्रति विशेषकर उपनिवेशवाद और कृषक समाजों में गभीर रुचि पुन पैदा हुई है

9 डेविड राब द्वारा संपादित स्ट्रक्चरलिज्म एन इंट्रोडक्शन' (आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1973) और डब्ल्यू० जी० रंसिमन के सोशियोलाजी इन इट्स प्लेस' (कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1970) अध्याय—2 म 'संरचनावाद क्या है ? लेख मे प्रस्तुत किया गया है और इसकी आलोचना की गई है

10 देखिए विशेषकर लुइस अल्थूसेर और एटिएने बालिबर का 'रीडिंग कपिटल (लदन न्यू लफ्ट बुक्स 1970)

11 एल० कोलाकोव्स्की का निबंध अल्थूसेस मार्क्स, दि सोशलिस्ट रजिस्टर

(लदन दि मर्लिन प्रस 1971) पृ० 111 28 म इसके छन्म को अच्छी तरह व्यक्त किया गया है

12 मारिस गोडलियर का निबंध सिस्टम, स्ट्रक्चर ऐंड कंट्राडिक्शन इन क पिटल दि सोशलिस्ट रजिस्टर (लदन दि मर्लिन प्रस 1967) प० 91 119

13 (न्यूयार्क मथली रिव्यू प्रेस 1962)

14 ए० जी० फ्रैंक कपिटलिज्म ऐंड अडरडेवेलपमेंट इन लैटिन अमेरिका' द्वितीय संस्करण (न्यूयार्क मथली रिव्यू प्रेस 1959) इसके अतिरिक्त हेनरी बनस्टीन द्वारा संपादित अंडर डेवेलपमेंट ऐंड डेवेलपमेंट' (हरमड्सवथ पेंगुइन, 1973) मे भी चुने हुए अशो को देखें

अनुक्रमणी

टाम बाटमोर

सप्रति ससेक्स यूनीवर्सिटी मे समाज-शास्त्र के प्रोफेसर

लदन स्कूल आफ इकनामिक्स म प्राध्यापक रहे 1953-59 इटरनेशनल सोशलाजिकल

एसोसिएशन के मत्री 1953 62 करेंट सोशलाजी के सपादक

1959-60 भारत मे प्राध्यापन

1960 से यूरोपियन जनरल आफ सोशलाजी के अगरेजी सपादक

समाजशास्त्रीय चितन के सिद्धात और इतिहास, सामाजिक सतुष्टि तथा गति शीलता, तथा विकासशील देशो, विशेष कर भारत की सामाजिक तथा राजनीति समस्याए विशेष रुचि के विषय

प्रकाशित पुस्तकें

क्लास इन माडन सोसायटी (1955, नया सस्करण 1966)

काल माक्स सेलेक्टेड राइटिंग्स इन सोशलाजी ऐंड सोशल फिलासफी (एम रूबेल के साथ, 1956)

सोशलाजी ए गाइड टु प्राब्लम्स ऐंड लिटरेचर (1962) था

काल माक्स अर्ली राइटिंग्स (1963)